₹ 20

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

मार्च 2013

- बीमारियों की जननी है शराब
  –डॉ॰ मुहम्मद अहमद
- हज़रत मुहम्मद (स॰) की शिक्षाए
  –विद्या प्रकाश
- एकेश्वरवाद और इस्लाम
  –पं॰ दुर्गाशंकर सत्यार्थी
- बलात्कार:एक ज्वलंत समस्या
  –मुहम्मद खुर्शीद आलम
- ज़रूरी है शिक्षा का नैतिक आधार
  –भारत डोगरा
- टूटे वादों का गणतंत्र
  –राजीव धवन

SZ AHMAD HOSPITAL

Run, By Rabia Anjum Health & Education Welfare Society, Regd. No-1131 (2007/08)

At-Karge (Charima) Nair, Nagjua Railway Station, P.O-Sero, P.S-Narkopi, Ranchi (JH) 835325



एसजेड अहमद हॉस्पिटल करगे जो रांची शहर से 60 किमी॰ एवं लोहरदगा से 25 किमी॰ की दूरी पर है जहां 20 किमी॰ की परिधि में कोई अस्पताल नहीं है ।

उद्देश्य

ग्रामीण एवं भ्रमित जनता, जो सदियों से बीमारी को भू-प्रेत जादू-टोना मानकर इलाज के अभाव में काल के गाल में समा जाते हैं या इलाज के लिए तैयार भी हुए तो अप्रशिक्षित चिकित्साभ्यार्थि (Quack) के चक्कर में पड़ कर अपनी मोटी रक़म बर्बाद करने के बाद भी उचित चिकित्सा लाभ नहीं प्राप्त कर पाते हैं ऐसी परिस्थिति में लोगों को भ्रम से निकाल कर साफ़-सुथरा **एवं विश्वसनीय चिकित्सा उपलब्ध कराने की कोशिश ।**

वर्तमान में उपलब्ध सुविधाएं

- **चिकित्सक : शिक्षित एवं अनुभवी चिकित्सकों** की एक टीम ।
- **मेडिकल स्टोर :** यूनानी, आयुर्वेदिक, एलोपैथिक दवाओं का पर्याप्त भंडार ।
- **पैथोलोजी :** ख़ून, पेशाब, विर्य एवं आवश्यक चिकित्सकीय जांच की सुविधा उपलब्ध।
- **बैतुलमाल :** ग़रीब-लाचार व्यक्तियों की मदद एवं मुफ़्त इलाज ।
- **आउटडोर/इंडोर :** रोगी को एडमिट होकर भी चिकित्सकीय लाभ प्राप्त करने की सुविधा उपलब्ध ।
- **O.T. :** Operation theatre









आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 22 अंक 9 मार्च 2013

ऐ ईमान लाने वालो ! यह शराब, जुआ और ये थान एवं पांसे शैतान के गंदे कामों में से है । अतः इनसे बचो ताकि तुम सफल हो सको । शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुए के द्वारा तुम्हारे बीच वैमनस्य व द्वेष पैदा कर दे और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज़ से रोक दे । –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

09818799223, 011-26949430

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 20/- विशेषांक रु० 30/-

वार्षिक रु० 220/-, दो वर्ष 425/-

पांच वर्ष 1000/-, आजीवन रु० 5000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–100 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–35 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

दीपक बनकर रहना सीख

स्वार्थ-भावना छोड़ मनुज तू,
परहित भी कुछ करना सीख ।
कांटे बनकर दुख मत दे तू,
बनकर फूल महकना सीख ।।

छोटा-बड़ा नहीं है कोई,
सभी उसी मालिक के बन्दे ।
खींचातानी उचित न होती,
क़दम मिलाकर चलना सीख ।।

ईर्ष्या-द्वेष हानिकारक हैं,
ये तन-मन अस्वस्थ बनाते,
वैर-विरोध कभी मत करना,
सबसे मिलकर रहना सीख ।।

छाया है अज्ञान-तिमिर जो,
कोशिश करके दूर उसे कर ।
ज्ञान-प्रकाश बिखेर धरा पर,
दीपक बनकर रहना सीख ।।

व्यापक सोच अगर होगी तो,
जन-जन से सम्मान मिलेगा ।
इस समाज में गिरगिट जैसा,
तू मत रंग बदलना सीख ।।

कभी जोश में होश न खोना,
बचना सदा बुरे कर्मों से ।
फल से लदे वृक्ष के जैसा,
जीवन में तू झुकना सीख ।।

● **डॉ० त्रिलोकी सिंह**

ग्राम-हिन्दूपुर, पो०-करछना, इलाहाबाद (उ०प्र०)



कहां क्या है ?

दीपक बनकर रहना सीख	–डॉ॰ त्रिलोकी सिंह	3
क़ुरआन ज्योति		5
सोना और लेटना (हदीस मंजरी)		6
कहां गया नव-निर्माण का नव-विहान ? (संपादकीय)		7
महिलाओं की विविध भूमिकाएं (आपके पत्र)		9
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की शिक्षाएं आज भी प्रासंगिक (जीवन आदर्श)	–विद्या प्रकाश	15
वैचारिक स्वतंत्रता एवं इस्लाम (दृष्टिकोण)	–मुहम्मद कुत्ब	16
हिन्दू धर्म में एकेश्वरवाद और इस्लाम (चिंतन)	–दुर्गाशंकर सत्यार्थी	21
बीमारियों की जननी है शराब (विशेष आयोजन)	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	26
मानवता के सच्चे शुभचिंतक हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰)–(फेसबुक उवाच)	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	35
नर्स (कहानी)	–सैयद अली	37
टूटे वादों का गणतंत्र (देश-दशा)	–राजीव धवन	39
क्या हुआ दामिनी ? (कविता)	–सलमान खुर्शीद	40
ग्रामीण खुश, शहरी 'बोर'	–सी॰ के॰ रहमानी	43
ग्राहक अपने अधिकार को जाने (अर्थ-उपभोक्ता)	–निधि मित्तल	45
ज़रूरी है शिक्षा का नैतिक-आधार (दृष्टिकोण)	–भारत डोगरा	47
महिलाओं के साथ बलात्कार : एक ज्वलंत समस्या (ज्वलंत सामयिक)	–मुहम्मद खुर्शीद आलम	49
छींक की सुपरस्पीड (बालवीथी)	–विद्या प्रकाश	50



(18) अल्लाह की मस्जिदों के आबादकार (मुजाविर व सेवक) तो वही लोग हो सकते हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन को मानें और नमाज़ स्थापित करें, ज़कात दें और अल्लाह के सिवा किसी से न डरें। इन्हीं से यह आशा है कि वे सीधी राह चलेंगे। (19) क्या तुम लोगों ने हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदे हराम की मुजावरी करने को उस व्यक्ति के काम के बराबर ठहरा लिया है जो ईमान लाया अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर और जिसने जान खपायी अल्लाह की राह में ?[21] (20) अल्लाह के नज़दीक तो ये दोनों बराबर नहीं हैं, और अल्लाह ज़ालिमों को रास्ता नहीं दिखाता। अल्लाह के यहां तो उन्हीं लोगों का दर्जा बड़ा है जो ईमान लाए और जिन्होंने उसकी राह में घर-बार छोड़े और जान व माल से जिहाद किया वही सफल हैं। (21) उनका रब उन्हें अपनी रहमत और प्रसन्नता और ऐसी जन्नतों की शुभ-सूचना देता है जहां उनके लिए स्थायी सुख-सुविधाएं हैं। (22) इनमें वे सदैव रहेंगे निश्चय ही अल्लाह के पास सेवाओं का बदला देने को बहुत कुछ है।

(23) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो ! अपने बापों और भाइयों को भी अपना साथी न बनाओ अगर वे ईमान पर कुफ़्र को प्राथमिकता दें। तुममें से जो उनको साथी बनाएंगे, वही ज़ालिम होंगे। (24) ऐ नबी ! कह दो कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियां और तुम्हारे रिश्ते-नातेदार और तुम्हारे वे माल जो तुमने कमाए हैं, और तुम्हारे वे कारोबार जिनके ठंडे पड़ जाने का तुमको डर है और तुम्हारे वे घर जो तुमको पसन्द हैं तुमको अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह में जिहाद से अधिक प्रिय हैं तो इन्तिज़ार करो, यहां तक कि अल्लाह अपना निर्णय तुम्हारे सामने ले आए[22], और अल्लाह अवज्ञाकारियों को रास्ते पर नहीं लगाया करता। –क़ुरआन, 9 : 18-24

21. अर्थात किसी ज़ियारतगाह की गद्दीनशीनी, मुजावरी और कुछ दिखावटी धार्मिक कार्यों का करना, जिसको दुनिया के ओछे दृष्टि रखने वाले लोग सामान्यतः सौभाग्य और पवित्रता का आधार ठहराते हैं, अल्लाह के नज़दीक उसका कोई मूल्य नहीं है। वास्तविक मूल्य तो ईमान का और अल्लाह के रास्ते में त्याग का है। इन गुणों का जो व्यक्ति भी धारक हो वह मूल्यवान व्यक्ति है, भले ही उसका ताल्लुक़ किसी ऊंचे परिवार से न हो और किसी प्रकार की विशिष्टताएं उसके साथ लगी हुई न हों। लेकिन जो लोग इन गुणों से वंचित हैं, वे केवल इसलिए कि बड़ों की संतान हैं, गद्दीनशीनी उनके परिवार में मुद्दतों से चली आ रही है और विशेष अवसरों पर कुछ धार्मिक रस्मों का प्रदर्शन वे बड़ी शान के साथ कर दिया करते हैं, न किसी पद के अधिकारी हो सकते हैं और न यह वैध हो सकता है कि ऐसे मूल्यहीन, 'पैतृक' अधिकारों को मानकर पवित्र स्थान और धार्मिक संस्थाएं अयोग्य लोगों के हाथों में रहने दी जाएं। इस कथन से यह निर्णय कर दिया गया कि अल्लाह के घर का प्रबंध-अधिकारी अब मुशरिक नहीं रह सकता, कुरैश के मुशरिक सिर्फ़ इस कारण इसके अधिकारी नहीं हो सकते कि वे हाजियों की सेवा करते रहे हैं।

22. अर्थात तुम्हें हटाकर सच्ची धार्मिकता की नेमत और उसके ध्वजावाहन का सौभाग्य और मार्गदर्शन करने का पद किसी और गिरोह को प्रदान कर दे।



सोना और लेटना

● हज़रत बराअ बिन आज़िब (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) जब बिस्तर पर जाते तो अपनी दाहिनी करवट लेटते, फिर कहते : "ऐ अल्लाह, मैंने अपने-आपको तुझे सौंप दिया, और अपना रुख़ तेरी ओर मोड़ दिया, और अपना काम तेरे हवाले किया और तेरी चाहत में और तुझसे डरते हुए मैंने अपनी पीठ का आश्रय तुझे बनाया । तुझसे हटकर जाने का न कोई ठिकाना है और न तुझसे बचने की कोई जगह है । अगर है तो तेरे ही पास । मैं उस किताब पर ईमान ले आया जो तूने उतारी है और तेरे उस नबी पर भी ईमान ले आया जिसे तूने भेजा है ।" –बुख़ारी

● हज़रत हुज़ैफ़ह (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि नबी (सल्ल॰) जब रात को अपने बिस्तर पर जाते, तो अपना हाथ अपने गाल के नीचे रख लेते, फिर कहते : "अल्लाहुम्मा बिस्मका अमूतु व अह्या ।" (ऐ अल्लाह, मैं तेरे नाम के साथ मरता और जीता हूं ।) और जब जागते, तो कहते : "अलहम्दो लिल्लाहिल्लज़ी अह्याना बाद मा अमातना व इलैहिननुशूर ।" (हर एक प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने हमें मौत देने के बाद ज़िन्दा किया उसी की ओर लौटकर जाना है ।) –बुख़ारी

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जो व्यक्ति किसी जगह बैठा और वहां अल्लाह तआला को याद न किया गया, तो अल्लाह तआला की ओर से उस पर प्रकोप और हानि की मार पड़ती है । और जो व्यक्ति बिस्तर पर लेटा और उस समय अल्लाह तआला को याद नहीं किया, तो उस पर अल्लाह की ओर से प्रकोप और हानि की मार पड़ती है ।"

–अबू दाऊद । अबू दाऊद ने इसे 'हसन' सनदों के साथ रिवायत किया है ।

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि॰) से रिवायत है कि उन्होंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को मस्जिद में चित लेटे हुए देखा इस प्रकार कि आप एक पांव दूसरे पांव पर रखे हुए थे । –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि नबी (सल्ल॰) जब फ़र्ज़ की नमाज़ पढ़कर निवृत्त होते, तो आप अपनी मजलिस में पालथी मार कर बैठते यहां तक सूरज अच्छी तरह प्रकाशमान होकर निकल आता ।

–अबू दाऊद । अबू दाऊद आदि ने इसे 'सहीह' सनदों के साथ रिवायत किया है ।

● हज़रत इब्न उमर (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को काबा के प्रांगण में देखा कि आप अपने दोनों घुटनों को हाथों के घेरे में इस प्रकार लिए बैठे हैं । फिर उन्होंने (हज़रत इब्न उमर रज़ि॰ ने) अपने हाथों से अपने घुटनों को घेरे में लेकर दिखाया । और वह 'कुरफ़ुसह' (उकड़ूं बैठकर हाथों टांगों को बांधना) है । –बुख़ारी

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय
हिन्दी वेबसाइटें
www.quranhindi.com
www.islamdharma.org
www.islamicwebdunia.com
www.islamic-videos.com

कहां गया नव-निर्माण का नवविहान ?

आज कहां गये वे सपने ? और कहां गये वे अरमान, जो देश की आज़ादी की पूर्व संध्या पर हमारे मन-मस्तिष्क में उमड़-घुमड़ कर आते थे ? कहां गयी नव समाज के निर्माण की संकल्पना ? कहां गया उमंगों-उत्साहों का नवविहान ? ज़रा ठहर कर सोचिए, तो हम अपने देश और समाज को क्या उतना बना-संवार सके, जितने सपने हमने संजोये थे या हमने अपने आपसे छल किया और सपनों को साकार करने के बजाय खंडित करके धूल-धूसरित कर डाला मानो हमने सूत काता और स्वराज के लिए संघर्ष किया और फिर आहिस्ता-आहिस्ता सूतों को खंडित कर डाला । जी हां, हमने कुछ ऐसा ही किया । बानगियां देखिए–

हमने सोचा था कि ऐसा सिस्टम बने, जो वास्तव में जनसेवी हो, कदाचार से पाक हो और अंततः उसमें जवाबदेही का एहसास पाया जाता हो, लेकिन मिला क्या ? पेचीदा-दर-पेचीदा और उद्दंड सिस्टम, जो भ्रष्टाचार के विराट पुरुष का पग-पग पर निर्लज्जता के साथ प्रदर्शन करता है ।

हमने समाजवाद का सपना ही नहीं देखा था, बल्कि इसे अपनी संवैधानिक संकल्पना में स्थान दिया था । आज इस संकल्प की कितनी दुर्गति हुई !? स्वदेश के उद्योग-धंधों को मार कर विश्व मंडी में भारत समाजवाद के चीथड़े लपेटे जिस दशा में भटक रहा है, वह किसी सोच-समझ वाले विवेकी जन की दृष्टि से ओझल नहीं है । आज का भारतीय समाजवाद 'दूर के ढोल सुहाने' की उक्ति को चरितार्थ करता है, लेकिन यह ढोल ऐसा है जो न कभी बजा है, न बज सकता है, क्योंकि इसकी आत्मा में पूंजीवाद प्रविष्ट कर चुका है ।

भारतीय समाजवाद का सीधा-सपाट अर्थ यही था और आज भी है कि समाज में व्याप्त अस्वाभाविक असमानता को दूर करना, निर्धन को उसकी दरिद्रता से उबारना और दमन-शोषण को दूर करना । यह स्वप्न और संकल्प इस प्रकार फलीभूत हुआ कि निर्धन और निर्धन हुआ एवं धनिक और धनी । सामाजिक असहज असमानता तो दूर नहीं हुई, बल्कि अन्यान्य विकारों के घनीभूत ही हुई । पिछले 65 वर्षों में हमारे देश में समाजवाद तो नहीं आ सका, लेकिन भोग-विलास और सुख की कामना बढ़ी है । इसी प्रकार पूंजी बढ़ी, उच्च शिक्षा बढ़ी और कला-कौशल बढ़े, लेकिन नैतिक भ्रष्टता बढ़ी ।

हम चाहते थे कि भारतीय समाज में सदाचरण और ईमानदारी की सदाबहार पौध लहलहाये । अच्छी आशा, विश्वास और सकारात्मक ऊर्जा का वातावरण बने । हुआ क्या स्वतंत्रता प्राप्ति के 65 वर्षों में हमारा कितना चारित्रिक पतन हो चुका है, किसी से छिपा नहीं है । स्थिति गंभीर है । नैतिकता के लोप ने समाज को 'बिजूके' की शक्ल प्रदान कर दी है । मनुष्यत्व भाव मर चुका है, बस 'कंकाल' बचा है, जो 'पैवन्दकारी' के बल पर कभी-कभार खड़ा होने की कोशिश करता है, तो कभी कुछ मूल्यवादी उसे सहारा देकर खड़ा करने की कोशिश करते हैं । झूठ, फ़रेब, ग़लतकारी, मक्कारी, बेईमानी, सन्देह, ईर्ष्या, अनुचित स्पर्धा, निराशा, हताशा और क्षणवादी रुझान आम हो चुका है । जिन लोगों ने अपने चरित्र को निखारा और चरित्रवान बने, उनकी संख्या बहुत कम हो गयी है । किसी समाज या देश का नैतिक पतन एक गंभीर चुनौती लेकर आता है । हमारे प्रिय देश पर यह संकट आसन्न है ।

भ्रष्टाचार का संजाल सर्वत्र फैला हुआ है । कोई ऐसा विभाग नहीं, जो इससे विमुक्त हो । छोटे, मंझोले कर्मचारी तक भ्रष्टाचार की सांस ले रहे हैं । उनके यहां अवैध कमाई का अजस्र स्रोत बह रहा है । इसका

एक उदाहरण यहां प्रस्तुत करना काफ़ी होगा–पिछले वर्ष मध्य प्रदेश के इन्दौर में लोकायुक्त और इकनॉमिक अफ़ेंस विंग (E.D.W.) द्वारा ट्रांसपोर्ट आफ़िस में क्लर्क के पद पर काम करने वाले रमेन्द्र धुलधोई के यहां मारे गये छापे में 40 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति बरामद की गयी है । उसके पास से एक किलोग्राम सोना, साढ़े चार किलोग्राम चांदी भी बरामद किया गया है । इस क्लर्क का वेतन लगभग 16 हज़ार रुपये प्रति माह है । इससे पहले उज्जैन में एक चपरासी के यहां छापे में लगभग छह करोड़ की संपत्ति बरामद की गयी थी ।

(नभाटा, 19 दिसम्बर 2011, नयी दिल्ली)

यथार्थपरक सोच हमें यह बताती है कि भ्रष्टाचार हमारे तंत्र को निगल चुका है । राहुल गांधी ने 'रहस्योद्घाटन' किया है कि अब केन्द्र से चला एक रुपया ग़रीब जन तक पहुंचते-पहुंचते दस पैसा ही रह जाता है । बाक़ी सारे पैसे भ्रष्टाचारियों के हत्थे विभिन्न चरणों में चढ़ जाते हैं । इसीलिए कहा जाता है कि वर्तमान काल का भारत व्यवहार में पुराने सत्ता-केन्द्रों या संवैधानिक केन्द्रों का नहीं नये सत्ता केन्द्रों का है, व्यक्तिवाद का है जो प्राय: भ्रष्टाचार की खाल ओढ़ लेता है और अवैध-अनैतिक धन-उगाही करने में लग जाता है... फिर भी उसे शायद यह पता नहीं होता कि वह पूंजीवाद के मकड़जाल में बुरी तरह फंसा है । उसका नौकर है...आप देख ही रहे हैं कि पूरी दुनिया के लोग बहुराष्ट्रीय कंपनियों के नौकर बनते जा रहे हैं । इस पर रोक लगाने का कोई उपाय भी नहीं सामने आ पा रहा है । पूरी दुनिया पर पूंजीवाद का आक्रमण है, जिसे वह विजित भी करता जा रहा है, मगर सबसे बड़ी संत्रास की स्थिति नैतिकता और मर्यादा का समाज से विलोपन है । इसके कारण मनुष्य की मौलिक पूंजी भी उससे छिन गयी है या छिनती जा रही है । इस विकट स्थिति में आवश्यकता है कि भारत का स्वस्थ आधारों पर नव-निर्माण हो । यह तभी संभव हो सकता है, जब नैतिकता और सदाचरण की गुमशुदा अमूल्य पूंजी को फिर से प्राप्त किया जाए । इसके लिए सभी संभव प्रयास करने होंगे ।

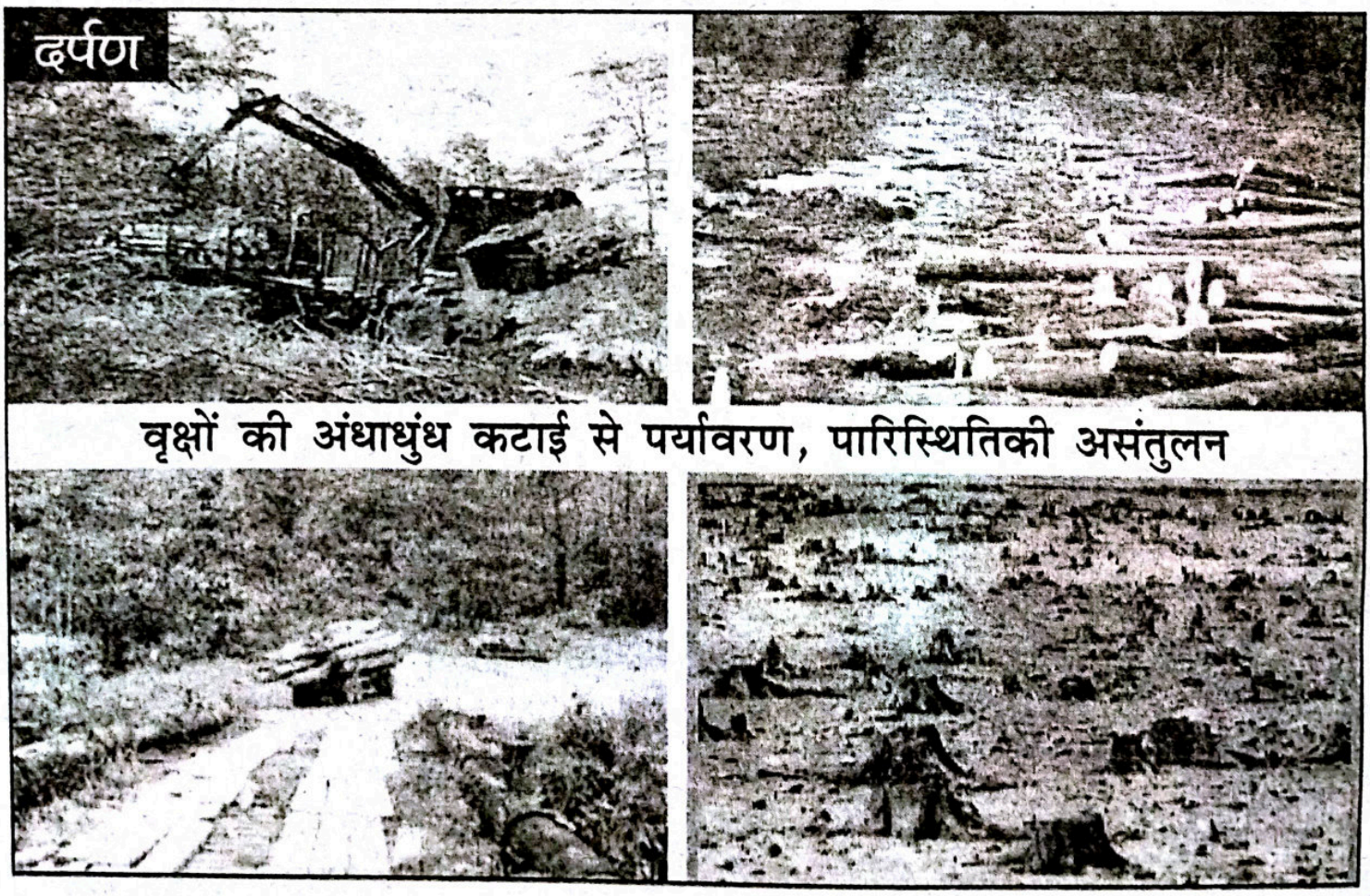

महिलाओं की विविध भूमिकाएं

अदम्य साहस, ममता का असीम भंडार । कभी परिवार की ढाल तो कभी समाज की सफल नायिका का रूप लेती है नारी । बरसों से नदी के समान शीतल, सागर से भी ज़्यादा गहरी, और कभी तो शक्ति का स्वरूप होती है नारी । हमारे समाज में बरसों से पुरुष और प्रकृति के मेल को ही समाज का आधार बताते हैं । अर्धांगनी माता, बहन, बेटी और न जाने अनगिनत शब्दों से रचित है नारी की भूमिका । एक पुरानी कहावत है–

"जहां होता है नारी का सम्मान, वहां बसते हैं भगवान ।" लकीर से हटकर सोचना, अपनी पहचान बनाने का संघर्ष तो न जाने नारी कितने ही वर्षों से करती आ रही है । आज नारी शक्ति इस बात का प्रतीक है कि वह चमकते हुए बादलों में भी अपनी पहचान खुद बना सकती है । उसे किसी सहारे की या अबला बनकर अपने लिए किसी से आंखों में सहानुभूति की कोई ज़रूरत नहीं है । उसे अपने लिए सम्मान से भरा पद चाहिए । वह आज अपनी असीम शक्ति से समाज को एक नयी भूमिका, एक नया मोड़ दे सकती है । समाज का शायद ही ऐसा कोई पद है जिसे उसने अपनी क़ाबिलियत से नवाज़ा हो । वह कल्पना बन कभी अंतरिक्ष में चक्कर लगाती है, तो कभी इंदिरा प्रतिभा बन देश की बागडोर संभालती है । कभी लक्ष्मीबाई बनकर अंग्रेज़ों को देश से भगाती है, तो कभी महादेवी बनकर अपनी रचनाओं से समाज को उसी का आईना भी दिखाती है ।

आज सवाल सिर्फ़ और सिर्फ़ यह है कि मैं बीती बातों को याद कर एक गुज़रते कल का नहीं, बल्कि शालीनता की चादर ओढ़े आने वाले कल का निर्माण करना चाहती हूं । मेरे अन्दर न जाने कितने ही अरमान एवं सपने ग़ोते लगाते हैं । चाहे हाथों में मेहदी हो या माथे पर सिंदूर आज बदलते समाज की बदलते वक़्त का मैं स्वागत करना चाहती हूं । अपनी आशाओं और अभिलाषाओं को सिर्फ़ एक दर्पण का रूप देना चाहती हूं । अपने सम्मान के लिए जो मैंने मशाल जलायी है उसे मैं पूरा कराना चाहती हूं ।

दीप्ति सक्सेना
ब्लाक-1, फ्लैट न॰ 103, महागणेशनगरी (मुंडवा)
पुणे (महाराष्ट्र)

'कान्ति' का हर अंक पठनीय

आपकी मासिक पत्रिका 'कान्ति' समाज में जो कान्ति बिखेर रही है, उससे साहित्य-अध्येता तो लाभांवित हो ही रहे हें, समाज की युवा पीढ़ी को भी मानवीय मूल्यों को जीवन में धारण करने की सद्प्रेरणा प्राप्त हो रही है । पत्रिका का हर अंक विविध पाठ्य सामग्री से संपूरित होने के काण यह पत्रिका अपनी स्तरीयता को उत्तरोत्तर विकसित ही कर रही है । इसका समग्र श्रेय आपके विद्वतापूर्ण संपादन एवं प्रबुद्ध रचना सर्जकों को है । इस पत्रिका का समयबद्ध निर्बाध प्रकाशन इसका प्रमुख वैशिष्ट्य है । विशुद्ध मुद्रण भी 'कान्ति' की एक ख़ास विशेषता है । इन सबके लिए आपका सद्प्रयास सर्वथा अनुकरणीय है ।

डॉ॰ त्रिलोकी सिंह
इलाहाबाद (उ॰प्र॰)

नैतिक मूल्य अपनाएं

आज भौतिकवादी संसार में लोग नैतिक मूल्यों को भूलते जा रहे हैं । रोज़ नये-नये आविष्कार हो रहे हैं, और यह सब आविष्कार नैतिकता से दूर ले जा रहे हैं । जहां चैन-सुकून खो रहा है, व्यक्ति भौतिकवाद में मग्न हो रहा है ।

देश नैतिकता और ईमानदारी खोकर बदलाव में खोता जा रहा है । 21वीं सदी जिसे कहा जा रहा है कि वह अपने बनाये रीति-रिवाजों से दूर होने का ज़रिया है । नैतिकता, ईमानदारी, मूल्य, मूल्यांकन सिर्फ़ रस्म व रिवाज निभाने भर तक रह गये हैं । नैतिक गुण का जितना ह्रास होगा उतना ही हमारे देश और समाज में बिगाड़ घर कर लेगा ।

हद तो तब है कि नैतिकता को बढ़ाने के लिए देश में कितने गुरुओं का जमघट लगा हुआ है । अनैतिकता विभिन्नता बढ़ानी । नैतिक कमी से किसी भी मुद्दे को एक सही नज़रिये से नहीं देखा जा सकता है । ईमानदारी नैतिकता की उपज कर आध्यात्मिकता की राह पर चलना आसान रहता है । यही शिक्षा हमें हर तरफ़ से मिलती है ।

हम हमेशा से सच्चाई, ईमानदारी एवं सच्चे सुख की खोज में रहते हैं और यह सब भौतिकवादी दुनिया में मिलना

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

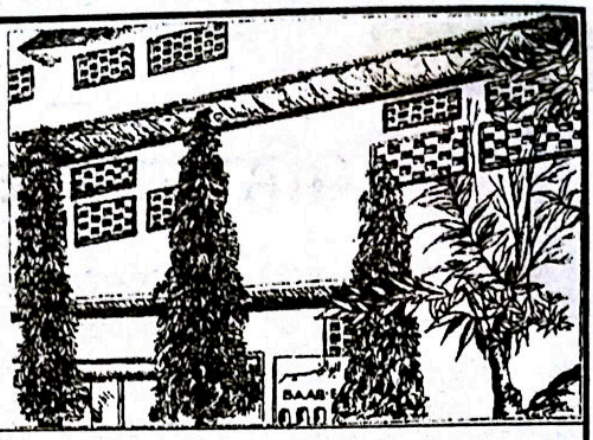

संक्षिप्त परिचय

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा

संस्था ने अपनी उम्र के 25 वर्ष दिसम्बर 2011 में पूरे कर लिए मगर अब तक माली दुश्वारियों के सबब अपना सिल्वर (Silver Jubilee) भी नहीं मना सका ।

● 25 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा I,A,BA एवं Library Science ● 6 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई : 6 बैच 70 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 3 बैच 40 छात्राएं ● 1993 ई॰ से 2011 ई॰ तक 66 अनाथ बच्चियों और 41 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 22 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 12,000/- रुपये है–आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 1,00,000/- रुपये से अधिक ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । ● इदारा में ख़ुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

Address for correspondence : रक़म भेजने और संपर्क करने का पता

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS' ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA, ☎ 0631-2734437 ● Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

LOCAL DONORS मक़ामी चन्दा देने वाले

BANK CODE-UBI No. 530042 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKING A/C NO.: 300402010007752

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

संस्थापक महासचिव : इक़बाल अहमद ख़ां

मुश्किल है इसके लिए हमें कुछ न कुछ क़ुरबानी देनी होगी ।

सच्चा सुख आध्यात्मिकता को अपनाने से मिलता है । जहां सिर्फ़ लेने की प्रवृत्ति नहीं बल्कि देने की भी प्रवृत्ति होनी चाहिए । आध्यात्मिकता का चिराग़ जलाये बिना हमें सच्ची खुशी मिलना दूभर होता है ।

हम कामकाज करके अलग हो जाते हैं सोचते हैं चलो सब काम हो गया । हमें इसकी जवाबदेही किसी के सामने देने की ज़रूरत नहीं है । इस जवाबदेही की भावना न रहने से अनैतिकता, भोगवादिता, विलासिता में संलिप्त रहते हैं । जब तक हम पर किसी के आगे जवाबदेही की भावना नहीं होगी हमारे कार्यों में विलासिता एवं अनैतिकता बढ़ती जाएगी । सब इसी भावना को लेकर जिएंगे और मरेंगे कि जब कोई है ही नहीं हमारे क्रियाकलापों को देखने सुनने वाला तो फिर हम क्यों जवाबदेही की ज़िन्दगी जीएं ।

आध्यात्मिकता, ईमानदारी, मूल्यों और मान्यताओं को अपनाने में ही सच्ची खुशी निहित है । आध्यात्मिकता, मूल्यों, मान्यताओं की बातें सिर्फ़ औपचारिकता और परंपरा के निर्वहन तक सिमट कर रह गयी हैं ।

क्षणिक भौतिक सुख की ख़ातिर शाश्वत और सच्ची खुशी जो आध्यात्मिकता में निहित है उसे त्याग्य जाना लगता है । नैतिक और आध्यात्मिक बातों में गिरावट और भौतिकता एवं विलासिता का तेज़ी से उफ़ान मानवीय संबंधों में गिरावट और कड़ुवाहट का कारण बनकर उभर रहा है ।

आज हम पश्चिमी सभ्यता की चकाचौंध में अंधे होकर भौतिकता में सुख तलाश कर रहे हैं । यदि पश्चिमी सभ्यता सचमुच सर्वथा उचित और अनुकरणीय होती तो पश्चिम वाले सच्ची खुशी और शांति पाने के लिए भारत, जो आध्यात्मिकता और मान्यताओं के लिए सदियों से जाना जाता रहा है, के पीछे अपना सब कुछ छोड़ शांति के लिए नहीं भागते।

विकास की होड़ ने यह भुला दिया है कि इस संसार के बाद एक सच्ची आध्यात्मिक दुनिया है जहां हमेशा-हमेशा रहना है । इस क्षण भंगुर दुनिया के आगे उस दुनिया में अनंत जीवन और आराम है । उस शाश्वत जीवन को भूलकर हम इस अंधी दुनिया को पाने के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगा देते हैं । दुनिया एक धोखा है । इसमें फंसकर हम यहां और वहां की शाश्वत और वर्तमान ज़िन्दगी को नज़रअंदाज़ कर रहे हैं । जबकि वर्तमान जीवन के बाद एक और जीवन जीना है जो इस नश्वर जीवन और जग से कहीं बेहतर है ।

मुहम्मद अफ़ज़ल

बड़ा बाज़ार, हज़ारीबाग़, झारखंड

सद्समाज के निर्माण में 'कान्ति' की महत्वपूर्ण भूमिका

रोचक, बोधक, ज्ञानवर्द्धक, अन्वेषणापूर्ण और उपयोगी 'कान्ति' पत्रिका का नवीनांक जनवरी 2013 मिला । हार्दिक धन्यवाद । मुस्लिम समाज के प्रति देश में फैली विभिन्न भ्रांतियों को तार्किक ढंग से दूर करने में 'कान्ति' बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका का बहुत सुचारू रूप से निर्वाह कर रही है । इससे मानव समाज में निश्चय ही पारंपरिक सौहार्द और आवश्यक भाईचारा में अपेक्षित वृद्धि होगी । 'कान्ति' के माध्यम से संचालित आपका यह अभियान वास्तव में कल्याणकारी है, जिसके लिए आप जागरूक और जिज्ञासु

"इससे बड़ी ख़यानत और क्या होगी कि तुम अपने भाई से कोई बात कहो और वह तुम्हारी बात को सच जाने, जबकि तुमने उससे झूठ बोला हो ।"

(हदीस)

J.I.H

Naugarh

शुभचिंतकों की बधाई के पात्र हैं ।

'कान्ति' के सन्दर्भित अंक में पृष्ठ-38 पर प्रकाशित इस सूचनात्मक समाचार से बड़ी प्रसन्नता हुई कि बहुत उचित रूप से आपको ''श्रेष्ठ संपादक'' की सम्मानपूर्ण उपाधि से विभूषित किया गया है, जिसके लिए निस्सन्देह आप श्रेष्ठतम अधिकारी थे । कृपया बधाई लें ।

'वालवीथी' स्तंभ के अंतर्गत शब्दों का रोचक संसार के माध्यम से आपने 'ओ॰के॰', 'हेलो', 'माफिया' आदि सार्वजनिक रूप से प्रचलित तथा बड़ी संख्या में प्रयुक्त होने वाले शब्दों की अन्वेषणात्मक जानकारी दी है । जिसमें 'कान्ति' के पाठकों को अपने ज्ञानवर्धन करने का रुचिपूर्ण अवसर मिला है, कृपया 'कान्ति' का यही बौद्धिक स्तर बनाये रखें । आभार रहेगा ।

स्वतंत्र भारत में नारी की सुरक्षा को लेकर आज सारा देश चिंतित है । विश्व की इस आधी आबादी के विषय में आपसे विचारोत्तेजक आलेख की 'कान्ति' में अपेक्षा थी । कृपया करके इस संबंध में भी अपनी क़लम को मुखरित करें ।

पंडित वी॰ एन॰ मुदगिल
गद्दी खेड़ी, रोहतक (हरियाणा)

नेकी और भलाई

'कान्ति' पत्रिका इन्सानों को नेकी और भलाई पर उभारती है । उनकी रहनुमाई करती है और उन्हें देश और दुनिया की हलचल से बाख़बर रखती है । यह पत्रिका संतुलित विश्लेषण करती है ।

नूरी बानो
शहनाज़ अकेडमी, सिंघाड़ा, दुल्हन बाज़ार, पटना

आडंबर एवं पाखंड

'कान्ति' मासिक पत्रिका जनवरी 2013 पढ़ी । उसमें लेख था, ''भारत में घरेलू हिंसा–एक ज्वलंत समस्या'' घरेलू हिंसा में जो नारियां प्रताड़ित की जाती हैं । उस पर डॉ॰ नजीब अहमद ख़ान ने वास्तविक सच्चाई भरा लेख लिखा । इसे झुठलाया नहीं जा सकता, ये वास्तविकता है कि कई प्रकार से हमारे देश में नारियों को प्रताड़ित किया जाता है ।

दूसरा लेख ''आडम्बर एवं पाखंड'' इसमें डॉ॰ मुहम्मद अहमद महोदय, ने जो लिखा कि ईश भक्ति अब भक्ति न रही, दिखावा और प्रदर्शन बन गयी है । लोग पालनहार, प्रभु की भक्ति से दूर ही रहते हैं । बिल्कुल सही बात अपने लेख में लिखी है । जो दिखावा व प्रदर्शन करते हैं वे प्रभु की भक्ति से दूर ही रहते हैं । इसे झुठलाया नहीं जा सकता । आज देश में इन्सान इन्सान को तो धोखा देता ही है वह भगवान को भी धोखा देता है । ईश्वर को भी धोखा देने से मनुष्य नहीं चूकता है ।

संपादक महोदय मैंने 'कान्ति' मासिक पत्रिका जनवरी 2013 पढ़ी, उसमें समाज सुधार एवं भक्ति मार्ग पर चलने के लिए जितना निष्पक्ष लेख प्रकाशित हुआ उसकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है ।

शिवमंगल सिंह
द्वितीय चक्र
केन्द्रीय कारागार, फ़तेहगढ़
जनपद-फ़र्रूख़ाबाद (उ॰प्र॰)

उत्कृष्ट संपादन

'कान्ति' का जनवरी 2013 अंक पढ़ा । डॉ॰ नजीब अहमद ख़ां ने घरेलू हिंसा पर चर्चा की है । प्रो॰ चन्द्र प्रकाश आर्य ने ठंड, गर्मी, ग़रीबी और भूख से मरते लोगों की व्यथा प्रस्तुत की है । ये दोनों लेख बढ़िया हैं ।

आडम्बर एवं पाखंड के बारे में आपने भी अच्छी प्रस्तुति दी है । कविता के बारे में व्यक्त किये गये वज्रघोष के विचारों से मुझे मतभेद है । विद्या प्रकाश का लेख इस अंक का हासिल कहा जा सकता है । मैं उन्हें मुबारकबाद देता हूं । उत्कृष्ट संपादन के लिए आपको बधाई ।

अमित कुमार लाडी
डोडा स्ट्रीट, फ़रीदकोट, पंजाब

काम को इनाम

अभी पढ़ने को मिला कि 'कान्ति' के संपादक डॉ॰ मुहम्मद अहमद को पंजाब की किसी संस्था ने सम्मानित किया है । जानकर ख़ुशी हुई लेकिन हैरत नहीं क्योंकि यह उनके काम का इनाम है । वे सम्मान पाने के हक़दार हैं और थे । इस तरह के सम्मान उन्हें बहुत पहले ही मिल जाने चाहिए थे । उनकी मेहनत को देखकर लगता है कि वे आगे भी इस तरह के सम्मान पाने के हक़दार रहेंगे । जहां तक मैं पढ़ता आया हूं डॉ॰ मुहम्मद अहमद ने पत्रिकारिता के क्षेत्र में बहुत मेहनत की है । जितनी मेहनत वह 'कान्ति' साप्ताहिक और मासिक पर कर रहे हैं उस हिसाब से उन्हें वह रुतबा और नाम नहीं मिल सका जो उन्हें मिलना चाहिए

था । इसका एक कारण यह है कि इस पत्र-पत्रिका का उतना विस्तार नहीं है जितना होना चाहिए ।

मेरा निजी तौर पर मानना है कि अगर इतनी मेहनत किसी ऐसे पत्र पर की जा रही होती जिसका विस्तार ज़्यादा होता तो शायद पार्लियामेंट में भी इसका परचम लहरा रहा होता । निष्पक्ष, सारगर्भिता, धार्मिक, नैतिक, सामाजिक, राष्ट्रीय मुद्दे उठाना इस संपादक का लक्ष्य रहा है । अल्पसंख्यकों, दलितों और दबे-कुचलों की आवाज़ उठाना उनका शग़ल है । पिछले दिनों जो पत्रकारिता के नाम पर कालिख पुती और जो थाना दरबार हुआ उस पर भी उन्होंने अच्छा लिखा और उस लेख में भी उनका दर्द भी सामने आया । दबे-कुचलों की आवाज़ सरकारों तक पहुंच सके इसके लिए अख़बार के मालिकों/संरक्षकों/अभिभावक से अनुरोध है कि वह इसकी प्रसार संख्या बढ़ाने पर ज़ोर दें, ताकि अख़बार सशक्त तरीक़े से अपनी आवाज़ बुलन्द कर सके । अगर मालिकों के आगे आर्थिक संकट की बात हो तो भले ही दो की जगह सिर्फ़ साप्ताहिक ही चलाएं, लेकिन इस तरह की उसकी आवाज़ से सरकार भी विचलित हो जाए ।

सी॰ के॰ रहमानी
दिल्ली

अच्छी जानकारियां

आपका समाचार पत्र मुझे प्राप्त हुआ, धन्यवाद ।

मैंने इस समाचार पत्र को ध्यान से पढ़ा । आपने इसमें अच्छी जानकारियां व ख़बरें प्रकाशित की हैं । कृपया इसका ऐसा ही स्वरूप बनाए रखें । मेरी शुभकामनाएं आपके साथ हैं ।

अभिजीत राणे
समूह संपादक–मुंबई मित्र/वृत्त मित्र
मोतीलाल नगर, गोरेगांव, मुंबई-62

शुभकामना

कान्ति सी हो आपकी यह पत्रिका
प्राप्त करते ही बजी हृत्तंत्रिका
प्रभु करे यह अमरता पद प्राप्त कर
सर्वजन का ले सभी अज्ञान हर ।

अंबु शर्मा
फ्लैट नं॰ 513, जलवायु रेजीडेंसी,
337, मोतीलाल गुप्ता रोड, बरिशा,
कोलकाता-700008

अस्मिता ख़तरे में है

नारी की अस्मिता
ख़तरे में है, ख़तरे में है
आज बहुत ख़तरे में है
आबरू पर उसकी हो रहे हमले
प्रताड़ना की है शिकार वह
घातक दाव, साज़िश के वार
बलात्कार की चपेट में दम तोड़ देती है
दहेज वेदना, आत्मदाह को विवश
भ्रूण हत्याओं का सह रही ज़ुल्म है
कुंठित, बेबस, बाध्य है
जाल कब तक बिछा रहेगा ?
शिकंजा कब तक कसा रहेगा ?
युग बदला, आज़ादी पायी
वारदातों से उबर न पायी
पल भर भी राहत नहीं पायी
उठो जागो शिक्षा का यह पैग़ाम है
देह प्रदर्शन, स्पर्धा की होड़ में
औरत न बने औरत की दुश्मन
झूठी शोहरत से बाज़ आओ
क्लबों की शोभा न बढ़ाओ
एकाकार हो करो व्यूह रचना
आगे बढ़ो आत्म बल दिखलाओ
बुराई से विद्रोह की मशाल जलाओ
चिंता की चादर सरकाओ
उत्साह दिखाओ शुभ परिवर्तन लाओ
नारी सम्मान का इतिहास बनाओ ।

निरंजन कुमार 'निराकार'
रतलाम (म॰प्र॰)

दो व्यंग्य क्षणिकाएं

नेताजी

नेताजी की सारी बातें सच्चाई से ख़ाली हैं
वादे उनके ठहरे झूठे आंसू भी घड़ियाली हैं ।

धोखा

राजनीति का धंधा चोखा
नेताजी को दौलत-शोहरत
पब्लिक को मिलता बस धोखा

अभिराम सत्यज्ञ जयशील
हथुआ-841436 (बिहार)

Md. Rashid
9835125717

N. S. ENCLAVE

Masud Ahmad
9431107797

आप मकान,
दुकान, कोठी,
रिहाइशी मकान एवं
सस्ते और सुन्दर
प्लाट एवं फ्लैट
के लिए
संपर्क करें।



साथ में
बी॰ एड॰ कॉलेज
एवं
इंजीनियरिंग कॉलेज
की भी सुविधा
उपलब्ध है।

साथ में मस्जिद एवं क़ब्रिस्तान भी है।

नग़मा ड्रेसेज

हमारे यहां फैंसी साड़ियां, रेडिमेड ड्रेस, टी शर्ट,
बाबा सूट, फ्रॉक, मिडी, नाइटी, स्कूल ड्रेस,
जींस पैंट एवं फैंसी रेडिमेड होजरी वस्त्रों के लिए पधारें।

OFFICE CONTACT : NAGMA DRESSES
Booti Chowk, Dubey Market, Ranchi (Jharkhand)

CONTACT No. 2 Masud Ahmad, Hamid Book Depot,
Opp. Urdu Library,
Main Road, Ranchi-834001 (Jharkhand)

Mobile : 09431107797

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षाएं आज भी प्रासंगिक

■ विद्या प्रकाश

यह दुनिया है ही ऐसी जगह जहां मुख़्तलिफ़ शक्लो सूरत व मिज़ाज के लोगों की पैदाइश व मौत, सिलसिला चलता रहता है । इस दुनिया-ए फ़ानी में लोग आते हैं तथा ज़िन्दगी का एक मुक़र्रर वक़्त गुज़ार कर यहां से चुपचाप हमेशा के लिए चले जाया करते हैं । मगर दुनिया में इन आने वाले लोगों में कुछ लोग ही ऐसे होते हैं जिनका दुनिया में आना दुनिया और इन्सान के लिए उम्मीद व रहमत का नया सवेरा लाता है । ऐसी ही शख़्सियतें दुनिया में बाइज़्ज़त याद की जाती हैं और एहतिराम से उनका नाम लिया जाता है । हमारे रहबरे कायनात, मुहसिने इन्सानियत और ताजदारे अंबिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्ल०) की ज़ाते मुबारक भी ऐसे लोगों में निहायत नुमायां और मिसाली है ।

जिस ज़माने में वे दुनिया में तशरीफ़ लाये, यह वह ज़माना था जब न सिर्फ़ पड़ोसी-पड़ोसी से दस्तो गिरेबां था बल्कि भाई भी भाई का जानी दुश्मन बना हुआ था । एक ही मां की गोद में पला तथा एक ही बाप के नुत्फ़े से पैदा एक भाई दूसरे भाई के ख़ून का प्यासा था । बुराइयां आम थीं । औरत का मुआशरे में कोई मक़ाम न था । उन्हें किसी तरह का कोई हक़ नहीं हासिल था । उनको महज़ इस्तेमाल किये जाने वाले सामान की तरह एक बेजान सामान समझा जाता था । दुख़्तरकुशी का चलन था और बेटियों को मां की कोख से पैदा होते ही ज़मीन में ज़िन्दा दफ़न कर दिया जाता था । ग़रज़ यह कि दुनिया हर तरह के ज़ुल्मो-सितम की तारीकियों में डूबी हुई थी । आदमी अपनी ज़िन्दगी के अस्ल मक़सद से भटक गया था ।

दुनिया के इस बिगड़े हुए माहौल में सरवरे कायनात हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अमनो सलामती का मज़हब दीने इस्लाम लेकर तशरीफ़ लाये, हम इन्सानों को एक बेहतर और एक-दूसरे के दुख-दर्द व तकलीफ़ को समझने वाले मुआशरे से रूशनास कराया तथा जीने का शऊर और बेहतर सलीक़ा सिखाया । उन्होंने अफ़रा-तफ़री और मार-धार के घोर अंधकार के मुक़ाबले मुहब्बत, सुलह, भाईचारे और बाहमी हमदर्दी की मिसाल क़ायम फ़रमायी । उन्होंने अपनी पाक और मिसाली ज़िन्दगी के ज़रिये रहती दुनिया तक के लिए भलाई और नेकी का पैग़ाम दिया जिसे हमेशा याद रखने की ज़रूरत है और जिस पर अमल करके हम ख़ुदा पाक की दी हुई दुनिया को मुहब्बत और अमन की ख़ुशबू से भर सकते हैं । हुज़ूर रहमते आलम ने अपनी तालीमात के ज़रिये जिस मेल मुहब्बत और यकजहती का पैग़ाम दिया है, उस पर अमल करने की ज़रूरत आज पहले से ज़्यादा शिद्दत से महसूस की जा रही है । उनके पैग़ाम दुनिया-ए इन्सानियत के लिए अब्रे रहमत की तरह सकूनबख़्श तथा शुभ हैं ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के ज़माने में जो अख़्लाक़ी और मुआशरती बुराइयां थीं, वे आज भी शक्ल बदल कर क़ायम हैं । औरतों को भोग की वस्तु समझा जा रहा है । उनके साथ आये दिन होने वाले बलात्कार, छेड़छाड़, छींटाकशी, अग़वा व इस्मतफ़रोशी जैसी वारदातें इसका उदाहरण हैं । कन्या भ्रूण हत्या आम बात हो गयी है । मां के पेट में पल रही बेटियों को ज़िन्दा मार दिया जा रहा है । एक-एक बिस्वा ज़मीन के लिए भाई-भाई का गला काटने को तैयार और उतावला है । छोटी-छोटी बात के लिए वह फ़ौजदारी पर आमादा है । समाज में बुतपरस्ती बढ़ी है । देवी देवताओं के मंदिर मज़हब के ठीकेदारों तथा धंधेबाज़ों के खाने-कमाने का ज़रिया बन गये हैं जहां पंडे-पुरोहितों, पुजारियों और मठाधीशों की दृष्टि श्रद्धालु भक्तों की जेब पर केन्द्रित रहती है । समाज में आर्थिक भ्रष्टाचार बढ़ा है । हर तरफ़ अशांति है । इसका कारण हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के पैग़ाम से हमारा भटक जाना है । उनके दिखाये और बताये रास्ते पर अमल करके ही हम इन्सानियत का भला कर सकते हैं । हमारी तमाम मौजूदा समस्याओं का समाधान उनके आदर्शों पर अमल से ही मुमकिन है ।

वैचारिक स्वतंत्रता एवं इस्लाम

■ मुहम्मद क़ुत्ब

बातचीत के दौरान एक सज्जन ने कहा–

'तुम बड़े तंगनज़र और लकीर के फ़क़ीर हो ।'

'क्यों ?' मैंने पूछा ।

'तुम ख़ुदा के वजूद पर ईमान रखते हो ?'

'निश्चित रूप से ।'

'उसकी इबादत करते और रोज़े रखते हो ।'

'बिल्कुल !'

'ख़ूब ! फिर मेरी बात ठीक है कि तुम तंगनज़र और लकीर के फ़क़ीर हो ।'

इस पर मैंने उनसे पूछा, 'आप किस तरह कह सकते हैं कि मैं तंगनज़र और लकीर का फ़क़ीर हूं ?'

'क्योंकि तुम जिन चीज़ों पर ईमान रखते हो, वे सब की सब एकदम बकवास और निराधार हैं, उनकी कोई हक़ीक़त और वजूद नहीं है ।' उनका उत्तर था 'और आप ? आप लोग किस चीज़ पर ईमान रखते हैं ? क्या आप जानते हैं कि यह सृष्टि किस ने पैदा की है और जीवन को किसने अस्तित्व प्रदान किया है ?' मैंने सवाल किया ।

'प्रकृति ।'

'पर प्रकृति क्या है ?

'प्रकृति वह छिपी और असीम शक्ति है, जिसे हम अपनी इंद्रियों से अनुभव करते हैं ।'

इस पर मैंने कहा...

'आप की बातों से मैं जिस नतीजे पर पहुंचा हूं, वह यह है कि आप मुझ एक अनजानी शक्ति (ख़ुदा) के आदेशाधीन रहने से रोक कर एक दूसरी समान अनजानी और रहस्यपूर्ण शक्ति (प्रकृति) का आज्ञापालक बनाना चाहते हैं, पर सवाल यह है कि मैं अपने वास्तविक उपास्य को, जिसके यहां मुझे हर प्रकार का मानसिक व शरीरिक सुख-सुविधा और शान्ति प्राप्त है, छोड़कर आख़िर आपके इस झूठे उपास्य, 'प्रकृति' की शरण में क्यों जाऊं ? जो न तो मेरी कोई ज़रूरत पूरी कर सकती है और न उसे मेरी इच्छाओं और कामनाओं को पूरा करने की शक्ति प्राप्त है ।'

विचार स्वतंत्रता का प्रगतिवादी अर्थ

इस संक्षिप्त वार्तालाप से विचार स्वतंत्रता के दावेदार प्रगतिवादियों के ज़ेहन का अन्दाज़ा आसानी से लगाया जा सकता है । इन लोगों के नज़दीक विचार स्वतंत्रता का अर्थ यह है कि इस्लाम अपने वास्तविक उपास्य से मुख मोड़ ले । पर यह अनीश्वरवाद है, इसे विचार स्वतंत्रता का नाम कदापि नहीं दिया जा सकता । ये लोग इस्लाम को केवल इसलिए आरोपित करते हैं कि ये इन्सान को वह विचार स्वतंत्रता नहीं देता जो इन्सान को अनीश्वरवाद की गोद में जा डालती है । पर प्रश्न यह है कि क्या विचार स्वतंत्रता और अनीश्वरवाद दोनों का अर्थ एक ही है ।

इन लोगों की अस्ल ग़लती यह है कि वे यूरोप के उदारवादी आंदोलन का अध्ययन करते हुए यह सच्चाई भूल जाते हैं कि अगर यूरोप की कुछ परिस्थितियों के कारण वहां अनीश्वरवाद को बढ़ावा मिला तो इससे यह कदापि प्रमाणित नहीं होता कि संसार में हर जगह यही स्थिति रहेगी और इसी तरह अनीश्वरवाद और अधार्मिकता को बढ़ावा मिलेगा ।

धर्म-विमुखता का कारण

यूरोप वालों के सामने चर्च ने ईसाई धर्म का जो विचार प्रस्तुत किया और जिस तरह उन्होंने प्रत्यक्ष वैज्ञानिक तथ्यों को झुठलाया, वैज्ञानिकों को कष्ट दिया और झूठ और अंधविश्वास के भंडार को ईश्वरीय धर्म का नाम दिया, उसका फल यह निकला कि स्वतंत्र विचार वाले यूरोपीय चिंतक अनीश्वरवाद की गोद में जा पड़े । क्योंकि उनके सामने जो दो संघर्षरत दृष्टिकोण थे उनमें से किसी एक को स्वीकार किये बिना कोई रास्ता रह ही नहीं गया था–चुनांचे उन्होंने ख़ुदा पर स्वाभाविक ईमान का मार्ग छोड़कर साइंस और उसकी फ़रमायी बातों पर विश्वास कर लिया । चर्च ने यूरोप को जिस द्विविधा में डाल दिया था उससे आंशिक मुक्ति का केवल यही एक मार्ग वहां के बुद्धिजीवियों को दीख पड़ा । सारांश यह कि उन्होंने चर्च से खुल्लमखुल्ला अपने अलगाव का ऐलान करते हुए कहा–'हम ऐसे ख़ुदा से बाज़ आये जिसके नाम पर तुम हमें गुलाम बनाना चाहते

हो । हम पर असहाय ज़िम्मेदारियों का पहाड़ लादते हो, और हम पर अपना दमनचक्र चलाते हो । तुम्हारे इस ख़ुदा पर ईमान लाने का अर्थ यह है कि हम जंगलों में चले जाएं और दुनिया जहान से मुख मोड़ कर निर्जन स्थानों पर जा बसें । हमें ऐसा ख़ुदा, ऐसा घर नहीं चाहिए । इसके बजाए अब हम अपने लिए एक नया ख़ुदा बनाएंगे जिसमें तुम्हारे ख़ुदा के गुण भी होंगे, पर उसके पास हमें ग़ुलाम बनाकर रखने के लिए चर्च जैसी कोई व्यवस्था न होगी और न वह हम पर उस प्रकार की कोई नैतिक, आध्यात्मिक या भौतिक पाबन्दी लगाएगा जो तम्हारे ख़ुदा की प्रमुख विशेषता है ।'

इस्लाम–एक सीधा और सच्चा धर्म

इससे स्पष्ट है कि यूरोप में धर्म के विरुद्ध जो प्रतिक्रिया हुई, वह वास्तव में वहां की चर्च व्यवस्था के दोषों का स्वाभाविक फल था । पर इस्लाम में न तो इस तरह की कोई व्यवस्था मौजूद है और न इसमें ईसाई धर्म की तरह ऐसी पहेलियां मिलती हैं जिनसे लोगों में धर्म विमुखता का भाव पैदा हो और वे अनीश्वरवाद की ओर झुक जाएं । इस्लाम में कोई चर्च नहीं पाया जाता बल्कि मात्र एक ख़ुदा है जो सृष्टि और समस्त जीवों का अकेला पैदा करने वाला है । मरने के बाद सब इन्सान उसी के हुज़ूर पेश किये जाते हैं । यह एक ऐसा स्पष्ट और खुला अक़ीदा है कि अगर प्रकृतिवादी और नास्तिक भी इसको झुठलाना चाहें तो आसानी से (और निष्ठा के साथ) उसे झुठला नहीं सकते ।

धार्मिक एकाधिकार का अन्त

इस्लाम में पादरियों का कोई वर्ग नहीं पाया जाता और न धर्म पर किसी विशेष गिरोह या व्यक्ति का एकाधिकार है । बल्कि यह सब इन्सानों की संयुक्त सम्पत्ति है और हर कोई अपनी प्राकृतिक, आध्यात्मिक और मानसिक क्षमताओं के अनुसार इससे लाभान्वित होने का समान अधिकारी है । इस्लाम की दृष्टि में सब इन्सान आपस में बराबर हैं । इनमें अन्तर और भेदभाव जो कुछ है वह उनके अपने कर्मों के अनुसार है । मान-सम्मान के अधिकारी केवल वही लोग हैं जो संयमी हों, भले ही अपने पेशे की दृष्टि से वे इंजीनियर हों या अध्यापक । मामूली मज़दूर हों या कारीगर, पर धर्म इन विभिन्न पेशों में से कोई एक पेशा नहीं है न पेशावर धार्मिक व्यक्तियों (पादरियों) का कोई वर्ग ही इस्लाम कहा जाता है । यही कारण है कि इस्लामी इबादतों को पूरा करने के लिए किसी पादरी की आवश्यकता नहीं होती । हां, समाज में सामाजिक नियमों और सिद्धांतों के विशेषज्ञों का वजूद ज़रूरी है । पर इस्लामी धर्मशास्त्र और क़ानून के इन विशेषज्ञों को इस्लामी समाज में वही हैसियत हासिल होती है जो इस प्रकार के विशेषज्ञों को दूसरे देश में सामान्यत: मिली होती है । दूसरों के मुक़ाबले में उन्हें न तो कोई प्रमुखता प्राप्त होती है और न विशेष आरक्षण मिले होते हैं ।

क़ानून विशेषज्ञ के रूप में यह राज्य के सलाहकारों का काम करते हैं । मिसाल के तौर पर जामिआ अज़हर एक धार्मिक संस्था है, लेकिन यूरोपीय चर्च की तरह उसे कभी यह अधिकार प्राप्त नहीं रहा कि वह अपने विरोधियों को ज़िन्दा जलाये या उन्हें भारी कष्ट दे-देकर समाप्त कर दे । उसका काम केवल इतना है कि व्यक्तियों के धार्मिक विचार और दृष्टिकोणों को आलोचना की कसौटी पर परखे और उनमें जो त्रुटि पाये उसे तर्क द्वारा स्पष्ट करे । पर दूसरी ओर व्यक्तियों को भी यही अधिकार प्राप्त है । वे भी जामिआ अज़हर के धार्मिक दृष्टिकोण और सिद्धांतों पर सतर्क वार्ता करके उसकी ग़लती स्पष्ट कर सकते हैं क्योंकि इस्लाम पर किसी व्यक्ति या वर्ग का एकाधिकार नहीं है, बल्कि धार्मिक विषयों में केवल उन लोगों को अथारिटी की हैसियत होती है जो धर्म का पूर्ण ज्ञान रखते हों और साथ ही उनमें यह योग्यता भी हो कि वे अपनी निजी पसन्द और नापसन्द से हटकर जीवन की व्यावहारिक समस्याओं में धार्मिक दृष्टिकोण निष्पक्ष भाव से व्यक्त कर सकें ।

इस्लामी व्यवस्था का वास्तविक अर्थ

चुनांचे इस्लामी व्यवस्था का कदापि यह अर्थ नहीं कि उसमें उलेमा अर्थात इस्लामी क़ानून के विशेषज्ञों को प्रभुत्व प्राप्त होगा और वे उसके समस्त उच्च पदों पर आसीन होंगे । इस्लामी व्यवस्था की स्थापना से जो महत्वपूर्ण परिवर्तन जन्म लेता है वह केवल यह है कि शासन व्यवस्था की बुनियाद, इस्लामी शरीअत या ख़ुदाई क़ानून क़रार पाता है । इसके अलावा और कोई परिवर्तन नहीं होता । इंजीनियर और डॉक्टर यथापूर्व अपनी सेवाएं करते रहते हैं, अर्थ विशेषज्ञ भी पूर्ववत अपने क्षेत्र में सक्रिय रहते हैं । हां, इतना अन्तर अवश्य होता है कि अब उनकी आर्थिक गतिविधियों की सीमा रेखा इस्लामी अर्थव्यवस्था की रोशनी में निश्चित होती है और इसी की सहायता से वे आर्थिक नीतियों की रूप-रेखा बनाते रहते हैं ।

इस्लामी धारणा और विज्ञान

इतिहास गवाह है कि इस्लामी धारणा और इस्लामी राज्य और साइंस या इसके सिद्धांतों के चरितार्थ करने के मध्य कभी कोई टकराव नहीं रहा । इस्लामी इतिहास में कभी किसी वैज्ञानिक को उसकी किसी खोज या आविष्कार के कारण ज़िन्दा नहीं जलाया गया और न कभी किसी को इस प्रकार के किसी 'अपराध' के बदले में घोर यातनाएं दी गयी हैं । साइंस और इस्लाम के इस बुनियादी अक़ीदे के दर्मियान सम्पूर्ण सृष्टि का रचयिता केवल एक ख़ुदा है, कोई विरोधाभास नहीं है इसीलिए इस्लाम बार-बार इन्सान को आसमान (अन्तरिक्ष) और ज़मीन के अध्ययन और अवलोकन का आह्वान करता है ताकि इस तरह अपनी और सृष्टि की पैदाइश के बारे में चिन्तन-मनन करके इन्सान अपने ख़ुदा को पास रखे । यही वह सृष्टि निरीक्षण है जिसके नतीजे में बहुत से ऐसे पश्चिमी वैज्ञानिक भी अब ख़ुदा के वजूद को मानने लगे हैं जो शुरू-शुरू में ख़ुदा के वजूद ही के इन्कारी थे ।

अनीश्वरवाद के अंधे प्रचारक

जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं इस्लाम में यूरोपीय चर्च जैसी कोई व्यवस्था नहीं पायी जाती जो उसके अनुयायियों को अनीश्वरवादी बनने पर मजबूर कर दे । पर इसके बावजूद इस्लामी देशों में हम कुछ लोगों को अनीश्वरवाद का प्रचार करते देखते हैं तो हमारे मन में स्वत: यह प्रश्न उभरता है कि आख़िर ये लोग क्या चाहते हैं ? सच तो यह है कि ये लोग अपने भूतपूर्व उपनिवेशवादी स्वामियों का अंधानुकरण करने वाले लोग हैं और उनके अनुकरण में चाहते हैं कि उन्हें धर्म और धार्मिक उपासनाओं पर उल्टी-सीधी आलोचना करने और मुसलमानों को धर्म विमुख बनाने की खुली छूट दे दी जाए ।

इस चीज़ को ये लोग विचार स्वतंत्रता का सुन्दर नाम देते हैं । यूरोप वालों ने तो इसीलिए अपने धर्म के प्रति विद्रोह किया ताकि वे चर्च के धार्मिक दमनचक्र और उसके फैलाए हुए अंधविश्वासों से मुक्त हो जाएं और सही अर्थों में मानसिक स्वतंत्रता प्राप्त हो । इस तरह वे लोग एक पहलू से अपने इस कार्य में सत्य पर थे और मजबूर भी । पर इस्लाम में न तो चर्च जैसा दमनचक्र है और न इसमें अंधविश्वासों की गुंजाइश है । वह तो इन्सान को आगे बढ़कर ऐसी तमाम ज़रूरी आज़ादियां दे देता है जो उसके लिए ज़रूरी हैं और जिनके नाम पर हमारे ये कथित प्रगतिवादी शोर हंगामा करते दीख पड़ते हैं । आख़िर इसका कारण क्या है और इस्लाम से ये लोग इतने रुष्ट क्यों है ?

सच तो यह है कि विचार स्वतंत्रता के इन कथित ध्वजावाहकों को विचार स्वतंत्रता से कोई ख़ास दिलचस्पी नहीं है । बल्कि इनका वास्तविक उद्देश्य उसकी आड़ लेकर समाज को नैतिक पतन और यौन अराजकता का रोगी बनाना है । विचार स्वतंत्रता के नारे को ये लोग केवल अपने घिनौने उद्देश्यों पर पर्दा डालने के लिए बुलन्द करते हैं । नैतिकता और धर्म के विरुद्ध इन लोगों ने जो घिनौनी लड़ाई छेड़ रखी है उसमें विचार स्वतंत्रता के नारे का मक़्सद केवल दूसरों को धोखा देना है । ये लोग इस्लाम के इसलिए विरोधी नहीं है कि वह मानव चिन्तन पर पाबन्दी लगाता है बल्कि उनके धर्म विरोध का मूल कारण और प्रेरक तत्व यह है कि धर्म मानव जाति को घटिया और नीच भावनाओं तथा विचारों की दासता से मुक्ति दिलाना चाहता है और यही चीज़ आवारागर्दी के इन रसियाओं को पसन्द नहीं ।

इस्लाम पर तानाशाही का आरोप

विचार स्वतंत्रता के समर्थक यह आरोप भी लगाते हैं कि इस्लाम की राजनीतिक व्यवस्था वास्तव में एक तानाशाही व्यवस्था है जिसमें राज्य को व्यापक अधिकार मिल जाते हैं जिन्हें वह धर्म के नाम पर बेझिझक इस्तेमाल करता है और लोग धार्मिक कट्टरता में सोचे समझे बिना ही अपने आपको उसके अधिनायकवादी क़ानून के हवाले कर देते हैं । इस्लामी राज्य के हाथों में अधिकारों का यह केन्द्रीय कारण तानाशाही को जन्म देता है और एक ऐसी व्यवस्था वजूद में आती है जिसमें जनता की हैसियत गुलामों से अधिक नहीं होती, जिन्हें अपनी अच्छाई-बुराई के बारे में कुछ सोचने-समझने, कोई राय देने या कोई फ़ैसला करने का सिरे से कोई अधिकार ही नहीं प्राप्त होता है । उनकी आज़ादी हमेशा-हमेशा के लिए छिन जाती है, जिसके बाद एक तो किसी को शासकों के अत्याचारों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने का हौसला ही नहीं रहता और अगर कोई भाग्य का मारा ऐसा साहस कर बैठता है तो उसे दीन (धर्म) और ख़ुदा का बाग़ी कहकर चुप करा दिया जाता है ।

आरोपों की हक़ीक़त

इन निराधार आरोपों का सबसे अच्छा उत्तर स्वयं क़ुरआन मजीद है । एक स्थान पर आया है-'उनका हर

काम आपसी मश्विरों से तय पाता है ।' (क़ुरआन, 42:38)

एक और जगह आया है–'और जब तुम लोगों के बीच फ़ैसला करो तो न्याय के साथ करो ।' (क़ुरआन, 4:58)

पहले ख़लीफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) ने फ़रमाया–'और अगर मैं अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करूं तो तुम पर मेरा आज्ञापालन अनिवार्य नहीं है ।'

दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर (रज़ि॰) ने जब कहा–'अगर तुम्हें मुझमें कोई दोष नज़र आये तो उसको सुधार दो' तो एक व्यक्ति ने कहा–'ख़ुदा की क़सम ! अगर हम तुममें कोई दोष पाते तो अपनी तलवारों से उसे सुधार देते ।'

क्या इस्लाम की इन शिक्षाओं और उसके अनुयायियों की इन खुली मिसालों में इन निराधार आरोपों के लिए कोई औचित्य पाया जाता है ?

धर्म और दमन-चक्र

यह सच है कि इतिहास में धर्म के नाम पर बार-बार दमन-चक्र चलाये गये और आज भी कुछ देशों में उसके नाम पर अत्याचार के पहाड़ तोड़े जा रहे हैं लेकिन क्या जुल्म व सितम धर्म ही के नाम पर किये जाते रहे हैं ? क्या हिटलर की तानाशाही की बुनियाद धर्म पर थी ? आज रूस में भी खुलेआम यह स्वीकार किया जाता है कि स्टालिन एक ज़ालिम और जाबिर तानाशाह था और उसका शासन मात्र पुलिस शासन था, लेकिन क्या स्टालिन का शासन धर्म के आधार पर चल रहा था ? क्या सभी तानाशाह भले ही वे माउत्से तुंग हो या फ्रांको, दक्षिण अफ़्रीक़ा का डॉ॰ म्लान हो या राष्ट्रवादी चीन का ज़नरल च्यांग काई शेक, मात्र धर्म के आधार पर सत्तारूढ़ रहे हैं ? सच तो यह है कि बीसवीं सदी के इन्सान ने आध्यात्मिक क्रूरता से तो मुक्ति प्राप्त कर ली है, पर वह अब भी तानाशाही और दमन-चक्र के अति भयावह और घिनौनी शक्लों का शिकार है, जिन पर इन्सानों को मूर्ख बनाने के लिए भांति-भांति के सुन्दर लेबिल लगा दिये गये हैं और उन्हें आज भी पावनता का बिल्कुल वही स्थान प्राप्त है जो कभी धर्म को प्राप्त था ?

अपराधी कौन है ?

कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति तानाशाही का समर्थन नहीं कर सकता और न उसे सही समझ सकता है । लेकिन अच्छे से अच्छे नियमों की भी बिगाड़ कर उन्हें निजी स्वार्थ और उद्देश्य के लिए यंत्र के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है । जिससे स्पष्ट है कि अपराध इन नियमों का नहीं बल्कि पुन: उन स्वार्थी व्यक्तियों का है जो अपने घिनौने इरादों पर पर्दा डालने के लिए उनका नाम इस्तेमाल करते हैं ।

फ्रांस की क्रांति के समय स्वतंत्रता के नाम पर अति अप्रिय और घिनौने अत्याचार किये गये । स्पष्ट है कि इसका यह अर्थ कदापि नहीं हो सकता कि हम इन अत्याचारों की आड़ लेकर तमाम स्वतंत्रता आंदोलनों का विरोध शुरू कर दें । इसी तरह इतिहास में अनेकों बार संविधान और क़ानून के नाम पर सैकड़ों बेगुनाहों को जेलों में डाला गया, उन्हें कष्ट पहुंचाया गया, उन्हें कुचलने और दबाने का यत्न किया गया, पर क्या यह इस बात के लिए काफ़ी है कि संविधान और क़ानून को व्यर्थ की बात कहकर उसे समाप्त कर दिया जाए ?

इसी तरह अगर कुछ देशों में धर्म के नाम पर दमन चक्र चलाया गया है या चलाया जा रहा है तो क्या केवल इसलिए धर्म को हमें अपने जीवन से निकाल बाहर करना चाहिए? अगर कोई धर्म अन्याय, अत्याचार और क्रूरता पर आधारित हो तो ऐसे धर्म का तो निस्सन्देह परित्याग ही बेहतर है । पर

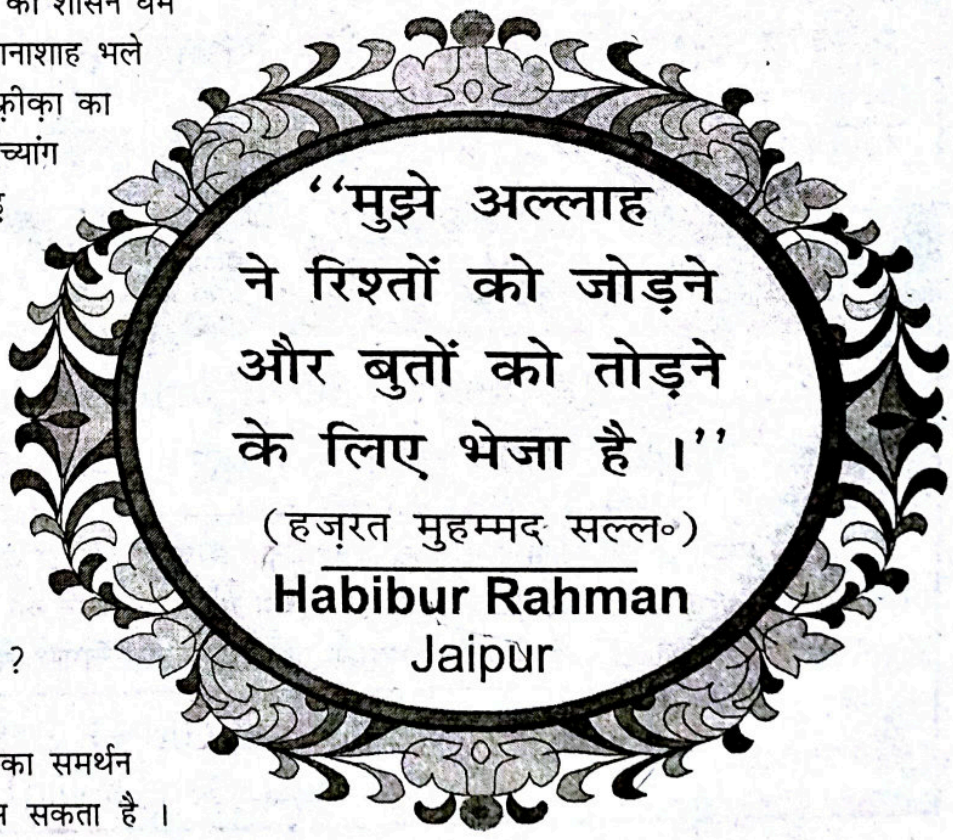

इस्लाम की तरह जो धर्म न्याय और इन्साफ़ सिखाता हो और हर प्रकार के अत्याचार को मिटाना चाहता हो, तो उसके विरोध का कोई औचित्य भी है ? इस्लाम ने न केवल मुसलमानों के दरमियान न्याय और इन्साफ़ के श्रेष्ठ और पवित्र उदाहरण दिये हैं, बल्कि मुसलमानों और उनके घोर शत्रुओं के मामले में भी न्याय और इन्साफ़ की ऐसी जगमग करती परम्पराएं स्थापित की हैं जिनकी नज़ीर ढूंढ़े से भी कहीं नहीं मिलती ।

दमन-चक्र का सबसे अच्छा इलाज

दमन-चक्र के मुक़ाबले का सबसे अच्छा रास्ता यह है कि लोगों के दिलों में अल्लाह पर ईमान का अक़ीदा पैदा किया जाए और उन्हें दूसरों की उन आज़ादियों (अधिकारों) का आदर करना सिखाया जाए जिनकी रक्षा की स्वयं धर्म ने गारंटी दी है । इस प्रकार के ईश्वरवादी समाज के व्यक्ति अपने शासकों को इस बात की इजाज़त नहीं दे सकते कि वे क़ानून की सीमाओं का उल्लंघन करके दूसरों पर अत्याचार करें । इस्लाम ने जिस प्रकार एक न्यायपूर्ण जीवन व्यवस्था की स्थापना और दमन चक्र के विरोध पर बल दिया है उसकी मिसाल किसी अन्य व्यवस्था में नहीं मिलती । इस्लाम के नज़दीक जनता का यह कर्तव्य है कि अगर उनके शासक ज़ुल्म या ज़्यादती करें तो वे उनके सुधार की कोशिश करें । पैग़म्बरे इस्लाम (सल्ल०) का इरशाद है कि–'तुममें से कोई बुराई देखे तो उसको सुधार दे ।'

(बुख़ारी मुस्लिम)

एक और मौक़े पर आपने फ़रमाया–'अल्लाह के नज़दीक सबसे बड़ा जिहाद ज़ालिम हाकिम के सामने सत्य बात कहना है ।'

जीवन के ये ही वे मौलिक नियम थे जिनके कारण जब लोगों ने अपनी समझ से तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उस्मान (रज़ि०) के बारे में यह जाना कि वह सीधी राह से हट गये हैं तो वे आपके ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए । यह अलग बात है कि उनकी लायी हुई इस क्रांति के नतीजे में बिगाड़ और बढ़ गया ।

अंत में हम अपने 'प्रगतिवादी' मित्रों से ये कहना चाहते हैं कि वास्तविक स्वतंत्रता धर्म को छोड़ने में नहीं बल्कि जनसाधारण में एक ऐसा क्रांति भाव पैदा करने में निहित है जो किसी अन्याय और अत्याचार को सहन नहीं करता और अगर कहीं कोई दीख पाता तो उसे सुधार देता है । यही क्रांति भाव इस्लाम का वास्तविक एवं विशिष्ट गुण है ।

''दीन का इल्म सीखो और दीनी इल्म के लिए वक़ार और संजीदगी सीखो और जिनसे तुम दीन का इल्म हासिल करो उनसे ख़ाकसाराना बर्ताव रखो ।'' (मुस्लिम)

इस्लामिक प्राइमरी व गर्ल्स जूनियर हाईस्कूल

रहमत नगर, गोरखपुर (यू०पी०) 273005

फ़ोन : 0551-2291043

शहर गोरखपुर का एक जाना-माना स्कूल, आधुनिक शिक्षा व कंप्यूटर के साथ दीनी शिक्षा का बेहतरीन इन्तिज़ाम, बच्चों में अच्छा शहरी बनने के साथ-साथ एक अच्छा मुसलमान बनने की भावना पैदा करने की व्यवस्था, कक्षा 6 से बच्चियों के लिए शिक्षा की बेहतरीन व्यवस्था ताकि ये समाज निर्माण में सकारात्मक भूमिका निभा सकें ।

Islamic Primary & Girl's J. H. School
Rahmat Nagar, Gorakhpur (U.P.)

हिन्दू धर्म में एकेश्वरवाद और इस्लाम

■ पं० दुर्गाशंकर सत्यार्थी

वेद हिन्दू धर्म के प्रामाणिक धर्म-ग्रंथ हैं । वेद स्वयं ईश्वर द्वारा कथित माने गये हैं । ऋग्वेद में एकेश्वरवाद निम्न रूप में पाया जाता है–

''नोदयति यत्न नश्यति निर्वाति न निवर्ति प्रयच्छति च,
ज्ञानक्रिया स्वभावं तत्तेजः शाम्भवं जयति ।''

अर्थात जो न उदित अर्थात उत्पन्न होता है, न नष्ट होता है, न मरता है, न मृत्यु उसके समीप आती है । जिसका तेज केवल ज्ञान द्वारा ही जाना जा सकता है । वही शिव अर्थात सत्य है ।

श्वेताश्वतर उपनिषद् में देखिए :

''यदा तमस्तन्न दिवा न रात्रिर्न सन्न चासच्छिव एव केवलः ।
तदक्षर तत्सवितुर्वरेण्यं, प्रज्ञा च तस्मात् प्रसृता पुराणी ।''
(श्वेताश्वतरोपनिषद्, 4/18)

अर्थात सृष्टि के आदिकाल में जब केवल अंधकार ही अंधकार था; न दिन था, न रात्रि थी, न सत् अर्थात कारण था, न असत् अर्थात कार्य था, केवल एक निर्विकार परब्रह्म ही विद्यमान था । वही सत्य है; केवल वही प्रार्थना करने योग्य है ।

महाभारत को हिन्दू धर्म में पांचवां वेद माना गया है । तनिक इस पर भी दृष्टिपात कीजिये :

यत्र भूतपतिः सृष्ट्वा, सर्वलोकान सनातनः ।
उपास्यते तिग्मतेजा वृत्तो, भूतै सहस्वशः ।''

अर्थात एक परब्रह्म ने ही समस्त लोकों एवं विश्व की सृष्टि की है । केवल उसकी ही उपासना करो ।

–अथर्वशिर उपनिषद् में देखिए :

''यत्सूक्ष्मं तद्वद्युतम्, यद्वैद्यु तम् तत् परं ब्रह्म, यत् परं ब्रह्म
स एकः, य एकः
स रुद्रः, यो रुद्रः स ईशानः, य ईशानः स भगवान महेश्वरः ।''

अर्थात जो सूक्ष्म है वही अद्वितिय है, जो अद्वितिय है वही परबह्म है, जो परब्रह्म है वह एक है, जो एक है वही रुद्र है, जो रुद्र है वही ईशान है और वही भगवान है जो ईश्वर है ।

परमेश्वर सबसे परे अर्थात सबसे अलग है । यह बात स्मृति में भी डिण्मिघोष से स्पष्ट कही गई है :

सर्वेन्द्रियेभ्यः परमं मन आहुर्मनीषिणः ।
मनसश्चाप्यंहकारः अहंकारान्महान् परः ।।
महतः परमव्यक्तमव्यक्तात् पुरुषः परः ।
पुरुषाह भगवान प्राणस्तस्य सर्गमिदं जगत् ।।
प्राणात् परतरंव्योम व्योमातीतोऽग्निरीश्वरः ।
ईश्वरान्न पवं किञ्चित् .....।।

अर्थात सारी इन्द्रियों से परे मन है, मन से परे अहंकार है, अहंकार से परे महत्तत्व है । प्रकृति महत्तत्व से परे है, पुरुष प्रकृति से परे है । पुरुष से प्राण परे है, प्राण का ही वह समस्त जगत है । प्राणों से परे व्योम है और ज्योति स्वरूप ईश्वर व्योम से भी परे अर्थात अलग (दूर) है । किन्तु ईश्वर से परे अर्थात अलग (दूर) कुछ भी नहीं है ।

वेद भी यही कहते हैं :

''यस्मात्परं नापरमस्ति किञ्चित् ।''

अर्थात जिससे परे और कुछ भी नहीं है, वही ईश्वर है । शिवपुराण कहता है :

यतः सर्वं समुत्पन्नं येनैव पाल्यते हि तत् ।
यमिंश्च लीयसे सर्वं येन सर्वमिदं ततम् ।।
तदेव शिवरूपं ही प्रोक्यते हि मुनीश्वराः ।
सत्यं ज्ञानमनन्तं च चिदानन्द उदाश्रतः ।।
निर्गुणो निरुपाधिश्च निरञ्जनोऽव्ययस्तथा
न रक्तो न च पीतश्च न श्वेतो नील एव च
यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह ।
तदेव प्रथमं प्रोक्तम् वह्यै व शिवसंज्ञितम् ।।

अर्थात जिससे इस विश्व की उत्पत्ति पालन और संहार होता है, जो इस समस्त में व्याप्त है । वही वेदों में सत्य कहा गया है । वही सत्य है, ज्ञान स्वरूप है, वही अनन्त है, असीम चिदानन्द है । वह निर्गुण, निरुपाधि, निरन्जन और अव्यय है । वह रक्त, पीत, नील, श्वेतवर्ण नहीं है । वह तो

वाणी की पहुंच के परे है । वही परब्रह्म एकमात्र सत्य है ।

ऋग्वेद कहता है :

''त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिंपुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव वन्धान्मृत्योर्मु क्षीय मामृतात् ।''

(ऋग्वेद्, सप्तम मंडल, सूक्त-51)

अर्थात ब्रह्म मृत्यु पश्चात जीवन के सुधार हेतु एवं अमृत-स्थिति अर्थात स्वर्ग प्राप्ति हेतु यजन किये जाने वाला है ।

माण्डूक्योपनिषद् में :

''नान्तःप्रज्ञं न बहिःप्रज्ञं नोभयतः प्रज्ञं न प्रज्ञानघनं न प्रज्ञं नाप्रज्ञमहष्टमव्यवहार्यमग्राह्ययमलक्ष मचिन्त्य मव्यपदेश्यमेकात्मप्रठत्ययसारं प्रपञ्चोपशमं शान्तं शिवमद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते, स आत्मा स विज्ञेयः ।''

अर्थात जिसकी प्रज्ञा बहिर्मुख नहीं है, अन्तर्मुख नहीं है और उभयमुख भी नहीं है, जो प्रज्ञानघन नहीं है, प्रज्ञ नहीं है और अप्रज्ञ भी नहीं है, जो वर्णन से अतीत है, दर्शन से अतीत , व्यवहार से अतीत, ग्रहण से अतीत, लक्षण से अतीत, छिम्ता से अतीत, निर्देश से अतीत आत्मप्रत्ययमात्र सिद्ध, प्रपञ्चातीत, शान्त, सत्य, अद्वैत (अर्थात केवल एक) और तुरीयपदस्थित है, वही निरुपाधिक जानने योग्य है । वही महेश्वर है, स्वयम्भू और ईशान है ।

अब श्रीमद्भगवद्गीता पर दृष्टिपात कीजिए :

''अन्तबत्तु फलं तेषां तदभ्वत्यल्पमेधसाम् ।
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यांति मायपि ।।
अव्यक्तं व्याक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामनुद्धयः ।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ।।
नाह प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः ।
मुढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् ।।

(श्री मद्भगवद्गीता, अध्याय 7,23,24,25)

अर्थात जो मेरे अतिरिक्त किसी और को पूजते हैं वे उसी को प्राप्त होते हैं । (अर्थात पत्थर, नदी और पहाड़ों को पूजने वालों को पत्थर, नदियों और पहाड़ों की ही प्राप्त होती है) किन्तु मुझे पूजने वाले मुझ तक पहुंच ही जाते हैं । ऐसा होने पर भी सब मनुष्य मुझे नहीं पूजते (इसका कारण यह है कि बुद्धिहीन पुरुष मेरे अनुत्तम अर्थात जिससे उत्तम और कुछ भी नहीं ऐसे अविनाशी परम भाव को तत्व से न जानते हुए मन इन्द्रियों के परे मुझ को मनुष्यों की भांति मानते हैं । मैं उनके सामने प्रत्यक्ष नहीं होता हूं इसलिए अज्ञानी मनुष्य मुझ जन्म-रहित अविनाशी परमात्मा को तत्व से नहीं जानते हैं और मुझे जन्म लेने तथा मरने वाला समझते हैं ।''

उपर्युक्त समस्त उदाहरणों में स्पष्ट है कि ईश्वर केवल एक है, वह न जन्म लेता है, न मरता है, संसार की सृष्टि के पूर्व केवल वही था, उसी ने सम्पूर्ण विश्व की रचना की, वह सबसे अलग है किन्तु उससे अलग कुछ भी नहीं है, वह निर्गुण है, न लाल रंग का है न पीले रंग का, न नीले रंग का, न श्वेत रंग का, वह इन्द्रियों से नहीं देखा जा सकता । वही सत्य है । वही हम सबका पूज्य है । यदि हम उसको नहीं पूजते तो हम उसका आदेश नहीं मानते । परिणामस्वरूप हम उस तक नहीं पहुंच सकेंगे । वह एक है–केवल एक और बुद्धिमान व्यक्ति को केवल उसी की उपासना करनी चाहिए । उसे जन्म लेने और मरने वाला नहीं समझना चाहिए ।''

अब यही शिक्षाएं कुरआन मजीद की इस आयत में देखिए :

''अल्लाह उसके सिवा कोई 'इलाह' (इष्ट पूज्य) नहीं, वह सजीव (अर्थात वह सजीव) और अमर है । वही जीवन का मूल स्रोत है । जिसको भी जीवन मिलता है उसी से मिलता है) और चिरस्थायी (अर्थात वह अपने अस्तित्व में किसी का मुहताज नहीं है । वह ख़ुद से क़ायम सारी सृष्टि का स्थापित करने वाला और स्थिर करने वाला वही है ।) उसे न ऊंघ लगती है, न नींद आती है । जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब उसी का है । कौन है जो उसके सामने बिना उसकी इजाज़त के सिफ़ारिश कर सके ? जो कुछ उन (लोगों) के सामने है और जो कुछ उनके पीछे (ओझल) है वह सब जानता है और उसके ज्ञान में से किसी चीज़ पर हावी नहीं हो सकते सिवाय उसके जितना वह (स्वयं) चाहे । उसकी कुर्सी (राजचौकी) आसमानों और ज़मीन पर छाई हुई है और उसकी रक्षा उसके कोई थका देने वाला कार्य नहीं । और वह सबसे उच्च और महान है ।''

–दिव्य कुरआन सूरा 2, आयत 255, अनुवादक मुहम्मद फ़ारूक़ खां

''और यह कि हमारे रब का गौरव अत्यन्त ऊंचा है– उसने न तो किसी को अपनी पत्नी बनाया और न किसी को अपनी औलाद (अर्थात यह अल्लाह की महानता और उसके गौरव के सर्वथा प्रतिकूल है कि उसका बेटा या उसकी कोई

पत्नी हो और इस प्रकार प्रभुत्व में उसके साथ दूसरे भी शरीक हों। यह ज़मीन और आकाश और अल्लाह की प्रदान की हुई बुद्धि इसी बात की साक्षी है कि वह एक और परम स्वतंत्र है)।''

–दिव्य कुरआन (The same edition) सूरा अल-जिन्न, आयत 5

इस प्रकार हम देखते हैं कि जिस एकेश्वरवाद की शिक्षा कुरआन में दी गयी है वही एकेश्वरवाद हिन्दू धर्म का भी मूल आधार है। वास्तव में धर्म जो कुछ भी है वह केवल ईश्वर का एक सत्य धर्म ही है। इस्लाम के अनुसार इस दुनिया में कमोबेश एक लाख चौबीस हज़ार ईशदूत (पैग़म्बर) आये। और वे सब एक ही सत्य धर्म लेकर आये। हिन्दुस्तान में जब सत्य धर्म उतारा गया तो उसका नाम हिन्दू धर्म था और अरब में जब सत्य धर्म उतारा गया तो उसका नाम इस्लाम था। हमारा हिन्दू धर्म भी उसी ईश्वर की ओर से आया है जिस ईश्वर ने अरब में इस्लाम भेजा। निश्चय ही ईश्वर एक है, उसके समान न तो कोई है न कोई होगा (न भूतो न भविष्यति)।

अभी तक तो मैंने आपके सामने हिन्दू धर्म के विभिन्न धर्म ग्रंथों (जिन्हें धर्म ग्रंथ कहना भी–क्षमा कीजिए–उचित नहीं समझता, क्योंकि इन शिक्षाओं के अतिरिक्त भी उनमें कुछ ऐसी शिक्षाएं हैं जो इन शिक्षाओं से टकराती हैं) से एकेश्वरवाद के उदाहरण प्रस्तुत किये। अब आप वेदों की ओर आइए।

इस बात से कोई भी हिन्दू अस्वीकृति प्रकट नहीं कर सकता कि वेद हिन्दू धर्म के मूल ग्रंथ हैं। अब मैं यह कहना चाहता हूं कि केवल वेद ही हिन्दू धर्म के ग्रंथ हैं, अन्य कोई नहीं। जहां तक मेरा विचार है मेरी इस घोषणा से कोई भी हिन्दू असहमत नहीं होगा। देखिए कि वेद किस प्रकार सम्पूर्ण रूप से 'एकेश्वरवाद' की शिक्षा देते हैं।

–ऋग्वेद, प्रथम मंडल प्रथम अनुवाक, सूक्त 1

अग्निमीले पुरोहित यज्ञस्य देवमृत्विजम
होतार रत्नधातमम ।।1।।

'यज्ञ को पुरोहित होकर अग्नि के समान प्रकाशवान मृत्यु पर विजय प्राप्त अर्थात मृत्युरहित उस देव की तुम उपासना करो जो रत्नयुक्त सम्पूर्ण पृथ्वी का कारण हेतु है। (अर्थात हम परमेश्वर ने ही यह रत्नयुक्त पृथ्वी बनायी। तुम केवल हमारी ही उपासना करो) ।।1।।

अग्नि: पूर्वेभिर्ऋसिभिरीड्यो नूतनैरुत। स देवां एह वअति ।।2।।

'पूर्वकाल में ऋषियों ने जिसकी उपासना की थी तथा अब भी ऋषिगण जिसकी उपासना करते है ऐसे केवल हमें ही तुम पूज्य समझो। हम ही एक पूज्य देव हैं ।।2।।

अग्निना रयिमश्नवत पोषमेव दिवेदिवे। यशस वीखत्तमम ।।3।।

'हम ही तुम्हें धन प्रदान करते, तुम्हारा पालन-पोषण करते एवं धर्म युद्ध में वीरत्व प्रदान करते हैं-। (अर्थात सम्पूर्ण जगत के स्वामी परब्रह्म परमेश्वर ही समस्त मनुष्यों के पालन-पोषण हेतु धन प्रदान करता एवं धर्म युद्ध में विधर्मियों की पराजय एवं हिन्दुओं की विजय का वीरत्व प्रदान करता है। वही हमारा वास्तविक ईश्वर है जिसकी हमें उपासना करनी चाहिए) ।।3।।

अग्ने यं यज्ञमह वरं विश्वत: परिभूरसि।
स इद्देवेषु गच्छति ।।4।।

जिस प्रकार अग्नि यज्ञ का आधार है उसी प्रकार हम विश्व का आधार हैं। हम ही सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त हो रहे हैं। यह जगत देवों में जाता है। (अर्थात यह जगत और इसके निवासी बारम्बार परमेश्वर से विमुख होकर देवों की ओर जाते हैं परमेश्वर ने अग्नि से बनाया है। इसके अतिरिक्त देव और कुछ भी नहीं) ।।4।।

अग्निर्होता कविकतु: सत्यश्चित्रश्रवस्तम:।
देवो देवेभिरागमत ।।5।।

जिस प्रकार आग होता की बनायी हुई है उसी प्रकार सत्य आदि चरित्र हमारे बनाये हुए हैं। देव (तो) देवों के साथ आता है (अर्थात देवता आदि भगवान के बनाये हुए हैं। जिस प्रकार होता अग्नि बनाता है उसी प्रकार भगवान ने आग से देवताओं का निर्माण किया। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि भगवान की उपासना में उन देवताओं को भी सम्मिलित कर लिया जाए) ।।5।।

ये हैं ऋग्वेद के प्रारम्भिक पांच श्लोक। यहां तो मैंने केवल पांच श्लोक दिये हैं किन्तु पूरा ऋग्वेद और यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्वेद भी इन्हीं श्लोकों से भरे हैं। उदाहरण के लिए ऋग्वेद के ही कुछ और श्लोक देखिये जिनमें बहुदेववाद का पत्ता सिरे से ही काट दिया गया है।

यथा–

सुरूपकृत्तुमूतये सुदुघामिव गोदुहे।

خطباتِ پاکستان

مولانا سید جلال الدین عمری

یہ کتاب اصلاً مولانا سید جلال الدین عمری امیر جماعت اسلامی ہند کے ان خطبات پر مشتمل ہے جو انھوں نے جون ۲۰۱۲ء میں اپنے سفر پاکستان کے دوران مختلف دینی، تحریکی اور علمی مجلسوں میں دیے تھے۔ ان خطبات کا دائرہ بڑا وسیع ہے۔ ان میں اقامت دین کے علمی تقاضے، احیائے اسلام کی تدابیر، غلبۂ دین کی مختلف جہتیں، ذاتی اصلاح و تربیت، ہندوستانی مسلمانوں کے حالات و مسائل اور جماعت اسلامی ہند کی خدمات جیسے اہم موضوعات زیر بحث آئے ہیں۔

ان خطبات کے ساتھ وہ روداد، جو مولانا کے رفیق سفر ڈاکٹر محمد رضی الاسلام ندوی نے قلم بند کی تھی اور ۲۰۰۵ء میں مولانا عمری کے سفر پاکستان کی وہ روداد، جو خود انھوں نے تحریر کی تھی، دونوں شامل کر دی گئی ہیں۔ یہ دونوں رودادیں عام طرح کی رودادیں نہیں ہیں، بلکہ ان میں پاکستان کے حالات، وہاں کی بعض اہم شخصیات کا تعارف، دینی و تحریکی حلقوں کی سرگرمیاں اور بعض علمی مسائل پر اسلامی نقطۂ نظر کی وضاحت آ گئی ہے، اس لیے ان کی حیثیت ایک علمی دستاویز کی ہو گئی ہے۔

● سائز : $\frac{۲۳ \times ۳۶}{۱۶}$ ● صفحات : ۱۹۲ ● قیمت: 100.00

مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز، نئی دہلی ۲۵

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858
E-mail: mmipublishers@gmail.com • Website: www.mmipublishers.net

जुहूमसि द्यवि द्यवि ।।1।।

उप नः सवना गहि सीमस्य सोमयाः पिब । गोदा इन्द्रेवतो मदः ।।2।।

अथा अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम । मा नो अतिख्या आ गहि ।।3।।

परेहि विग्रमस्तृत मिन्द्र पृच्छा विदश्चितम ।

यस्ते सखिभ्य आ वरम ।।4।।

उत बु वन्तु नो निदो निरन्यतश्चिदारत ।

दधाना इन्द्र इददुवः ।।5।।

अर्थात, सुन्दर रूपों वाली मुर्ति बनाकर, गाय दुहकर (अपनी समझ में) और द्यवि द्यवि अर्थात दिवि दिवि अर्थात सम्पूर्ण पृथ्वी में ये उन मूर्तियों की उपासना करते हैं ।।2।। (ये) हमारे सब (मार्गों का) परित्याग कर चन्द्रमा की महत्ता (अर्थात मूर्तिपूजक ईश्वर की शक्ति) भूल कर शराब पीते हैं । (अर्थात मूर्तिपूजक ईश्वर की शक्ति एवं सामर्थ्य का विस्मरण करके मूर्ति पूजा के नशे में चूर रहते हैं ।) ये नशे की गोद में दुराचारियों के समान सो गये हैं ।।2।। वे अन्तिम दिन का विस्मरण कर विद्या एवं बुद्धि का तिरस्कार कर हमारी निश्चित की हुई सीमा को पकड़ रहे हैं ।।3।। अपनी विस्तृत इंद्रियों के परे ये विपत्तियों का ठिकाना पूछते हैं जो ऐसे साथियों के लिए परम अर्थात श्रेष्ठ हैं (हम उन्हें विपत्तियां ही देंगे) ।।4।। और ये हमारी निन्दा करते हैं । तुम जो कि अपनी इन्द्रियों को वश में करने वाले हो, हमारा स्तवन करो और विधर्मियों को इस देश से दूर भाग जाने को कहो (अर्थात उन्हें देश से निकाल दो, वे पवित्र आर्यावर्त में रहने योग्य नहीं) ।।5।।

–ऋग्वेद प्रथम मंडल, द्वितिय अनुवाक, सूक्त 4

यह है हमारा मूल धर्म ग्रंथ ऋग्वेद। उपर्युक्त श्लोकों से यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है कि बहुदेववाद वेद विरुद्ध है और वेदों को मूल ग्रंथ मानते हुए बहुदेववाद की हमारी कल्पना कहां तक उचित है । वेद मूर्तिपूजा का घोर विरोध करते हैं जैसा कि उपर्युक्त श्लोकों में देखा गया है, और वे यह भी प्रमाणित करते हैं कि ईश्वर केवल एक है उसके अतिरिक्त और कोई भी ईश्वर नहीं ।

वेद की इन शिक्षाओं की पुष्टि विश्व के और भी अन्य धर्म ग्रंथ करते हैं । तौरात, इंजील, तलमूद, ज़बूर और दिव्य कुरआन भी वेद की शिक्षाओं की पुष्टि करते हैं ।

केवल हिन्दू धर्म के वर्तमान धर्म ग्रंथ (जिन्हें बनाने वाले मनुष्य ही हैं) ही बहुदेववाद की शिक्षा देते हैं, जबकि एकेश्वरवाद की शिक्षा स्वयं वेद एवं विश्व के अन्य ग्रंथ भी देते हैं । कुरआन मजीद की एक भी आयत वेदों के श्लोकों से नहीं टकराती । अब आप स्वयं विचार कर लीजिए कि वह एकेश्वरवाद सत्य है जिसकी पुष्टि सभी कोई करते हैं या वह बहुदेववाद जिसकी न वेद अनुमति देते हैं न कोई और धर्म ग्रंथ । मुझे कुछ नहीं कहना है आप स्वयं ही सोच लीजिए । ईश्वर परम कृपालु है और उसने सभी को बुद्धि दी है, आपको भी ।

Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

The Society is in service in the field of education, health and Islamic Understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15,000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov-March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

Kindly send your Cheque/Draft in favour of the society

(Nayyarruzzama)
Chairman

(Prof. Inamul Huque)
Secretary

J I S S S

Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001

बीमारियों की जननी है शराब

❖ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

इस्लाम की दृष्टि में शराब बीमारियों की जननी है । मेडिकल साइंस ने इधर जाकर इसकी पुष्टि की है कि इसके शरीर पर बहुत घातक प्रभाव पड़ते हैं । सम्राट जार्ज के पारिवारिक डॉक्टर सर फ्रेडरिक स्टीक्स वार्ट का कहना है, "शराब शरीर की पची हुई शक्तियों को भी उत्तेजित करके काम में लगा देती है, फिर उसके ख़र्च हो जाने पर शरीर काम के लायक़ नहीं रहता ।" इसी प्रकार सर एंड्रू क्लार्क वार्ट (एम॰डी॰) का कथन है, "शरीर को अल्कोहल से कभी लाभ नहीं हो सकता ।"

इस्लाम की सद्क्रान्तियों में से एक है शराब और मादक पदार्थों के सेवन से मानवता को निजात दिलाना । अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के समय में अरब समाज इतना पतित था कि जीवन में भोग-विलास की जो भी सामग्री प्राप्त हो सकती थी उससे आनन्द लेना और आज़ादी के साथ शराब पीना लोगों की दिनचर्या में शामिल हो गयी थी । लेकिन उन पर इस्लामी शिक्षाओं का इतना ज़बरदस्त प्रभाव पड़ा कि शराब पीना बिल्कुल बंद कर दिया और जब क़ुरआन की ये आयतें अवतरित हुईं, तो जिन लोगों के पास जो कुछ शराब थी, उसे मदीना की गलियों में बहा दी ।

इस्लाम की सद्क्रान्तियों में से एक है शराब और मादक पदार्थों के सेवन से मानवता को निजात दिलाना । अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के समय में अरब समाज इतना पतित था कि जीवन में भोग-विलास की जो भी सामग्री प्राप्त हो सकती थी उससे आनन्द लेना और आज़ादी के साथ शराब पीना लोगों की दिनचर्या में शामिल हो गयी थी । लेकिन उन पर इस्लामी शिक्षाओं का इतना ज़बरदस्त प्रभाव पड़ा कि शराब पीना बिल्कुल बंद कर दिया और जब क़ुरआन की ये आयतें अवतरित हुईं, तो जिन लोगों के पास जो कुछ शराब थी, उसे मदीना की गलियों में बहा दी ।

"ऐ ईमान लाने वालो ! यह शराब, जुआ और ये थान एवं पांसे शैतान के गंदे कामों में से है । अत: इनसे बचो ताकि तुम सफल हो सको । शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुए के द्वारा तुम्हारे बीच वैमनस्य व द्वेष पैदा कर दे और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज़ से रोक दे । फिर क्या तुम बाज़ आ जाओगे ? अल्लाह का आदेश मानो और रसूल का आदेश मानो और (इन चीज़ों से) बचते रहो । यदि तुमने (हुक्म मानने से) मुंह मोड़ा, तो जान लो कि हमारे रसूल पर केवल स्पष्ट रूप से (संदेश) पहुंचा देने की ही ज़िम्मेदारी है ।" (क़ुरआन, 5:90-92)

क़ुरआन की इन आयतों में शराब के लिए "ख़म्र" शब्द प्रयुक्त हुआ है, जिसकी व्याख्या हज़रत उमर (रज़ि॰) ने इन शब्दों में की है, "ख़म्र उस चीज़ को कहते हैं जो बुद्धि पर परदा डाल दे ।" शराब मन-मस्तिष्क को सर्वाधिक प्रभावित करती है और बुद्धि को नष्ट कर डालती है । डॉ॰ ई॰ मैक्डोवेल कासग्रेव (एम॰डी॰, एफ॰आर॰सी॰पी॰) के अनुसार, "अल्कोहल मस्तिष्क को नष्ट कर देती है ।"

शराब ज़हर है

शराब एक ज़हरीला पदार्थ है । भोजन में यह गुण होना चाहिए कि वह शरीर का पोषण करे, नसों को बढ़ाये और शक्ति पैदा करे, लेकिन ज़हर में ये गुण नहीं होते । ज़हर को परिभाषित करते हुए डॉ॰ लेथवे लिखते हैं, "जो पदार्थ जीवित शरीर की नसों में चेतन शक्ति को नष्ट करता है अथवा जीवन का ह्रास करता है वह ज़हर है ।"

शराब वह ज़हरीला पदार्थ है, जो आदमी को इतना

अपराध-प्रेरक है शराब

शराब गुर्दों और लीवर को भी ख़राब कर डालती है । शराब गुर्दों का आकार बढ़ा देती है, उसकी क्रिया मद्धिम कर देती है । शराबी व्यक्ति के गुर्दे प्राय: झुरीदार, खुरदरे और पीले रंग के हो जाते हैं । तात्पर्य यह कि शराब शरीर के प्रत्येक अंग पर अपना कुप्रभाव डालती है । अमेरिका के डॉ॰ हार्वी वेले कहते हैं, ''औषध तत्व सार के पारंगत सभी विद्वान जिन्होंने शराब के प्रभाव का अन्वेंषण किया है, एकमत से सहमत हैं कि शराब पौष्टिक पदार्थ नहीं है । यह एक निरा ज़हरीला पदार्थ है, इसलिए व्हिस्की और ब्रांडी दोनों ही औषधि की श्रेणी में से अलग कर दी गयी है ।''

मदहोश कर देती है कि वह होशोहवास खो बैठता है । उसकी बुद्धि पर परदा पड़ जाता है । शराब मस्तिष्क में उत्तेजना और व्याकुलता उत्पन्न करती है, मस्तिष्क के विकास को रोकती है, ज्ञान तंतुओं को समेटती है ।

डॉ॰ एस॰के॰ वर्मा लिखते हैं, ''मद्यपान (शराबनोशी) से सबसे पहले प्रभावित होता है मस्तिष्क का उच्चतम कार्य । मदिरा सेवन से निर्णय की क्षमता घट जाती अथवा समाप्त हो जाती है, किन्तु भावनाएं फिर भी शोख रहती हैं । प्रकारान्तर में आवाज़ बदलती है, जुबान लड़खड़ाती है तथा मांसपेशियों का सकल संचालन उलझता है, जिससे व्यक्ति सीधा चल पाने में अक्षम हो जाता है । भले-बुरे की समझ न रह जाने से मदिरा के कामोद्दीपक गुण को समझा जा सकता है । इससे काम शक्ति ही नहीं कामेच्छा भी घट जाती है ।'' (दैनिक जागरण, 25 जून 97)

शराब का ज़हरीलापन इन्सान की ज़िन्दगी ख़त्म कर डालता है । एक बार मैरांडा पहाड़ियों की एक खान में चार आदमी और एक लड़का क़ैद करके बन्द कर दिये गये । उन्हें खाने को कुछ नहीं दिया गया । उसमें पानी का एक स्रोत बहता था । उनमें से एक आदमी के पास चोरी से शराब की एक बोतल छिपी रह गयी थी । दस दिन बाद जब उन्हें छोड़ देने के लिए निकाला गया, तो पता चला कि उस व्यक्ति ने पानी को छुआ भी नहीं, शराब ही पी, वह आठवें दिन ही मर चुका था । बाक़ी सबने पानी पिया और वे जीवित निकले । मेडिकल साइंस की दृष्टि से इसकी वजह यह थी कि शरीर में पानी की आपूर्ति होती रही । अत: जैविक तत्व तेज़ी से नहीं नष्ट हो सके । शरीर की हड्डी में 22 प्रतिशत, नसों में 76 प्रतिशत, रक्त में 70 प्रतिशत, अंतड़ियों के रस में 87 प्रतिशत पानी का अंश रहता है । शराब नसों और पुट्ठों की छोटी कोशिकाओं को नष्ट करके उनका बढ़ना रोक देती है । सर विक्टर होसल (एफ॰आर॰एस॰) ने सच कहा है, ''अल्कोहल (शराब) डॉक्टरी के लिए भी योग्य नहीं है । भोजन भी नहीं है ।''

एक प्रयोग

समाज में कुछ शराब समर्थक ऐसे मिल जाएंगे, जो कहते हैं कि यह नशीली तो है, लेकिन ज़हरीली नहीं है । उनकी यह बात बिल्कुल झूठी है । शराब का ज़हरीलापन वैज्ञानिक प्रयोग से स्पष्ट हो जाता है । यह प्रयोग आप खुद कर सकते हैं ।

चार परखनलियां लीजिए । सब में बराबर मात्रा में कच्चे अंडे की सफ़ेदी डालिए । फिर एक परखनली में Carbolic Acid, दूसरी में Nitric Acid Carrosive Sublimate Alchohal सबको हिला-हिलाकर थोड़ी देर के लिए रख दें । आप देखेंगे कि सबमें अंडे की सफ़ेदी एक तरह से जम गयी है । ये चारों रासायनिक पदार्थ अलग-अलग गुण वाले हैं, लेकिन सबका रासायनिक प्रभाव एक है । इससे यह सिद्ध हुआ कि अल्कोहल भी शेष तीनों ज़हरों जैसा गुण रखता

है । पशु-पक्षियों और पौधों पर अल्कोहल के जो प्रयोग किये गये हैं, उनमें यह प्रमाणित हुआ है कि अल्कोहल घातक ज़हर है ।

अमेरिका के डॉ॰ सर बी॰डब्ल्यू॰ रिचर्डसन ने एक बार मड्सा मछली पर अल्कोहल का परीक्षण किया । क्यू गार्डन्स स्थित विक्टोरिया रेजिया नामक तालाब में मड्सा मछली को पालने के लिए 80 डिग्री फारेनहाइट पानी का तापमान रखा जाता है ।

इस तापमान वाले पानी के दो बर्तन लिए गये । दोनों में एक हज़ार ग्रेन तालाब का पानी भरा गया । एक बर्तन में एक ग्रेन (0.0648 ग्राम) अल्कोहल डालकर अच्छी तरह हिला-मिला दी गयी । फिर उसमें एक-एक मड्सा मछली डाली गयी। अल्कोहल का तत्काल प्रभाव देखने में आया। दो मिनट के भीतर ही मछली की हरकतें जो एक मिनट में 74 गिनी गयी, बन्द हो गयी । और वह नीचे बैठती गयी । वह बहुत अधिक सिकुड़ गयी और पांच मिनट के बाद वह बिल्कुल पेंदी में बैठ गयी एवं जड़वत हो गयी । उसे तुरन्त निकालकर एक दूसरे बर्तन में जिसमें ख़ाली टैंक का पानी भरा था, डाला गया और वह 24 घंटे तक उसी में पड़ी रहने दी गयी, फिर भी वह अच्छी नहीं हुई । इससे यह मालूम हुआ कि 1000वें पानी में अल्कोहल का एकवां भाग भी जीवन के लिए कितना घातक और ख़तरनाक है । डॉ॰ रिचर्डसन कहते हैं कि–"यह प्रयोग मैंने अनेक प्रकार से करके देखा, मनुष्यों पर भी करके देखा, प्रत्येक अवस्था में अल्कोहल का ज़हरीला प्रभाव सामने आया ।"

'ज़हर' के कुप्रभाव

जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है कि शराब मन-मस्तिष्क को चौपट कर देती है । शराब नसों को जीर्ण-शीर्ण बनाकर शरीर को पिंजर में तब्दील कर देती है ।

शराब के रसिया कुछ डॉक्टर यह कहतें फिरते हैं कि शराब का हृदय पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता । यह बात सरासर ग़लत है । शराब शरीर में ऑक्सीजन के प्रसार को रोकती है, अतएव चर्बी बढ़ने लगती है । यद्यपि शराब का हृदय वाहनियों से सीधा संबंध नहीं होता, लेकिन चर्बी की वृद्धि और मन-मस्तिष्क के प्रभाव होने का सीधा प्रभाव हृदय पर पड़ता है । यह अभिमत सही नहीं लगता कि कोलेस्ट्राल-एच॰डी॰एल॰ यानी उच्च घनत्व की लाइप्रोटींस संचार तंत्र में शराब कोलेस्ट्राल के हानिकारक तत्वों को दूर करने में मदद करता है । यह समाज के दुश्मन डॉक्टरों की फैलायी हुई अफ़वाह है । डॉक्टर पारकेस और डॉक्टर वूलोविज ने सबसे पहले हृदय पर शराब के क्या कुप्रभाव पड़ते हैं, इसका परीक्षण किया । उन्होंने अल्कोहल और पानी की अलग-अलग ख़ुराक पर एक स्वस्थ व्यक्ति को रखा । अल्कोहल के इस्तेमाल से हृदय की गति बहुत बढ़ गयी । सामान्य अवस्था में स्वस्थ व्यक्ति का हृदय चौबीस घंटे में एक लाख बार धड़कता है ।

हृदय में दो कोनेरिया (प्रकोष्ठ) होती हैं, जिनमें 6 औंस रक्त का प्रवाह रहता है । यह रक्त इतनी तेज़ी से आता-जाता है कि अगर खुली हवा में यह छूटे तो 5 अथवा 6 फुट की दूरी पर जाकर पड़े ।

हृदय को यह श्रम 116 टन बोझ एक फुट ऊपर उठाने के समान करना पड़ता है । परीक्षण से ज्ञात हुआ कि एक औंस अल्कोहल से हृदय की धड़कन 4300 बढ़ जाती है, दो औंस से 8600 और तीन औंस से 12900 । इसका तात्पर्य यह हुआ कि शराब हृदय के लिए इतना नुक़सानदेह है कि उसका कार्य बढ़ जाता है । उसकी शक्ति निरर्थक व्यय हो जाती है । गति के बढ़ जाने से रक्त के प्रवाह में कमी आ जाती है । इस प्रकार हृदय की संचित ऊर्जा नष्ट होने लगती है । शराबियों के हृदय में चर्बी की मात्रा बढ़ जाती है, हृदय सिकुड़ कर मृतप्राय हो जाता है और रक्त का अभाव होते ही हृदय काम करना बंद कर देता है । दरअस्ल रक्त कोशिकाओं में और भी अत्यन्त सूक्ष्म कोशिकाएं होती हैं, जो ऑक्सीजन को खींचती हैं । अल्कोहल इन कोशिकाओं को सिकोड़ देती है । फिर वे निष्क्रिय हो जाती हैं और ऑक्सीजन ग्रहण करने में असमर्थ हो जाती हैं । ऑक्सीकरण की प्रक्रिया अवरुद्ध हो जाने से रक्त में दूषित पदार्थ एकत्र होते चले जाते हैं और शरीर विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो जाता है । डॉ॰ फ्रेंक चेसायर ने मेंढ़कों पर अल्कोहल का परीक्षण करके देखा, तो मेंढ़कों के हृदय, पाचन अंगों, टांग, सिर सब प्रभावित हुए । इन सब अंगों की क्रियाएं बाधित हो गयीं ।

पाचन-क्रिया भी प्रभावित

शराब पाचन शक्ति को भी नष्ट कर डालती है । शराबी

व्यक्ति के पेट में जो पाचक-रस बनता है, उसमें पेप्सिन (Pepsin) बहुत कम होती है । नयी पेप्सिन के निर्माण में शराब रोड़ा अटकाती है । अत: पाचक-रस में भोजन पचाने वाले तत्वों का अभाव हो जाता है । जेनेवा यूनीवर्सिटी के प्रोफ़ेसर रह चुके डॉ॰ एल॰ रेविलियड और डॉ॰ पालबिनेट ने निष्कर्ष निकाला है कि शराबी का पेट अन्दर की ओर सिकुड़कर मोज़े की शक्ल का हो जाता है । उसमें चर्बी बढ़ जाती है । डॉ॰ बीयूमेंट का यह कहना बिल्कुल सही है कि "शराबी लोगों को पेट की कोई न कोई बीमारी मौजूद रहनी अवश्यंभावी है ।"

शराब गुर्दों और लीवर को भी ख़राब कर डालती है । शराब गुर्दों का आकार बढ़ा देती है, उसकी क्रिया मद्धिम कर देती है । शराबी व्यक्ति के गुर्दे प्राय: झुरीदार, खुरदरे और पीले रंग के हो जाते हैं । तात्पर्य यह कि शराब शरीर के प्रत्येक अंग पर अपना कुप्रभाव डालती है । अमेरिका के डॉ॰ हार्वी वेले कहते हैं, "औषध तत्व सार के पारंगत सभी विद्वान जिन्होंने शराब के प्रभाव का अन्वेंषण किया है, एकमत से सहमत हैं कि शराब पौष्टिक पदार्थ नहीं है । यह एक निरा ज़हरीला पदार्थ है, इसलिए व्हिस्की और ब्रांडी दोनों ही औषधि की श्रेणी में से अलग कर दी गयी है ।"

मद्य-पान करने वाले का मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है । 'ऐसा प्राय: होता है कि नशे में आदमी अपनी स्त्री और बहनों में तथा पिता और मित्रों में भेद नहीं रख पाता और अत्यंत अशिष्ट व्यवहार कर बैठता है ।'

('अनंत आनंद', आई॰जे॰ सिंह, पृष्ठ 553)

'अमेरिका में हुए एक ताज़ा शोध के अनुसार गर्भावस्था के दौरान शराब-सेवन से शिशु के दिमाग़ की कोशिकाओं को नुक़सान पहुंचता है । इससे उसके मानसिक व शारीरिक विकास दोनों में ही अवरोध पैदा होता है ।'

('लोकतेज', 10 फ़रवरी 2012)

लोगों का ज़हर-प्रेम

अभी कुछ दिनों पूर्व एक अंग्रेज़ी दैनिक में शराब के इस्तेमाल पर एक सर्वेक्षणात्मक रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी, जिसमें बताया गया कि भारतीय समाज के विशेषकर अभिजात्य वर्ग के युवक और युवतियां शराब के प्रति तेज़ी से आकर्षित हो रहे हैं । यह वर्ग फ़ैशन के तौर पर भी शराब का इस्तेमाल करता है । कहने का मतलब यह कि इस ज़हरीले पदार्थ का इस्तेमाल पढ़े-लिखे मूर्ख तो पहले से करते रहे हैं, यह दुर्व्यसन अपनी पीढ़ी की ओर स्थानांतरित कर रहे हैं । आश्चर्य और चिन्ता का विषय है लोगों की यह बुद्धि-भ्रष्टता ।

हमारे देश में एक ओर मद्य-निषेध विभाग शराब से बचने के लिए लोगों को नसीहतें करता है, दूसरी ओर आबकारी विभाग शराब की ख़ुद की दुकानें खुलवाता और इसकी बिक्री के लिए लाइसेंस प्रदान करता है । इसका नतीजा यह है कि शराब दूर-दराज़ गांवों तक पहुंच गयी है और उन लोगों का जीवन तबाह कर रही है जो अभी तक शराब की पहुंच से बाहर थे । यह भी कम आश्चर्य और चिन्ता का विषय नहीं है ।

गांधी जी ने कहा था, 'बैरिस्टरों को भी शराब पीकर नालियों में लोटते हुए पाया गया है । उच्च वर्गीय होने के कारण पुलिस उनको बचा लेता है, किन्तु इसी अपराध के लिए ग़रीब लोग दंडित किये जाते हैं ।'

यह बात भी नहीं है कि लोग शराब के नुक़सानों से पूर्णत: अपरिचित हों, लेकिन यह अवश्य है कि उन्हें इसके हर पहलू की जानकारी नहीं है । शराब पीने वाले लोगों को इतना अवश्य मालूम होता है कि वह अपनी लत को शांत करने के लिए जिस चीज़ का सेवन करते हैं, वह नुक़सानदेह है । हमारे देश में शराब से होने वाली मौतों की संख्या बहुत ज़्यादा है । अख़बार, पत्रिकाएं, आकाशवाणी और टी॰वी॰ आदि इसके गवाह हैं, लेकिन ये इसके ख़िलाफ़ जनचेतना जगाने में असफल हैं, बल्कि यह बात ज़्यादा सही है कि इसके लिए मीडिया कोई गंभीर प्रयास ही नहीं करती उल्टे टी॰वी॰, फिल्मों और कुछ पत्र-पत्रिकाओं में शराब के विज्ञापन भी प्रसारित-प्रकाशित होते रहते हैं । ऐसे लेख-आलेख आदि भी छपते रहते हैं जो शराब पीने के लिए जनता को उकसाते रहते हैं । मतलब यह कि संबंधित जन-माध्यम का उपकरण शराब-प्रबोधी उपकरण बन जाता है । इन हरकतों से शराबबंदी असंभव-सी लगती है । यह कुतर्क भी सामने आता है कि सर्दी से बचने के लिए मद्य-पान ज़रूरी है । जी॰ई॰जी॰ कैटलिन का कहना है, 'जहां सर्दी से बचना आवश्यक हो जाता है, उन केसों में शराब का सेवन व्यर्थ

ही नहीं, ख़तरनाक भी है ।' धार्मिक ग्रंथों में शराबबंदी का आदेश मौजूद होने के बावजूद स्वार्थी तत्वों के हथकंडों में लोग आते रहते हैं और शराबी बनते रहते हैं । आइए देखें, धर्म-ग्रंथों में शराब के विरुद्ध क्या-क्या आदेश मौजूद हैं ।

धार्मिक शिक्षाओं में शराब का निषेध

इस लेख के आरंभ में शराबबंदी पर इस्लाम के कुछ आदेश का उल्लेख किया गया है । अत: उनकी यहां पुनरावृत्ति नहीं की जाएगी ।

इस्लाम ने किसी प्रकार की शराब ही को हराम नहीं किया है, बल्कि इसके अन्तर्गत हर वह चीज़ आ जाती है जो नशावर हो और मनुष्य की सोचने-समझने की शक्ति को नष्ट करे या उसे क्षति पहुंचाए ।

इस अवसर पर इस बात को भी ध्यान में रखने की ज़रूरत है कि मनुष्य का जिस चीज़ के कारण समस्त प्राणियों में विशिष्ट और प्रतिष्ठित एवं केन्द्रीय स्थान दिया गया है, वह वास्तव में उसकी सोचने-समझने और सत्य-असत्य और भले-बुरे में अन्तर करने की क्षमता है । अब यह स्वाभाविक बात है कि जिस चीज़ या काम से मनुष्य की इस क्षमता और योग्यता को आघात पहुंचा हो या उसके पूर्ण रूप से क्रियाशील होने में बाधा उत्पन्न होती हो, उसको मनुष्य का निकृष्टतम शत्रु समझा जाए । शराब चूंकि मस्तिष्क को स्वाभाविक रूप से कार्य करने में रुकावट डालती है और उसकी तर्क-शक्ति को शिथिल करके मनुष्य को मानवता से ही वंचित कर देती है, इसलिए उसे मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु घोषित करना बिल्कुल उचित ही है ।

कुरआन मजीद में शराब के विषय में जो कुछ कहा गया है उसका स्पष्टीकरण अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के बहुत से कथनों से भी होता है । आपने कहा है–

'प्रत्येक मादक चीज़ 'ख़म्र' है और प्रत्येक मादक चीज़ हराम है ।'

'वह हर पेय जो नशा पैदा करे, हराम है और मैं हर मादक चीज़ से वर्जित करता हूं ।'

शराब की हानि और ख़राबी के सिलसिले में इस्लाम के दृष्टिकोण का अनुमान इससे भी किया जा सकता है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा–

'अल्लाह ने लानत की है शराब पर, उसके पीने वाले पर, पिलाने वाले पर, बेचने वाले पर, उसको ख़रीदने वाले पर और उसे निचोड़ने वाले पर और जिसके लिए वह निचोड़ी जाए उस पर, उसे उठाकर ले जाने वाले पर और उस पर भी जिसके पास वह ले जायी जाए ।'

शराब के सिलसिले में इस्लाम की सख़्ती का यह हाल है कि एक व्यक्ति ने नबी (सल्ल०) से पूछा कि 'क्या दवा के रूप में उसे प्रयोग में लाने की इजाज़त है ? तो आपने कहा, 'शराब दवा नहीं बल्कि बीमारी है ।'

एक सहाबी जो हिमियर के रहने वाले थे, कहते हैं कि मैंने नबी (सल्ल०) से निवेदन किया कि 'हम एक ऐसे क्षेत्र के रहने वाले हैं जो अत्यन्त ठंडा है और हमें मेहनत भी बहुत करनी पड़ती है । हम लोग एक प्रकार की शराब बनाते हैं और उसे पीकर थकावट और ठंडक का मुक़ाबला करते हैं ।' आपने पूछा, जो चीज़ तुम पीते हो वह नशा करती है ?' मैंने कहा हां, आपने कहा, 'तो फिर उससे परहेज़ करो ।' मैंने निवेदन किया, 'किन्तु हमारे इलाक़े के लोग नहीं मानेंगे ।' तो आपने कहा, 'यदि वे न मानें तो उनसे युद्ध करो ।'

शराब के सिलसिले में इस्लाम का एक नियम यह भी है कि नशीली चीज़ को कम से कम मात्रा में भी इस्तेमाल करने की इजाज़त नहीं है । और यह मानव दुर्बलता की दृष्टि से एक बुद्धिसंगत बात है, क्योंकि शराब के विषय में जहां यह बात सत्य है कि मुंह को लग जाए तो बड़ी मुश्किल से छूटती है, वहीं यह बात भी सत्य है कि इसमें किसी सीमा का निर्धारण बहुत मुश्किल है, क्योंकि सीमा का निर्धारण बुद्धि ही करेगी और वह शराब के प्रभाव से शिथिल हो जाती है ।

अल्लाह के नबी (सल्ल०) कहते हैं–

'जिस चीज़ की अधिक मात्रा नशा पैदा करे, उसकी थोड़ी मात्रा भी हराम है ।'

बाद के काल में भी मुस्लिम शासकों ने शराब और मादक पदार्थों से समाज को पाक रखने के लिए आदेश और घोषणाएं जारी कीं । इसका व्यावहारिक रूप भी देखने को मिला । भारत में बादशाह जहांगीर ने शराबनोशी के ख़िलाफ़

राजाज्ञा जारी की । अलाउद्दीन ख़िलजी के शासनकाल में तो शराबियों को शिक्षाप्रद सज़ाएं दी गयीं, जिसके फलस्वरूप लोगों की यह लत जाती रही । अकबर ने भी इसके विरुद्ध घोषणाएं जारी कीं । औरंगज़ेब के शासनकाल में तो दिल्ली में शराब की एक भी दुकान न थी । बर्नियर (फ्रांसीसी डॉक्टर) भारत आया था और औरंगज़ेब के दरबार में कई दिनों तक ठहरा रहा । वह लिखता है कि "शराब जो हमारे यहां भोजन का प्रधान अंग है, दिल्ली की किसी भी दुकान में नहीं मिलती ।"

हिन्दू धर्म की शिक्षाएं

इस्लाम में शराब और मादक पदार्थों के इस्तेमाल के ख़िलाफ़ जिस प्रकार स्पष्ट और दो टूक अंदाज़ में शिक्षाएं मिलती हैं, अन्य धर्मों में नहीं मिलतीं । इस वजह से भी पूर्ण शराबबंदी के मार्ग में अवरोध उत्पन्न होता है और मादक पदार्थों का कारोबार फलता-फूलता रहता है ।

हिन्दू धर्म के बहुत से ग्रंथों में सोम और सुरा का उल्लेख मिलता है । डॉ॰ पी॰वी॰ काणे अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "धर्मशास्त्र का इतिहास (प्रथम भाग)" में लिखते हैं कि सोम मदमस्त करनेवाला पेय पदार्थ था और इसका प्रयोग केवल देवगण और पुरोहित लोग कर सकते थे (पृ॰ 428)।" इस पुस्तक में "मद्यपान" शीर्षक के अन्तर्गत डॉ॰ काणे लिखते हैं, "सुरा नामक मदिरा चावल के आटे से बनती थी (पृ॰ 403)।" लेकिन सुरा का व्यापार ब्राह्मण के लिए वर्जित है (मनुस्मृति 10-89), याज्ञवल्क्य स्मृति (3-27)। वैदिक साहित्य के अनुसार सौत्रामणी यज्ञ में ब्राह्मण को बुलाया जाता था । वह सुरा से भरे पात्र के निचले भाग वाली सुरा पीता था ।

कहते हैं, बाद में ब्राह्मणों ने सुरा पीनी छोड़ दी, लेकिन यह दूसरी जाति के लिए वैध ठहरा दी गयी । काठक संहिता में है, "अत: प्रौढ़, युवक, वधुएं और श्वसुर सुरा पीते हैं, साथ-साथ प्रलाप करते हैं, मूर्खता सचमुच अपराध है, अत: ब्राह्मण यह सोचकर कि यदि मैं पिऊंगा तो अपराध करूंगा, सुरा नहीं पीता, अत: यह क्षत्रिय के लिए है । ब्राह्मण से कहना चाहिए कि यदि क्षत्रिय सुरा पिये तो उसकी हानि नहीं होगी (12-12)।" ऐतरेय ब्राह्मण (37-4)में लिखा है कि अभिषेक के समय पुरोहित राजा के हाथ में सुरापात्र रखता था ।

मनुस्मृति (11-93,94) के अनुसार, सुरा तीन प्रकार की होती है : गुड़वाली, आटेवाली और महुए के फूलों वाली (गौड़ी, पैष्टी, माध्वी)--इनमें किसी को भी ब्राह्मण न पिये । ब्राह्मणों के लिए शराब का स्पर्श ही आत्महत्या के समान है । मनुस्मृति के इन श्लोकों और गौतम स्मृति (2-25) में ब्राह्मणों के लिए सभी प्रकार की सुरा वर्जित मानी गयी है, किन्तु क्षत्रियों और वैश्यों के लिए केवल पैष्टी वर्जित है। विष्णुधर्म सूत्र (22-83,84,25) में वर्णित है कि ब्राह्मणों के लिए दस प्रकार की शराबें वर्जित हैं--(1) साधूक (महुआ वाली) (2) ऐक्षव (ईखवाली) (3) टांक (4) कौल (5) खार्जूर (खजूर वाली) (6) पानस (कटहल वाली) (7) अंगूरी (8) माध्वी (9) मैरेय, और (10)नारिकेलज । डॉ॰ काणे लिखते हैं कि "किन्तु ये दसों क्षत्रियों एवं वैश्यों के लिए वर्जित नहीं है (पृ॰ 430)।" पानस नामक शराब बनाने का तरीक़ा मत्स्युक तंत्र नामक पुस्तक में इस प्रकार बताया गया है--कच्चे माल पानस (कटहल) को एक बर्तन में रखकर रोज़ाना कच्चे दूध की धार उस पर डाला जाए, उसमें थोड़ा कच्चा मांस बारीक करके प्रति तीसरे दिन मिलाया जाए, फिर भांग़ और खाने का चूना बुरक कर उसे सड़ाया जाए । मालूम हुआ कि शराब के निर्माण में मांस भी प्रयुक्त होता था । शराब कुछ देवी-देवताओं के अर्पण-तर्पण के भी काम आती है ।

एक दूसरा पक्ष

उपर्युक्त विवरण से यह बात उभर कर सामने आयी कि शराब को एक विशिष्ट जाति को छोड़कर शेष के लिए विहित ठहरा दिया गया है । यहां पर यह स्पष्ट कर देना ज़रूरी है कि हिन्दू धर्म ग्रंथों में शराब से परहेज़ करने की भी शिक्षाएं विद्यमान हैं । अब यहां इनका उल्लेख किया जाएगा--

ऋग्वेद (7-86-6) के अनुसार, वसिष्ठ ने वरुण से प्रार्थना भरे शब्दों में कहा है कि "मनुष्य स्वयं अपनी वृत्ति अथवा शक्ति से पाप नहीं करता, प्रत्युत भाग्य, सुरा, क्रोध , जुआ और असावधानी के कारण वह ऐसा करता है ।"

शतपथ ब्राह्मण (5-5-4-28) में सोम को सत्य, समृद्धि और प्रकाश एवं सुरा को असत्य क्लेश और अंधकार

कहा है । सुरा अथवा मद्य का सेवन एक महापातक कहा गया है (वसिष्ठ धर्मसूत्र 1-20, विष्णु धर्मसूत्र 15-1, आपस्तम्ब धर्मसूत्र 1-7-21-8, याज्ञवल्क्य 3-227)। गौतम (2-25) आपस्तम्ब धर्मसूत्र (1-5-17-21) और मनु (11-94) ने एक स्वर से ब्राह्मणों के लिए सभी अवस्थाओं से नशीली वस्तुओं को वर्जित ठहराया है । मनु (9-80) और याज्ञवल्क्य (1-73) के अनुसार ''मद्यपान करने वाली पत्नी त्याज्य है ।'' यदि ब्राह्मण पत्नी सुरा-पान करती है तो वह अपने पति के लोक को नहीं प्राप्त कर सकती, वह इसी लोक में जोंक, सीपी, घोंघा बनकर जल में घूमती रहती है । याज्ञवल्क्य स्मृति में है, ''सुरापान करने वाली पत्नी अपने आगे के जन्मों में इस संसार में कुतिया, चील या सूअर होती है (3-256)।''

यह भी सच है कि हिन्दू समाज में कुछ ऐसे त्योहार प्रचलित हैं, जिसमें शराब और जुआ को धर्म-विहित ठहरा दिया जाता है ।

बौद्ध धर्म की शिक्षाएं

मेगस्थनीज और स्ट्रैबो ने लिखा है कि यज्ञों के कालों को छोड़कर भारतीय कभी भी सुरापान नहीं करते (ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के समय) महात्मा बुद्ध ने यज्ञों के समय होने वाले अनाचारों के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलंद की । उन्होंने मद्यपान (शराबनोशी) को बुरा और त्याज्य ठहराया ।

बौद्ध धार्मिक पुस्तकों में शराब के इस्तेमाल के ख़िलाफ़ जनता को सचेत करने वाली एक शिक्षाप्रद कथा का उल्लेख़ मिलता है । पाठकों की जानकारी के लिए उसे हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं–

एक दिन की बात कि प्रभु संसार के सब भ्रष्ट जीवों पर दृष्टिपात कर रहे थे । सर्वमित्र नामक एक राजा था । प्रभु ने देखा कि यह ख़ूब शराब पी रहा है । उसके साथ उसके मंत्री-गण ही नहीं उसकी प्रजा भी शराब की लत से ग्रस्त है । प्रभु ने सोचा, ''यह तो महा पापाचार हो रहा है । हाय ! हाय !! इन इन्सानों पर यह कैसा अभिशाप है । शराब पीने में तो मधुर है, परन्तु इसका परिणाम कैसा भयानक है । इन सबका बुद्धि-विवेक नष्ट हो गया है । ये अनाचार क्यों कर रहे हैं ? यदि यह राजा सुधर जाए तो शेष प्रजाजन भी सुधर जाएंगे ।''

ऐसा विचार कर प्रभु ने ब्राह्मण रूप धारण किया । एक सुराही में शराब भरकर अपने कंधे पर लटका ली । और सर्वमित्र के पास जा पहुंचे । राजा दरबारियों के साथ शराब पीने में मस्त था । प्रभु ने कहा कि मैं सुगंधित मधुर शराब लाया हूं । देखो ! कितनी प्रिय चीज़ है बताओ ! तुममें से कौन इसकी क़ीमत दे सकता है ?

राजा की उत्सुकता को देखते हुए प्रभु ने कहा, ''सुनो राजन इसमें न जल है, न मेद्यों की अमृत बूंदें हैं, न यह किसी पवित्र स्रोत की पुनीत धारा है, न इसमें सुगंधित पुष्पों का सार मधु है, न परदर्शी घृत (घी) है और न ही दूध है जो शरद-किरणों की मधुरिमा से युक्त हो । नहीं, नहीं, इस सुराही में पिशाचिनी शराब है । इस शराब के गुण सुनो ! जो इसको पियेगा उसकी सुध-बुध न रहेगी, वह नशे में चूर होकर भोजन के बदले विष्ठा (गंदगी) भी खा सकेगा । ऐसी यह शराब है, इसे ख़रीद लो, इतनी निकृष्ट यह सुराही बिक्री ही के लिए है ।

इस पदार्थ में तुम्हारा समस्त ज्ञान और विवेक नष्ट कर देने की शक्ति है, जिससे तुम अपनी विचारधारा पर अधिकार न रखकर एक जंगली जानवर की तरह व्यवहार कर सकोगे ।

तुम्हारे शत्रु तुम्हारी दशा पर हंसी उड़ाएंगे । तुम इसे पीकर ख़ूब नाच सकते हो, गा भी सकते हो । यह शराब अवश्य तुम्हारे ख़रीदने योग्य है । इसमें एक भी अच्छा गुण नहीं है । इसके पीने से तुम्हारी लाज-भावना जाती रहेगी । तुम नंगे भी रह सकते हो । लोगों का समुदाय यदि तुम पर थूके, तब भी तुम्हें बुरा प्रतीत न होगा । लोग तुम पर गोबर, कीचड़, कंकर-पत्थर उछालें तब भी तुम न जान सकोगे । ऐसी शराब को मैं तुम्हारे पास बेचने के लिए लाया हूं ।

जो स्त्री इसका सेवन करेगी, वह नशे में चूर होकर अपने माता-पिता को रस्सिधयों से बांधकर और कुबेर जैसे पति को ठुकराकर पतन के गढ़े में प्रसन्नता से जा गिरेगी । ऐसी यह शराब है ।

इसने अनेक सम्पन्न परिवारों को नष्ट किया है, सुन्दर स्वर्ण शरीर को पर जलाकर भस्म किया है, राजमहल और सम्राटों को धूल में मिलाकर पद दलित किया है, फिर भी इसकी प्यास नहीं बुझती ! ऐसी है प्रलयंकारी यह शराब !

इसे जुबान पर रखते ही मन मलित हो जाता है, जी ऐंठ जाता है । ख़ूब हंसो, ख़ूब बको, कुछ भी ज्ञान नहीं रहता । उसमें झूठ बोलने का साहस आ जाता है, वह सच को झूठ और झूठ को सच समझने लगता है । नशा करने वाली इस वस्तु (शराब) के स्पर्श-मात्र से ही पाप लगता है, बुद्धि मलिन होती, कष्ट और रोग बढ़ते हैं । यह समस्त अपराधों की जननी है, उज्जवल मन का भयानक अंधकार है, जिसकी तीक्ष्ण ज्वाला शीतल हृदय पर सदैव धधककर दहकती रहती है । जो इसके प्रभाव में होकर अपने माता-पिता, स्त्री, बहन और बच्चों का हंसते-हंसते क़त्ल कर सकता है, ऐसी यह शराब है । हे प्रजा के राजा ! यह पेय तुम्हारे प्रतापी कंठ से नीचे उतरने योग्य है, तुम इसे ख़रीदकर सेवन करो ।

इस शराब को ज़रा देखो तो ! इसका माणिक की भांति हल्का लाल रंग है...इसे पीकर इन्सान जानवर बन जाता है, यह नरक की खान है । प्रभु ने यह बखान करके चारों ओर देखा । सब स्तब्ध थे । अचानक राजा ने तेज़ी से उठकर अपने शराब के पात्रों-बर्तनों को दीवार से टकराकर चूर-चूर कर डाला । राजा यह कहकर प्रभु के चरणों में गिर पड़ा, "हाय ! पिशाचिनी, मायाविनी शराब, तू जा ! जा !! मुझे छोड़ !!!"

महात्मा बुद्ध ने अपने अनुयायियों को नसीहत करते हुए कहा था, "मनुष्यो! तुम सिंह (शेर) के सामने जाते भयभीत न होना-यह पराक्रम की परीक्षा है, तुम तलवार के नीचे सिर झुकाने से भयभीत न होना-यह बलिदान की कसौटी है, तुम पर्वत शिखर से पाताल में पड़ने से भयभीत न होना-वह तप की साधना है, तुम दहकती ज्वालाओं से विचलित न होना-यह स्वर्ण-परीक्षा है, पर सुरा देवी से सदैव भयभीत रहना, क्योंकि यह पाप और अनाचारों की जननी है ।"

अनेक बौद्ध राजाओं ने अपने शासनकाल में शराबबंदी की नीतियां अपनायीं । चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के काल में कौटिल्य ने शराब की दुकानों पर स्वादिष्ट भोजन रखवा दिये । जो व्यक्ति शराब पीने के लिए दुकान पर जाता, उसके सामने अच्छे भोजन पेश किये जाते । इनका मूल्य बहुत सस्ता होता था । भोजन में कुछ ऐसी औषधियां मिली होती थीं, जिनसे शराब की लत छूट जाती थी । इस सम्राट के काल में शराब पीने और पिलाने वाले दोनों दंडित किये जाते थे । सम्राट अशोक भी इस नीति पर चलता रहा ।

हमारे देश में इस समय शराब की 120 करोड़ लीटर वार्षिक क्षमता की 165 फैक्ट्रियां कार्यरत हैं । यहां महिला-दुर्व्यवहार और अपराध की अन्य घटनाओं में भारी वृद्धि होती जा रही है । एक अमेरिकी शोध के अनुसार 95 फ़ीसद हत्याओं, 24 फ़ीसद आत्महत्याओं के लिए शराब सेवन ज़िम्मेदार है, जबकि 25 से 30 फ़ीसद मानसिक विक्षिप्तता के शिकार हो जाते हैं । वास्तव में शराब-सेवन समाज के लिए कलंक है, अभिशाप है । हर व्यसन से जनता को दूर रखने के लिए व्यापक और प्रभावकारी क़दमों की आवश्यकता है ।

"ख़ुदा उस आदमी पर रहम फ़रमाएगा, जो ख़रीदने-बेचने और तक़ाज़ा करने में नर्मी और ख़ुशअख़्लाक़ी से काम लेता है।"
(हदीस)
Maharaja Processors
Burhanpur

दर्सगाह इस्लामी इटकी

रांची, झारखंड-835301

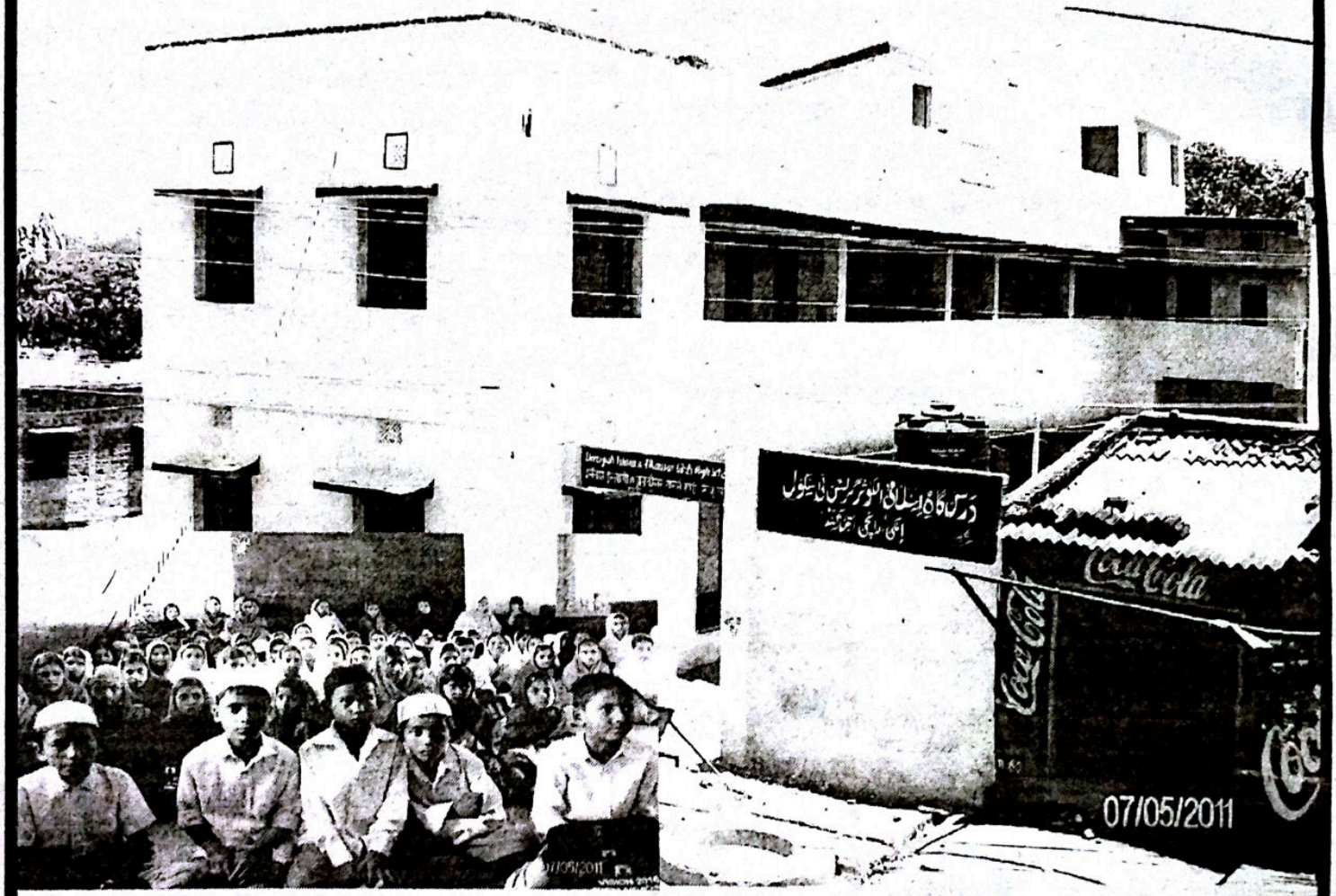

दीनी व दुनियावी उलूम का हसीन इम्तिज़ाज

Address

NAZIM

DARSGAH ISLAMI

Itki, Ranchi (Jharkhand), Pin No. 835301

मानवता के सच्चे शुभचिंतक हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

○ डॉ० मुहम्मद अहमद

इस्लाम के अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का आज पवित्र जन्मदिन (मीलाद) है । आपका जन्म सन 570 ईसवी में आज के ही दिन अरब के पवित्र शहर मक्का में हुआ था । आपका जीवन सबके लिए था । आप स्त्री-पुरुष, लड़के-लड़कियों, वृद्धजनों, कमज़ोरों, अनाथों, असहायों, मुहताजों, मज़दूरों यहां तक कि सबलों एवं अमीरों के बड़े उपकारक और हितैषी थे । शांति और सद्भाव के अग्रदूत थे । आपका पूरा जीवन 'सादा जीवन, उच्च विचार' वाला था । जो उपदेश देते, उसे अपने जीवन में पूरी तरह बरतते भी थे । पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के विषय में गांधी जी के विचार इस प्रकार हैं–

''इस्लाम अपने अति विशाल युग में भी अनुदार नहीं था, बल्कि सारा संसार उसकी प्रशंसा कर रहा था । उस समय, जबकि पश्चिमी दुनिया अंधकारमय थी, पूर्व क्षितिज का एक उज्ज्वल सितारा चमका, जिससे विकल संसार को प्रकाश और शान्ति प्राप्त हुई । इस्लाम झूठा मज़हब नहीं है । हिन्दुओं को भी इसका उसी तरह अध्ययन करना चाहिए, जिस तरह मैंने किया है । फिर वे भी मेरे ही समान इससे प्रेम करने लगेंगे । मैं पैग़म्बरे-इस्लाम की जीवनी का अध्ययन कर रहा था । जब मैंने किताब का दूसरा भाग भी ख़त्म कर लिया, तो मुझे दुख हुआ कि इस महान प्रतिभाशाली जीवन का अध्ययन करने के लिए अब मेरे पास कोई और किताब बाक़ी नहीं...अब मुझे पहले से भी ज़्यादा विश्वास हो गया है कि यह तलवार की शक्ति न थी, जिसने इस्लाम के लिए विश्व-क्षेत्र में विजय प्राप्त की, बल्कि यह इस्लाम के पैग़म्बर का अत्यंत सादा जीवन, आपकी नि:स्वार्थता, प्रतिज्ञा-पालन और निर्भयता थी । यह आपका अपने मित्रों और अनुयायियों से प्रेम करना और ईश्वर पर भरोसा रखना था । यह तलवार की शक्ति नहीं थी, बल्कि वे विशेषताएं और गुण थे, जिनसे सारी बाधाएं दूर हो गयीं और आप (सल्ल०) ने समस्त कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर ली । मुझसे किसी ने कहा था कि दक्षिण अफ़्रीक़ा में जो यूरोपियन आबाद हैं, इस्लाम के प्रचार से कांप रहे हैं, उसी इस्लाम से जिसने मोरक्को में रोशनी फैलायी और संसार वासियों को भाई-भाई बन जाने का सुखद-संवाद सुनाया, निस्संदेह दक्षिण अफ़्रीक़ा के बारे में यूरोपियन इस्लाम से नहीं डरते हैं, बल्कि वास्तव में वे इस बात से डरते है कि अगर अफ़्रीक़ा के आदिवासियों ने इस्लाम क़बूल कर लिया तो वे श्वेत जातियों से बराबरी का अधिकार मांगने लगेंगे । आप उनको डरने दीजिए । अगर भाई-भाई बनना पाप है, तो यह पाप होने दीजिए । अगर वे इस बात से परेशान हैं कि उनका नस्ली बड़प्पन, क़ायम न रह सकेगा तो उनका डरना उचित है, क्योंकि मैंने देखा है अगर एक जूलों ईसाई हो जाता है तो वह फिर भी सफ़ेद रंग के ईसाइयों के बराबर नहीं हो सकता, किन्तु जैसे ही वह इस्लाम ग्रहण करता हैं, बिल्कुल उसी समय वह उसी प्याले में पानी पीता है और उसी प्लेट में खाना खाता है, जिसमें कोई और मुसलमान पानी पीता और खाना खाता है, तो वास्तविक बात यह है जिससे यूरोपियन कांप रहे हैं ।'' ('जगत महर्षि', पृष्ठ 2)

हम यहां हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की कुछ ऐसी शिक्षाओं का उल्लेख करेंगे, जो आज बहुत प्रासंगिक है । पिछले कुछ वर्षों से इस्लाम को आतंकवाद से जोड़ने का अनुचित प्रयास किया जाता है, जबकि यह पूरी तरह से इसका विरोधी है । जीवहत्या, बलात्कार, अश्लीलता की ओर उन्मुखता, स्त्री-असुरक्षा और ऐसे ही कितने विकारों से व्यावहारिक रूप में समाज को पवित्र किया आप (सल्ल०) ने...पवित्र क़ुरआन की उद्घोषणा है कि किसी निर्दोष की हत्या पूरी मानवता की हत्या के सदृश्य है (5:32)। एक हदीस में है–हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से उल्लिखित है कि आपने कहा–बड़े गुनाहों में सबसे बड़ा गुनाह ईश्वर का सहभागी ठहराना है और जीवहत्या, माता-पिता की अवज्ञा एवं झूठ बोलना है ।'' एक हदीस में है–क़यामत के दिन बंदे का जिस चीज़ का हिसाब लिया जाएगा वह नमाज़ है और पहली चीज़ जिसका निर्णय लोगों के मध्य किया जाएगा, वे ख़ून के दावे हैं ।''

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि॰) से उल्लिखित है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने कहा कि ''ईमान वाला अपने धर्म की विस्तीर्णता में उस समय तक रहता है, जब तक वह कोई अवैध रक्तपात नहीं करता ।''

पवित्र क़ुरआन में है–''ऐ नबी, उनसे कहो कि आओ मैं तुम्हें बताऊं कि तुम्हारे रब ने तुम पर क्या-क्या पाबंदियां लगायी हैं–यह कि उसके साथ किसी को साझीदार न बनाओ, और माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो एवं अपनी संतान को निर्धनता के भय से क़त्ल न करो । हम तुमको भी रोज़ी देते हैं और उनको भी देंगे, और अश्लील बातों के निकट भी न जाओ चाहे वे खुली हुई हों या छिपी हुई'' (6:151)।

एक बार एक व्यक्ति आप (सल्ल॰) की सेवा में उपस्थित हुआ और उसने पूछा, सबसे बड़ा गुनाह कौन-सा है ? हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने जवाब दिया, ''यह कि तू किसी को ईश्वर के समकक्ष और प्रतिद्वंद्वी ठहराए, जबकि उसने तुझे पैदा किया'' उसने फिर पूछा, इसके बाद कौन-सा बड़ा गुनाह है ? आप (सल्ल॰) ने उत्तर दिया, ''यह कि तू अपने बच्चे की हत्या कर दे, इस विचार से कि वह तेरे खाने में साझीदार होगा ।'' उसने कहा, इसके बाद कौन-सा गुनाह है ? पैग़म्बर (सल्ल॰) ने जवाब दिया, ''यह कि तू अपने पड़ोसी की पत्नी से व्यभिचार करे ।'' आपकी शिक्षाओं के द्वारा अल्पसमय में ही अरब का कायाकल्प हो गया । हिंसक अरबों में सभ्य संस्कार विकसित हुए, उनमें दूसरों के प्राण-सम्मान एवं शांतिप्रियता का ऐसा गुण पैदा हो गया कि पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की भविष्यवाणी के अनुसार ऐसा ही हुआ कि महिलाएं कादसिया से सनआ तक अकेली सफ़र करती थी और कोई उनकी जान-माल, इज़्ज़त-आबरू पर हमला नहीं करता था, जबकि यही वह देश था, जहां पचीस वर्ष पूर्व बड़े-बड़े क़ाफ़िले भी निश्चिंत होकर नहीं गुज़र सकते थे !

निश्चय ही आज के मुसलमानों की स्थिति कई दृष्टियों से विचारणीय है । एक तो वे सही इस्लामी शिक्षाओं से अनभिज्ञ हैं, उन पर अमल का भी प्रश्न है । इसकी एक बड़ी वजह इस्लामी साहित्य के अधिकांश भाग का अरबी भाषा में होना है । इसलिए मेरा यह प्रयास रहा है कि हिंदी साहित्य में वे चीज़ें समाहित हो, जिनसे देश में शांति-सद्भाव का वातावरण न सिर्फ़ बने, बल्कि परवान चढ़े । इसी उद्देश्य से मैंने पवित्र क़ुरआन का अनुवाद किया । हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के जीवन-चरित के कुछ पक्षों को हिंदी में प्रस्तुत किया, जो ''हज़रत मुहम्मद-सबके लिए'' नाम से प्रकाशित है । मेरे फेसबुक मित्र भाई विक्रम सिंह जी का यह कथन नितांत उचित एवं सहमतियोग्य है कि ''सभी को सभी धर्मों के ग्रंथ पढ़ने चाहिए जिससे सांप्रदायिक सद्भाव और बढ़े ।'' इससे आगे की थोड़ी बात मैं अपने निकट मित्र एवं वरिष्ठ लेखक-कवि डॉ॰ ज्ञानचन्द्र जी के शब्दों में पेश करना चाहता हूं । ''आओ एक बेहतर विश्व बनाएं'' शीर्षक कविता में वे कहते हैं–

मेरे कुछ मित्र कुछ भी नहीं पढ़ते
काम-धंधा, आराम और आनंद यही
उनके जीवन की महत्तम प्रेरणा है,
पर फिर इसमें झंझट-झगड़ा कहां है
आग्रह और श्रेष्ठता का भाव तो
एक अहंकार और स्व-महत्वपूर्ण
विकृत मनोवैज्ञानिक वृत्ति है ।
यह तो किसी भी धर्म या धर्मग्रंथ से स्वीकृत
अनुमोदित नहीं है ।
परस्पर संवाद करो, वार्तालाप करो
पर अपनी बात मनवाने के लिए
शक्ति, बल, धूर्तता, लालच व चालाकी का प्रयोग
तो कोई अच्छा न मानेगा ।
आओ परस्पर वार्तालाप करें
एक नया भारत और एक नया विश्व बनाएं
आओ एक बेहतर विश्व बनाएं ।

काश, डॉक्टर साहब की यह सदेच्छा पूरी हो । मैं उनकी इस इच्छा-पूर्ति में कुछ सहयोग कर सकता हूं । मेरी हार्दिक इच्छा है की मैं अपने सभी मित्रों को अपनी पुस्तक ''हजरत मुहम्मद (सल्ल॰)-सबके लिए'' उपहार में दूं, लेकिन मेरी समस्या यह है कि मेरे पास आपके पते नहीं हैं । अत: आपसे निवेदन है कि अपना पोस्टल एड्रेस देने का कष्ट करें । चूंकि मैं इसे पंजीकृत पोस्ट द्वारा आपकी सेवा में भेजने का प्रयास करूंगा, इसलिए सेल/फ़ोन नंबर भी देने की कृपा करें । यहां डाक विभाग के सज्जन बिना सेल/फ़ोन नंबर के पंजी पोस्ट नहीं स्वीकार करते । आप लोग मेरे इस अनुरोध को स्वीकार कीजिये, उपहार स्वीकार कीजिये एवं अन्यथा न लीजिये ।

नर्स

■ सैयद अली
(कोलकाता)

उस मासूम-सी फूलों जैसी लड़की की एकाग्रता देखने योग्य थी । वह किताब में इस तरह डूबी हुई थी जैसे कोई सूफ़ी ध्यान मग्न हो । दर्जनों कारें, बसें, लारियां शोर मचाती उसके इधर-उधर से आ-जा रही थीं, अनगिनत लोगों के आने-जाने का सिलसिला भी जारी था और कितने ही लोग बसों के इंतिज़ार में लाइन लगाये खड़े थे, लेकिन इन सारे हंगामों से निरपेक्ष वह बड़ी एकाग्रता से अपनी किताब में डूबी थी । कभी-कभी वह अपने पास रखी हुई कॉपी उठाती और उसमें कुछ नोट करके फिर किताब पढ़ने लगती । मैं बस की प्रतीक्षा में खड़ा कुछ देर तक यह दृश्य देखता रहा । न जाने क्यों मेरे मन में विचार आया कि क्यों न चलकर इस लड़की से पूछूं कि तुम कौन हो और क्या पढ़ रही हो । मैं उसकी ओर बढ़ा और पास जाकर खड़ा हो गया लेकिन उस लड़की ने मेरी ओर देखा तक नहीं मानो वह मेरी उपस्थिति से पूर्णतः अनजान हो और अपने किसी विशेष मिशन में व्यस्त हो ।

धूल से पटे हुए फुटपाथ पर एक पुरानी-सी चटाई पर वह एक लैम्प फेस्ट के सहारे बैठकर पढ़ने में व्यस्त थी । शायद वह लैम्प फेस्ट ही उसके जीवन का प्रकाश और भविष्य का उत्साह था । उसके एक ओर कापी और क़लम रखी थी दूसरी ओर एक मैला-कुचैला-सा टैडी बियर । यह खिलौना उसका मित्र था । पढ़ते-पढ़ते अचानक वह थोड़ी देर के लिए उस टैडी बियर के साथ खेलने लगती । वह उससे बातें करती और ऐसा लगता जैसे वह उसे कोई पाठ पढ़ा रही हो । संभव है उसने किताब में जो पढ़ा है उसे याद रखने का यह तरीक़ा हो । थोड़ी देर के बाद वह फिर उसे एक ओर रखकर पढ़ने में व्यस्त हो जाती । फुटपाथ पर ही थोड़ी दूरी पर चाय की दुकान थी, जिसके चूल्हे से लगातार धुआं उठ रहा था । लोग खड़े होकर चाय पीते और ख़ाली कुल्हड़ों को बड़ी लापरवाही से इधर-उधर फेंक देते । उसी फूटपाथ पर दूसरी ओर कुछ मैले-कुचैले बर्तन, गिलास बाल्टी और प्लास्टिक में लिपटी हुई एक गठरी थी, जिसमें शायद लड़की के सोने का बिस्तर रहा होगा । मैं लड़की के ठीक सामने खड़ा हो गया । हालांकि मैं उसकी एकाग्रता भंग करना नहीं चाहता था, मगर उसके बारे में जानकारी लेने की इच्छा ने मुझे उसे सम्बोधित करने पर मजबूर किया ।

बेटी ! मैंने उसे सम्बोधित किया । उसने मेरी ओर ग़लत शब्द की तरह देखा और फिर अपनी किताब पढ़ने लगी । शायद वह किसी अजनबी से बात करके अपना समय बर्बाद करना नहीं चाहती थी । मैंने बहुत से स्कूली बच्चों को देखा था उनके स्वभाव में ही इस तरह एकाग्र होकर पढ़ना नहीं होता है । समय का सम्मान न करने वाले फुटपाथियों को भी देखता रहा था, लेकिन इस लड़की का चलन मेरी समझ से परे था ।

इस जगह को मौला अली बस स्टैंड कहा जाता है । यह कोलकाता का बड़ा व्यस्त इलाक़ा है । चारों ओर से ट्रांसपोर्टों की आवाजाही रहती है । इससे लगे फुटपाथ पर इस लड़की का रैन बसेरा था । मैंने फिर उससे पूछा बेटी तुम्हारा नाम क्या है ? उसने सर झुकाकर मासूमियत से जवाब दिया ''समीना''। मैंने फिर पूछा समीना बेटी ये तुम्हारे हाथ में कौन-सी किताब है ? वह बोली मेरे कोर्स की किताब है, हिस्ट्री, मेरी परीक्षा तो जल्दी ही शुरू होने वाली है, मैं उसी की तैयार में लगी हूं, कहीं फेल हो गयी तो मेरी पढ़ाई रुक जाएगी । मेरे मां-बाप के पास इतना पैसा नहीं कि फिर पढ़ सकूं । वह एक ही साथ सब कुछ बोल गयी बल्कि मेरे संभावित प्रश्नों के उत्तर भी दे दिये, क्योंकि वह बातचीत में समय नष्ट करना नहीं चाहती थी । मुझे भी इसका एहसास था कि उसकी पढ़ाई में मुझे रुकावट नहीं बनना चाहिए लेकिन कीचड़ के इस कमल से मुझे जीवन के रहस्य सीखने थे । मेरे मन में बहुत से सवाल थे । मैंने पूछा ही लिया बेटी ! तुम किस स्कूल में पढ़ती हो ? अंताली बालिका विद्या मंदिर में । यहां से जाने में दस मिनट का समय लगता है ।

तुम किस क्लास में पढ़ती हो ?

छठी में ।

तुम्हारी उम्र क्या है ?

दस साल ।

मुझसे पीछा छुड़ाने के लिए उसने फिर किताब पलटनी शुरू कर दी ।

अब मैंने उसके टैडी बियर की तारीफ़ शुरू कर दी । बड़ा सुन्दर है तुम्हारा यह गुड्डा । लगता है आज तुमने इसे नाश्ता नहीं कराया देखो कितना सुस्त हो रहा है । वह खिलखिला कर हंस पड़ी । उसकी हंसी में बड़ी मासूमियत थी । उसका मूड अच्छा देखकर मैंने पूछा बेटी ! तुम्हारे मां-बाप कहां हैं ? जवाब में वह अंकल...कहकर चुप हो गयी ।

मैंने महसूस किया कि वह बताने में झिझक रही है । मैंने बड़े प्यार से उसके सर पर हाथ फेरा और कहा मैं तुम्हारा अंकल हूं ना ! मुझसे क्या छिपाना, बोलो बेटी !

वह बोली मेरी मां एक घर में मामागीरी करती है । झाड़ू लगाना, बर्तन धोना, बच्चों को नहलाना, खिलाना, स्कूल पहुंचाना और मेरे पापा...।

वह फिर चुप हो गयी और उसकी आंखें भीग गयीं । मुझे अफ़सोस हुआ । शायद वे इस दुनिया में नहीं । शायद मैंने एक ग़लत सवाल पूछ लिया था ।

थोड़ी देर बाद वह रुंधी हुई आवाज़ में बोली । मेरे पापा दिन भर, रात गये तक हाथ रिक्शा खींचते हैं । बड़ी मुश्किल से कुछ पैसे कमाते हैं । किसी दिन तबियत ख़राब हो गयी तो वह भी नहीं । मां को चार सौ रुपये माहाना मिलते हैं । उससे 275 रुपये हमारे स्कूल की फ़ीस जाती है । किताब-कॉपी और दूसरे ख़र्चे बड़ी मुश्किल से पूरे होते हैं । इसलिए मैं जल्दी-जल्दी पढ़ रही हूं ताकि जल्दी कोई काम कर सकूं और मां-बाप की परेशानी दूर कर सकूं । छोटी-सी बच्ची की यह सोच आश्चर्यजनक थी । शिक्षा और जीवन के उद्देश्य का चिन्तन उसके एक ही वाक्य में सिमट आया था ।

समीना की दिनचर्या भी आम बच्चों से बिल्कुल अलग और योजनाबद्ध थी । उसने बताया वह सुबह 6 बजे उठ जाती है । 'घर' के काम-काज में मां का हाथ बटाती है । नाश्ते के बाद वह कॉपी-किताब लेकर बैठ जाती है उसकी मां काम पर चली जाती है । पापा रिक्शा लेकर निकल पड़ते हैं । फिर दस बजे वह स्कूल चली जाती है । वहां से साढ़े तीन बजे वापस आती है जो खाना मिलता है खा लेती है । फिर थोड़ी देर फुटपाथ की सहेलियों के साथ खेलती है । शाम हो जाती है तो किताब लेकर लैम्प पोस्ट के नीचे बैठ जाती है और दूधिया रौशनी में देर रात तक पढ़ती रहती है ।

शाम ढले उसकी मां आ जाती है । चूल्हा फूंकती है और रात का खाना तैयार करती है । रात गये थक कर चूर उसके पापा आते हैं, लेकिन बेटी को पढ़ता देखकर अपनी थकान भूल जाते हैं । बाप का थका हुआ शरीर देखकर उसकी आंखों में आंसू आ जाते हैं । वह जल्दी-जल्दी पढ़ने लगती है, जैसे आज ही पढ़-लिखकर वह कुछ बन जाना चाहती हो, ताकि मां-बाप को ज़्यादा से ज़्यादा आराम पहुंचा सके । फुटपाथ पर पलने वाली इस मासूम-सी बच्ची का इतना उच्च और पवित्र दर्शन चमत्कार से कम नहीं ।

मैंने उठते हुए आख़िरी सवाल किया–तुम पढ़-लिखकर क्या बनना चाहती हो बेटी ? उसने तुरन्त जवाब दिया : नर्स ।

नर्स ?

कितनी विचित्र इच्छा और जंचा-तुला फ़ैसला था इसका । मगर क्यों तुम नर्स बनना क्यों चाहती हो, डॉक्टर, टीचर आदि बनना क्यों नहीं ?

नर्स को दुख-दर्द का ज़्यादा एहसास होता है ।

उसका यह जवाब सुनकर मैं तड़प उठा । मैं बीमारों और अपाहिजों की देखभाल करना और दुखी लोगों के दुख-दर्द में काम आना चाहती हूं । मेरी शिक्षा और मेरे काम करने का मक़सद यही है ।

फुटपाथ पर रैन बसेरा करने वाली छोटी-सी बच्ची से जीवन का बेहतरीन पाठ पढ़कर मैं उठा । शिक्षा का इतना उच्च और पवित्र उद्देश्य और मानव सेवा की यह तड़प मेरे लिए जीवन का सबसे अच्छा पाठ था । मुझे लगा कि स्वार्थी और निरुद्देश्य समाज का ढांचा टूट रहा हो, सोच का कोण बदल रहा हो । मूल्य बदल रहे हैं और एक नये समाज और एक सकारात्मक चरित्र समीना के रूप में उभर रहा है ।

For Information On
City Shops, Roads, Restaurants, Magazine, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com

टूटे वादों का गणतंत्र

● राजीव धवन
(एडवोकेट, सुप्रीम कोर्ट)

26 जनवरी भारत का गणतंत्र के रूप में जन्मदिन है । यह हमारा संवैधानिक नववर्ष है । टूटे वादों की पुनरावृत्ति को भूल जाइए । क्या हमने विरोधाभासों के जीवन को हल कर लिया है जिसकी भविष्यवाणी अम्बेडकर ने आरंभ में ही की थी ? उनके शब्दों को याद कीजिए: ''26 जनवरी को हम विरोधाभास के जीवन में प्रवेश करने जा रहे हैं । राजनीति में हमारे पास समानता होगी और सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में असमानता...हमें इस विरोधाभास को आरंभ में ही समाप्त करना होगा अन्यथा जो लोग इस असमानता से प्रभावित होंगे वे राजनीतिक लोकतंत्र के ढांचे को फूंक देंगे जिसे इस असेम्बली ने इतनी मेहनत से बनाया है ।''

वस्तुस्थिति

1951 में भारत की जनसंख्या 36,10,88,090 थी 2011 में यह 1,21,01,93,422 हो गयी जबकि इस अवधि में प्रत्येक विवाहित महिला द्वारा शिशु जन्म संख्या 6 से घटकर 2.6 रह गयी । उसमें भी जीवित रहने वाले शिशु की संख्या 2.1 ही है । लिंग अनुपात कुछ राज्यों में 120 पुरुष के लिए 100 महिला ही रह गयी है इसका कारण कन्या भ्रूण हत्या है ।

शहरी क्षेत्रों में महिला विरोधी अपराध बढ़ते जा रहे हैं । एक स्कूटर दहेज में न मिलने के कारण ही महिला की हत्या कर दी जाती है । बलात्कार की घटनाएं आम हैं । खाप पंचायतें सज़ा-ए मौत तक दे रही हैं । तमिलनाडु में दलितों को मल खाने के लिए मजबूर किया गया । पंचायतों के दलित प्रतिनिधियों को हाशिये पर पहुंचाया जा रहा है । खुशी के सूचकांक पर भारत नीचे जा रहा है । लोगों में अवसाद, गुस्सा और निराशा है ।

37.2 प्रतिशत भारतीय ग़रीबी रेखा से नीचे रहते हैं उनके पास न रोज़गार है, न खाने को भोजन और न ही स्वास्थ्य एवं शिक्षा की सुविधाएं । अर्जुन सेन गुप्ता रिपोर्ट ने 1993-2004 ई॰ में आकलन लगाया था कि 77 प्रतिशत भारतीय नागरिक 20 रुपये प्रतिदिन की आय पर जीवन बिताते हैं । 82 प्रतिशत (पुरुष) और 65 प्रतिशत (महिला) साक्षरता के आंकड़े को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जा रहा है । केवल अक्षरों के पहचान का प्रयोग बहुत सीमित है । सुप्रीम कोर्ट में आये एक मामले में एक व्यक्ति को जिसके सर में गहरी चोट आयी थी 6 स्वास्थ्य केन्द्रों पर उपचार नहीं मिल सका । हम इन सच्चाइयों को याद करके अपने दिमाग़ पर बोझ क्यों बढ़ाते हैं ? इसलिए कि हम इन्हें भूलना चाहते हैं ।

आतंकवाद

बदक़िस्मती से भारत में जीवन और स्वाभिमान के लिए किये गये प्रत्येक संघर्ष को आतंकवाद कहा जाता है । सरकारी और सामाजिक अत्याचारों का स्तर तेज़ी से बढ़ा है । निर्भया कांड से यौन आतंकवाद की गहराई का पता चलता है । लेकिन माओवादी वास्तविक आतंकी नहीं हैं, वे विस्थापन और दमन के विरुद्ध चलाये गये संघर्ष का एक हिस्सा हैं । हिन्दू आतंकवाद को साम्प्रदायिक तनाव का नाम देना व्यर्थ है । बाबरी मस्जिद (1992) और गोधरा

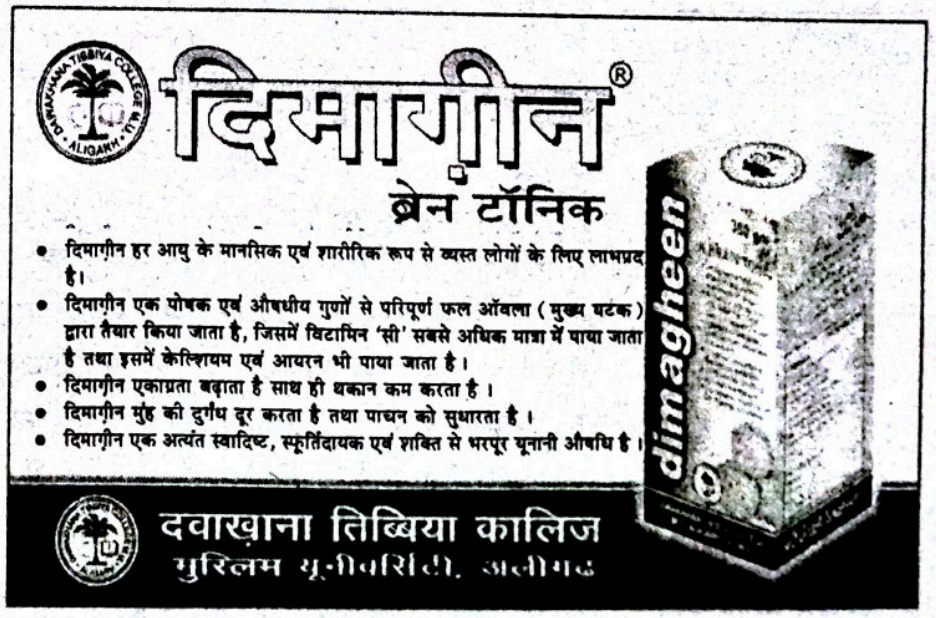

(2002) को याद करें । हिन्दू (हिन्दुवादी) नेताओं द्वारा कलाकारों, फ़िल्मों, थिऐटरों और महिलाओं पर लगाये गये प्रतिबंध चकित करने वाले हैं ।

गणतंत्र की क्या ज़िम्मेदारी है ? यह कहना 'हां हम करेंगे' बेईमानी है । सभी पार्टियां चाहे वे सत्ता में हों या सत्ता से बाहर हर क़ीमत पर चुनाव जीतना चाहती हैं । लेकिन भारतीय व्यवस्था वादों का गणतंत्र है परिणाम का नहीं । राजनीति का प्रश्न यह है कि कौन-सी स्कीम से अधिक वोट मिलेंगे । यक़ीनन नरेगा ने ग्रामीण क्षेत्रों में रोज़गार उपलब्ध कराये, लेकिन क्या इतना ही काफ़ी है ?

अर्थव्यवस्था

देश को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है : सम्पन्न (बेतहाशा धन, बल और प्रभाव वाला वर्ग) महत्वाकांक्षी (जो संपन्न वर्ग के बाद है), शोषित और पीड़ित वर्ग । यक़ीनन वर्तमान विश्व प्रतियोगिता के समय में विकास एक डरावना मंत्र है । कहा तो यह जाता है कि हमें प्रत्येक आर्थिक क्षेत्र में पूंजी की ज़रूरत है । मोटी आमदनी के लिए पूंजीनिवेश । नये भूमि अधिग्रहण बिल के पास हो जाने के बाद निजी क्षेत्रों के लिए अधिग्रहण उपलब्ध होगा । शोषण और कमज़ोर वर्गों के अधिकार हनन के साथ विकास होगा ।

बाबा साहब अम्बेडकर को इस विरोधाभासी जीवन का आभास हो गया था जब 26 जनवरी 1950 को भारत एक गणतंत्र घोषित हुआ था । क्या उन्हें यह पूर्वाभास हो गया था कि अमीर और ग़रीब के बीच की खाई और बढ़ेगी ? या यह कि देश अपने पोषण में असफल हो जाएगा? ग्लोबल हंगर इंडेक्स (जी॰एच॰आई॰) ने भारत को वहां रखा है, जिसकी जी॰एच॰आई॰ बढ़ रही है । अगर हम यह मान भी लें कि देश में 179.2 मिलियन रिहाइशी मकान है तो उनमें से केवल 51.62 प्रतिशत ही पक्के हैं । सर्दियों में बेघरों की मौत बढ़ रही है । अगर हम पश्चिमी अर्थव्यवस्था के मॉडल को अपनाएं तो विकास बड़े धनाढ्य कारपोरेट्स पर निर्भर होगा । हमें अपने गणतांत्रिक उद्देश्यों को हासिल करने के लिए एक नयी अर्थव्यवस्था की ज़रूरत है, नहीं तो हम विफल हैं और विफल ही होते रहेंगे । हमारे पास एक चुनावी लोकतंत्र और एक अराजक प्रशासन है और अधिकतर भारतीयों के लिए संविधान का वादा पूरा नहीं हो रहा है ।

(साभार : मेल टुडे, 28 जनवरी 2013)

अंग्रेज़ी से अनु॰ : **मुशर्रफ़ अली**

कविता

क्या हुआ दामिनी ?

● **सलमान ख़ुर्शीद**

दिल्ली में गैंग रेप की घटना से व्यथित विदेश मंत्री सलमान ख़ुर्शीद ने इस पूरे घटनाक्रम पर अपनी भावनाएं कविता के रूप में व्यक्त की हैं । सितारवादक विलायत अली ख़ान की बेटी और जानी-मानी गायिका जिला ख़ान ने इसे स्वर देने का फ़ैसला किया है । उनकी कविता कुछ इस तरह है–

क्या हुआ दामिनी दमकती हुई जान को,
कितनी दूर से अब देखेंगे उस मुस्कान को ।
हम बोलें तो, पर कुछ हुआ है ज़ुबान को ।।
दिल में दर्द रहता है बड़ा गहरा-सा ।
अब नहीं आता नज़र उसका चेहरा-सा ।।
कैसी शाम थी, जो हवा से लड़ी थी ।
चोट खाकर भी, न ज़रा-सी थकी थी ।।
क्यों हिकमत ने ये कह दिया कि भुज चली थी ।
ज़िन्दा दिल और दिलेर परिन्दों-सी उड़ी थी ।
क्यों उसको कुचलने की कोशिश की थी ।
जिस्म तो टूटा मगर परवाज़ करती रही थी ।।
कभी लौट के फिर तुम आना ।
नहीं करना न आने का बहाना ।।
हमने तो तुम्हारी मौत को भी नहीं माना ।
ये बात और है कि तुम्हारी मजबूरी थी जाना ।।
कल तक तुमको न जाना, पर आज है पहचाना ।
वह तो मेरी बहन थी, बेटी थी, मां थी, ये सब माना ।।
मां ढूंढ़ती है उसे, बाप और भाई भी ।
वे दोस्त सब जो साथ खेले और खिलखिलाये भी ।।
अब कब हंसेंगे गाएंगे वे बस ।
तुम आओगी, बुलाओगी चुपके से क्या तब ।
सुबह की तलब थी जल्द हो गयी ये शब ।
बहुत अरमान थे तुम्हारे, पूरे होंगे वो कब ।।
मालूम न था, सोचा भी न था कभी ।
महरूम रह जाएंगे तुम्हारे इरादों से सभी ।।

प्रो॰ शरद नारायण खरे सम्मानित



इतिहास के विभागाध्यक्ष व अनेक उत्कृष्ट कृतियों के सृजक प्रो॰ शरद नारायण खरे को उनकी विशिष्ट साहित्य सेवा के लिए छत्तीसगढ़ की श्रेष्ठ साहित्यिक संस्था ''साहित्य सृजन समिति, कोरबा'' ने मंडला में आयोजित एक एक भव्य राष्ट्रीय साहित्य समागम में दिसम्बर 2012 में ''साहित्य विरोमणि'' से सम्मानित किया । श्री ख़रे को स्मृति चिन्ह, अलंकरण पत्र, शॉल, साहित्य व 1100 की सम्मान राशि प्रदान की गयी । इस सम्मेलन में प्रो॰ शरद नारायण खरे को बतौर विशिष्ट अतिथि मंचासीन किया गया और उनके कर कमलों से दो पुस्तकों का विमोचन भी हुआ । उन्होंने 'साहित्य की वर्तमान स्थिति' पर व्याख्यान दिया तथा अंतिम चरण में आयोजित कवि-सम्मेलन में श्रेष्ठ रचनाओं का पाठ कर अपनी विशिष्टता सिद्ध की ।

बारह साहित्यकारों की पुस्तकें पुरस्कृत

अंग्रेज़ी, हिन्दी और पंजाबी साहित्य के विकास व प्रसार के लिए तत्पर एकमात्र ग़ैर-सरकारी साहित्यिक संस्था ''आलराउंड अकादमी'' फ़रीदकोट (पंजाब) की ओर से बारह साहित्यकारों की पुस्तकों को श्रेष्ठ पुस्तक सम्मान से सम्मानित किया गया है ।

श्री आर॰ एस॰ वर्मा के कविता संग्रह ''काव्य पुष्पांजलि' पर श्रेष्ठ कविता संग्रह सम्मान, श्री शंकर शरण लाल बत्ता के महाकाव्य 'अमर शहीद सरदार भगत सिंह' पर श्रेष्ठ महाकाव्य सम्मान, डॉ॰ राम सहाय बरैया के क्षणिका संग्रह 'भूकंप' पर श्रेष्ठ क्षणिका संग्रह सम्मान, श्री राजीव जैन के कविता संग्रह 'खुली सड़क पर' पर श्रेष्ठ कविता संग्रह सम्मान, श्रीमती सुभाषिनी साहिल के ग़ज़ल संग्रह 'दर्दे-साहिल' पर श्रेष्ठ ग़ज़ल संग्रह सम्मान, पं॰ रामसेवक पाठक 'हरिकिंकर' के छन्दकोश 'छन्दोदधि' पर श्रेष्ठ छन्दकोश सम्मान, डॉ॰ जुबैदा हाशिम मुल्लां के कहानी संग्रह 'मानव तू बड़ा महान' पर श्रेष्ठ कहानी संग्रह सम्मान, श्री सतीश चन्द्र शर्मा 'सुधांशु' के व्यंग्य संग्रह 'व्यंग्य की टंकार' पर श्रेष्ठ व्यंग्य संग्रह सम्मान, श्री ए॰ एफ॰ 'नज़र' के ग़ज़ल संग्रह 'पहल' पर श्रेष्ठ ग़ज़ल संग्रह सम्मान, श्री सीता राम चौहान के काव्य संग्रह 'दर्पण' पर श्रेष्ठ काव्य संग्रह सम्मान, श्री संकर्षण प्रजापति के काव्य संग्रह 'गृहस्थ सभ्यता के उद्भावक कुम्भकार' पर श्रेष्ठ काव्य संग्रह सम्मान और डॉ॰ किशोरी लाल व्यास के उपन्यास 'सरोवर गाथा' पर श्रेष्ठ उपन्यास सम्मान दिया गया है ।

आलराउंड अकादमी के अध्यक्ष श्री अमित कुमार लाडी ने उक्त सभी बारह साहित्यकारों को श्रेष्ठ पुस्तक सम्मान मिलने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं ।

SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 2001 with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1400 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Free education is given to poor students of the locality after school time.
- Our immediate needs are—Purchase one more school bus, Construction of Prayer Hall & Purchase of 30 Computers.

(Prof. Z. H. Khan) Chairman — *(Prof. M. B. Zaman)* Secretary

SHATABDI PUBLIC SCHOOL

Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)

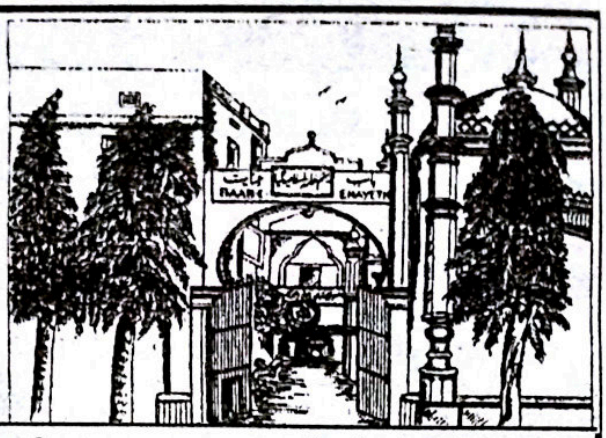

एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 95 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2012-2013 के सत्र के लिए 11वीं, 12वीं और बी०ए० और लाइब्रेरी साइंस (BLIS) में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 12000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 16 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 125 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच क़र बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

इनायत पोलिटेक्निक (ENAYETH POLYTECHNIC) की इमारत के निर्माण का काम जोरो शोर से जारी है।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

में अपनी रक़म भेज सकते हैं

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

LOCAL DONARS मक़ामी चन्दा देने वाले

BANK A/C NO. : 10581, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKING A/C NO. : 300402010010581, ☎ 0631-2734428 ● Mobile : 9955655960

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

अध्यक्ष : डॉ० फ़रासत हुसैन — एज़ाज़ी नाज़िम : डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

ग्रामीण ख़ुश, शहरी 'बोर'

■ सी॰ के॰ रहमानी

ग्रामीण और शहरी जीवन में क्या अन्तर है । इस पर लोग कहेंगे कि शहरी जीवन अच्छा है, क्योंकि शहरों में भौतिक सुख-सुविधाएं ज़्यादा हैं । चौबीस घंटे बिजली है । चमचमाती चौड़ी सड़कें हैं । मॉल हैं । गगनचुंबी इमारतें हैं । सरकार की तरफ़ से दी जाने वाली अनेक सुविधाएं हैं, मोटरकारों का काफ़िला है । भीड़ है । परिवहन से लेकर पांच तारा होटल हैं । बड़े और सुंदर पार्क हैं । चारों ओर सुंदरता । यह सब चीज़ें किसी भी अभावग्रस्त आदमी को आकर्षित करने के लिए काफ़ी हैं । इसके बाद भी शहरी लोग बहुत तनाव में रहते हैं । परेशान रहते हैं । ज़िंदगी में भागमभाग है, आक्रोश है, रोडरेज है, अफ़रा-तफ़री है ।

दूसरी तरफ़ शहरों के मुक़ाबले गांव और क़स्बे हैं । सुविधाओं के नाम पर कुछ नहीं है । टूटी-फूटी सड़कें, धूल-मिट्टी । न सरकारी सुविधाएं न बिजली आती है । आती है तो अपने हिसाब से जिसका लोग लाभ नहीं उठा पाते । इसी विषय पर कुछ समय पहले दिल्ली के एक मशहूर मनोचिकित्सक से बात चल रही थी । तब उन्होंने कहा था कि गांव और क़स्बे का आदमी 'बोर' नहीं होता । उसके पास समय काटने और मनोरंजन के कई साधन हैं, जबकि शहरी लोगों के पास मनोरंजन के अनेक साधन होते हुए भी वे बहुत बोर हो जाते हैं । उनकी यह बात सुनकर मुझे उस समय ताज्जुब हुआ था क्योंकि शहरी लोगों के पास मॉल हैं, सिनेमा हॉल हैं । मल्टीप्लैक्स हैं । बड़े-बड़े पार्क हैं, चारों ओर सुंदरता, विदेशी पर्यटक, परियों की दुनिया है फिर भी बोरियत ! और गांव-क़स्बों में नाम मात्र के साधन हैं फिर भी ख़ुश ! मनोचिकित्सक ने इसके पक्ष में कई तर्क दिये थे ।

मनोचिकित्सक की बात का एहसास इसी पांच और छह जनवरी को हुआ । इस दिन उत्तर भारत में हाड़कंपा देने वाली ठंड थी । शायद एक डिग्री रही होगी । इस दिन मुझे उत्तर प्रदेश के एटा ज़िले के सिढ़पुर क़स्बे में जाना हुआ । क़स्बे में चहल्लुम का जुलूस निकल रहा था । अलम उठ रहे थे । क़स्बे में दूर-दराज और आसपास के गांवों से चहल्लुम देखने के लिए रिश्तेदार, बच्चे और महिलाएं आयी हुई थीं और आ भी रही थीं । इनमें कुछ ऐसे लोग भी शामिल थे जो दूर के रिश्तेदार लगते थे लेकिन वह चहल्लुम देखने के लिए आ जाते हैं । ये लोग पास या दूर का रिश्ता निकालकर रात को किसी न किसी के यहां रुक जाते हैं । इस कड़ाके की सर्दी में जहां लोग घरों, अलाव, अंगीठी और चूल्हों से चिपके हुए थे, वहीं चहल्लुम के जुलूस में बच्चे और महिलाएं भी बड़े उत्साह के साथ भाग ले रही थीं ।

उत्साह का यह आलम था कि कोई अलम और ताजिये



की कमी को ठीक कर रहा था, कोई बैंड बाजे में कमी निकाल रहा था । कुछ लोग कह रहे थे अगले साल इससे भी ज़ोरदार बैंड मंगवाएंगे । इस बार ज़्यादा इकट्ठा कर लेंगे । बच्चे भी अलम और ताजिये के बांस-बल्ली पकड़ रहे थे । जुलूस में लगभग दो सौ लोग शामिल रहे होंगे । दो सौ लोगों का जुलूस और मेला के नाम पर मात्र दो चार रेहड़ियां, जिनमें से किसी पर बरूले (तले हुए छोटे-छोटे आलू) किसी पर चाउमिन, किसी पर रमास और छोले तो किसी पर गोलगप्पे की चाट बिक रही थी । यह गांव का माहौल ही था कि इस छोटी-सी जगह व छोटे से मेले में लोग तमाम खुशियां ढूंढ़ लेते हैं । ये लोग ऐसा महसूस कर रहे थे कि जैसे किसी बहुत बड़ी और सुंदर जगह पर आ गये हों या बहुत बड़े मेले में पहुंच गये हों । जबकि दूसरी ओर इससे ज़्यादा तो किसी भी बड़े शहर की छोटी कालोनी के छोटे से बाज़ार में भीड़ रहती है । दिल्ली या मुंबई का तो यह हाल है कि बाज़ार में निकलने की जगह नहीं मिलती है । जो साप्ताहिक बाज़ार पटरी पर लगते हैं उनका तो कहना ही क्या । लेकिन यहां कोई उत्साह नहीं, लोगों में नीरसता है । बच्चों में कोई कौतूहल नहीं । महिलाओं में किसी तरह की उत्सुकता नहीं । संवेदनहीनता का आलम यह है कि कोई किसी के दुख-दर्द में शामिल होने को तैयार नहीं । अगर कोई होता है तो पहले देख लेता है कि वह उसके कितने काम आएगा ।

जाने-माने मनोचिकित्सक और इंदिरा गांधी अस्पताल (दिल्ली) के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ॰ टी॰पी॰ जिंदल का कहना है–'भले ही उसके पास मनोरंजन के साधन सीमित हैं पर आपसी रिश्तों, हंसी-मज़ाक, ठहाकों में वह मनोरंजन ढूंढ़ लेता है, जबकि शहरी लोगों के पास तमाम मनोरंजन के साधन होते हुए भी वह अपने को बोर महसूस करता है । गांव या क़स्बे के पास यदि कोई बस या ट्रक पलट जाए तो उसे देखने के लिए ही लोग चल पड़ते हैं । आने-जाने में आधा दिन बीत जाता है । कुछ समय उसकी चर्चा में गुज़र जाता है । वे लोग इससे भी मनोरंजन कर लेते हैं । इसलिए वह बोर नहीं होते हैं । दूसरी तरफ़ बड़े शहर हैं जहां कोई हादसा हो जाता है तो लोग देखने तक नहीं जाते, यहां तक कि सड़क हादसे के दौरान भी कम ही लोग मदद के लिए हाथ बढ़ाते हैं । वरना तो लोग देखते हुए निकल जाते हैं ।'

बड़े शहरों की इसी संवेदनहीनता के कारण शायद लोगों में उत्साह नहीं रहा । जीवन में नीरसता है । पैसा कमाने की होड़ है । आत्मिक शांति तो तभी मिलती है जब आप किसी का भला करते हैं । अगर कोई किसी की मदद भी करता है उसमें कम दिखावा अधिक होता है । छल-कपट, धोखा, गलाकाट प्रतियोगिता और अधिक भौतिक सुख की चाह के कारण असंतोष पैदा होता है, जो बोरियत का कारण बनती है ।

Prop : Abid Hussain
09413037652
09252235194

Shop : Mujahid Hussain
09214747172

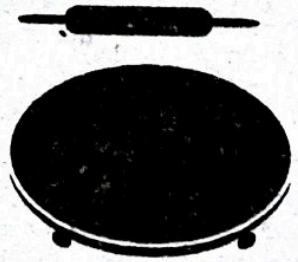

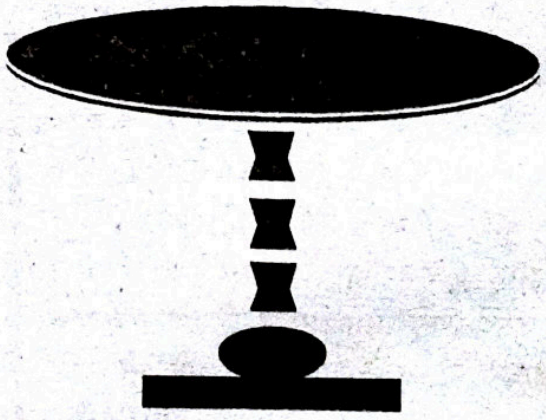

कान्ति मार्बल हैंडीक्राफ्ट

सभी प्रकार के वन पीस और ज्वाइंट पीस चकलों के निर्माता व थोक विक्रेता, मार्बल के फव्वारे तथा टेबल, टेलीफ़ोन स्टेंड, नोजल लैंप, गमले, घड़ी व फैंसी आइटम

Shop : Hotel Moti Mahal, Manglana Road, Makrana-341505
Fact : Bypass Mor, Opp : Sai Kirpa Petrol Pump, Makrana Road, Borawad (Raj.)

ग्राहक अपने अधिकार को जानें

❖ निधि मित्तल

आमतौर पर दुकानों में लिखा रहता है कि "बिका माल वापस नहीं होगा।" यदि किसी दुकान से आपने जो सामान ख़रीदा है वह ख़राब ही क्यों न हो, फिर भी दुकानदार आपके इस अधिकार को मानने के लिए तैयार नहीं है कि वह सामान वापस ले ले या उसे बदल दे। प्राय: ब्रांड से बिकने वाली दैनन्दिन वस्तुओं के बारे में यदि आप सीधे कंपनी से शिकायत करें तो वे आपको खेद प्रकट करते हुए नया पैकेट भेज देगी। परन्तु यह भी छोटे-छोटे पैकेटों के बारे में है जिनका मूल्य प्राय: ज़्यादा नहीं होता। ऐसी स्थिति में भी कुछ कंपनियां कहती हैं कि ख़रीद की रसीद दिखलाओ। अब अक्सर ग्राहक दुकानदार के इस बहकावे में आकर रसीद नहीं मांगता कि रसीद मांगने पर आपको टैक्स भी देना होगा। यद्यपि सभी वस्तओं के लिए ऐसा नहीं है। एक्साइज़ टैक्स तो सामान के साथ जुड़ा होता ही है और केवल नक़ली चोरी का या एक्साइज़ टैक्स की चोरी करके कंपनी से निकले माल जोड़कर शेष पर पहले से ही एक्साइज़ चुकाया हुआ होता है। अब सेल्स टैक्स या परचेज़ टैक्स समेत ही प्राय: दाम वस्तु पर छपा रहता है। अत: यदि आपको किसी बड़े मूल्य के सामान की ख़रीदारी करनी है तो दुकानदार से रसीद अवश्य लें। उस वस्तु के लिए गारंटी या वारंटी कार्ड भी बाक़ायदा भरवा कर अवश्य लें।

परन्तु यदि आपके द्वारा ख़रीदे दोष युक्त माल को दुकानदार या निर्माता नहीं बदलता है तो आप क्या कर सकते हैं। आप इसकी शिकायत मोनोपलीज़ एंड रिस्ट्रिक्टिव ट्रेड प्रैक्टिस आयोग को कर सकते हैं। वास्तव में एम०आर०टी०सी०पी० एक्ट की धारा 36ए के तहत दुकानदार ख़राब माल की वापसी के लिए बाध्य है। यदि वह ऐसा नहीं करता तो इसे अनुचित व्यापार मानकर उस पर कार्रवाई की जा सकती है। इसके अतिरिक्त यदि आपके पास माल ख़रीदने की रसीद है तो आप उपभोक्ता फोरम में भी अपना वाद दायर कर सकते हैं। उपभोक्ता फोरम में वाद दायर करना सबसे सरल व कम ख़र्चीला है। केवल अपने आवेदन पत्र और आवश्यक विवरण के साथ अपना पक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं। इसके लिए कोई वकील करने की आवश्यकता नहीं है। आप अपने ज़िले के उपभोक्ता फ़ोरम से प्रक्रिया मालूम करके अपना आवेदन दाख़िल कर सकते हैं। परन्तु इसका एक पक्ष और भी है। वास्तव में व्यापार में जहां व्यापारी को ईमानदार रहना चाहिए। वहीं ग्राहक को भी ईमानदारी निभानी चाहिए। कभी-कभी ग्राहक भी इस्तेमाल किया हुआ माल वापस करना चाहता है व बदले में नये माल की मांग करता है। यह ग्राहक के द्वारा किया गया अनुचित व्यवहार है यद्यपि इसका कोई क़ानूनी निराकरण नहीं है।

परंतु अधिकांशत: तो दुकानदार ही सेल या 'क्लियरेंस' के बहाने दुर्गुण युक्त माल को निकालने की कोशिश में ग्राहक को ठगते हैं। अत: ग्राहक की भी दीपावली, ईद, क्रिसमस व नये वर्ष की 'सेल' की घोषणा के लालच में नहीं पड़ना चाहिए। कहावत है कि 'सस्ता रोये बार-बार' 'महंगा राये एक बार'। अत: आप इस लालच में न आएं कि व्यापारी अपना नुक़्सान करके आपका घर भरेगा। अत: आवश्यक है कि ग्राहक अपने अधिकारों को जानें और सही मूल्य पर सही चीज़ ख़रीदें। लालच में आकर चोरी का माल, डुप्लीकेट, नक़ली या दोषपूर्ण माल न ख़रीदें।

इस्लामिक अकेडमी फॉर चिल्ड्रेन
ह्यूमन डेवलपमेंट सोसाइटी, निज़ामपुर, गोरखपुर (यू०पी०)
के अन्तर्गत
1989 ई० से शिक्षा के क्षेत्र में सेवारत
दीनी और आधुनिक शिक्षा का सुन्दर संगम,
कंप्यूटर शिक्षा, अरबी साहित्य की शिक्षा
सेक्रेट्री ह्यूमन डेवलपमेंट सोसाइटी, निज़ामपुर, गोरखपुर (यू०पी०)

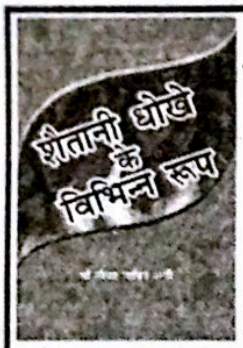

हमारी नई किताब

शैतानी धोखे के विभिन्न रूप

लेखकः डा० सय्यद शाहिद अली

पृष्ठ 96

मूल्य 40 ₹

शैतान क्या है? शैतान क्यों है? शैतान कैसा है? शैतान मनुष्यों को किस-किस तरह बहकाता है? इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में मिलेगा। शैतान इस सांसारिक जीवन में मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है इसलिए मनुष्य को सावधान रहना चाहिये। मनुष्य अपने प्रत्येक अच्छे या बुरे काम का स्वयं ज़िम्मेदार है शैतान केवल मनुष्य को बहकाता है। वास्तव में शैतान को मनुष्य के इम्तिहान के लिए छूट दी गयी। इन्ही सब बातों की इस पुस्तक में व्याख्या की गयी है।

हमारी अन्य पुस्तकें

इस्लाम आतंक या आदर्श?	(उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी)	स्वामी लक्ष्मीशंकराचार्य	₹ 40=00
ग़लत फहमियों का निवारण	(उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी)	डा० ज़ाकिर नाईक	₹ 25=00
डा० अम्बेडकर और इस्लाम	(उर्दू, हिन्दी)	आर० एस० आदिल	₹ 10=00
इतिहास के साथ यह अन्याय	(उर्दू, हिन्दी)	बी० एन० पाण्डे	₹ 7=00
मुहम्मद (सल्ल०) इस्लाम के पैग़म्बर	(हिन्दी, अंग्रेजी)	प्रो० रामा कृष्णा राव	₹ 15=00
हज़रत मुहम्मद और भारतीय धर्म ग्रन्थ	(हिन्दी)	डा० एम० ए० श्रीवास्तव	₹ 18=00
रियाजुस्सालिहीन (हदीस संग्रह)	(हिन्दी)	इमाम मुहिउद्दीन अन-नव्वी	₹ 17=00

दावती काम करने वालों और मुफ़्त तक़सीम करने वालों के लिए विशेष छूट।

मधुर सन्देश संगम

E-20, अबुल फ़ज़ल इन्क्लेव, जामिया नगर,
ओखला, नई दिल्ली - 110025
फोन : 011 - 26953327, 09212356332
E-mail :madhursandeshsangam@yahoo.co.in

ज़रूरी है शिक्षा का नैतिक आधार

● भारत डोगरा

हाल के समय शिक्षा का नैतिक पक्ष काफ़ी उपेक्षित होने लगा है । जहां अधिक आय अर्जन से जुड़े कैरियर पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है, वहां किन नैतिक मूल्यों को जीवन का आधार बनाना चाहिए इस ओर तो कम ध्यान दिया जा रहा है या इस महत्वपूर्ण मुद्दे को अनुचित ढंग से प्रस्तुत किया जा रहा है ।

यदि शिक्षा विद्यार्थी को अच्छा डॉक्टर या उच्च अधिकारी बनने के लिए प्रेरित करती है, तो यह अच्छी बात है, पर साथ में क्या यह चर्चा ज़रूरी नहीं है कि अच्छे डॉक्टर या अच्छे उच्चाधिकारी में क्या गुण चाहिए ? आज अनेक डॉक्टर ऐसे भी है जो पैसा कमाने में तो बहुत सफल है । पर मरीज़ शिकायत करते हैं कि उन्हें लूटा जा रहा है । इसी तरह अनेक उच्चाधिकारी ऐसे हैं जो भ्रष्टाचार के बल पर अपार धन अर्जित करते हैं व उनकी इस समृद्धि की क़ीमत निर्धन लोगों का हक़ छिनने के रूप में या अन्य तरह की राष्ट्रीय क्षति के रूप में चुकानी पड़ती है । विद्यार्थियों में यह चर्चा भी होनी चाहिए कि क्या वे इस तरह का 'सफल' व समृद्ध डॉक्टर व उच्चाधिकारी बनना पसंद करेंगे ।

दूसरी ओर व्यापक सामाजिक हित के कार्यों से जुड़ने, यहां तक कि उसके लिए कई कठिनाइयां स्वीकार करने का भी अपना एक गहरा संतोष है जो बहुमूल्य है । शिक्षा का यह नैतिक पक्ष वैसे तो सदा महत्वपूर्ण रहा है, पर इन दिनों इसका महत्व इस कारण और बढ़ गया है क्योंकि जीवन की सार्थकता को मात्र भौतिक सुख-सुविधाओं से जोड़ लेने की एक बेहद संकीर्ण सोच को स्वार्थी तत्व फैला रहे हैं । हमारे समाज में असहनीय हद तक भ्रष्टाचार बढ़ जाने का एक बड़ा कारण यह भी है कि यह सोच बहुत फैल गयी है । इस समय तो हमें भ्रष्टाचार से लड़ना ही है पर साथ में नयी पीढ़ी को ऐसी विकृत सोच से मुक्त करने के प्रयास स्कूल से ही आरंभ हो जाने चाहिए ।

नैतिक शिक्षा की एक बुनियादी सोच यह है कि पूरी दुनिया के हितों से अपने हितों को जोड़ते हुए ही जीवन जीना चाहिए और इसके लिए जहां जीवन में हर स्तर पर ईमानदारी होनी चाहिए वहां धर्म, जाति नस्ल आदि के संकीर्ण भेदभाव से ऊपर उठकर सब इंसानों की बराबरी और भलाई में गहरा विश्वास होना चाहिए । हमें यह सदा ध्यान रखना चाहिए कि हमारे कार्य व वचन में से किसी को दुख न पहुंचे । दूसरी ओर जहां अन्याय से लड़ना ज़रूरी है, वहां अपनी क्षमता के अनुसार भागीदारी का प्रयास हमें अवश्य करना चाहिए । ईमानदारी का अर्थ प्राय: यह बताया जाता है कि भ्रष्टाचार न करो व अपने व्यवसाय के हिसाब-किताब में कोई ग़लत जानकारी मत दो ।

इस तरह नैतिकता व इन्सानियत के कुछ ऐसे मूल गुणों की पहचान हो सकती है जो सभी समय व स्थानों के लिए उचित ठहराये जा सकते हैं । इन नैतिक आदर्शों के अधिक से अधिक नज़दीक आने का प्रयास करना चाहिए । इस बारे में आम सहमति बनाना संभव है । नैतिकता की यह सोच किसी एक धर्म से नहीं जुड़ी है । इसे सभी धर्मों के लोग स्वीकार कर सकते हैं । प्राय: नैतिक शिक्षा के नाम पर केवल किसी एक धर्म के उदाहरणों से जुड़ा साहित्य बांटा जाता है । इतना ही नहीं, कभी-कभी तो इसमें दूसरे धर्मों के विरुद्ध भी कुछ कह दिया जाता है । अत: यह ज़ोर देकर कहना ज़रूरी है कि सांप्रदायिक प्रचार सच्ची नैतिक शिक्षा से बहुत दूर है ।

नैतिकता का तो एक मुख्य आधार ही यह है कि हर तरह की सांप्रदायिकता, कट्टरता व संकीर्ण सोच का विरोध कर इंसानों की बुनियादी एकता व समानता में विश्वास मज़बूत किया जाए । वह दिन एक बहुत बड़ी उपलब्धि का दिन होगा जब स्कूल पूरा करते वक़्त अधिकांश विद्यार्थी सभी इन्सानों की समानता व एकता के साथ ईमानदारी व सच्चाई के सबसे बुनियादी मूल्यों को स्वीकार कर चुके होंगे । इसके साथ विद्यार्थियों में टी०वी०, सिनेमा, सोशल मीडिया, इंटरनेट आदि के उचित-अनुचित उपयोग व अनुशासन की आवश्यकता पर खुली बहस को प्रोत्साहित करना चाहिए । (विविधा फीचर्स)

"और अल्लाह की
बन्दगी करो और उसके साथ
किसी को साझी न ठहराओ। और
अच्छा व्यवहार करो माता-पिता
के साथ, नातेदारों, अनाथों,
मोहताजों, नातेदार पड़ोसियों के
साथ, और उन पड़ोसियों के साथ
जिनका संबंध न हो, और पास के
व्यक्ति के साथ, और राह चलने
वालों के साथ, और उनके साथ
जो तुम्हारे अधिकार में हों।"
(क़ुरआन, 4:36)

एक ख़ैरख़्वाह
रांची
झारखंड

महिलाओं के साथ बलात्कार : एक ज्वलंत समस्या

❖ मुहम्मद ख़ुर्शीद आलम

महिलाओं के साथ हो रहे बलात्कार में काफ़ी वृद्धि हुई है तथा यह समाज शास्त्रियों, नीति-निर्धारकों, समाज सुधारकों, राजनीतिज्ञों एवं अन्य सभी के लिए एक गहन चिन्ता का विषय बना हुआ है । यह सही भी है क्योंकि महिलाओं को सुरक्षा व सुख प्रदान करने के बदले पुरुषों ने महिलाओं को तिरस्कृत किया है, उनकी उपेक्षा की है, उनका अपमान व शोषण, यौन-शोषण किया है तथा यहां तक कि उनके साथ अमानवीय हिंसात्मक व्यवहार किया है । मानवीय इतिहास में होने वाली ऐसी घटनाओं की वृद्धि वस्तुत: चिन्ता का एक विषय है । दिसम्बर 2012 में दिल्ली चलती बस में एक छात्रा के साथ गैंगरेप इसका मौजूदा उदाहरण क़हा जा सकता है । हमारा समाज इस घटना को सुनकर शर्म से पानी-पानी हो जाता है तथा सामाजिक-व्यवस्था एवं सरकार पर कई सवाल खड़े कर देता है ।

आज महिलओं के प्रति अनेक प्रकार के अपराध हो रहे हैं । अपराध क़ानूनी रूप से परिभाषित शब्द ही नहीं है अपितु सामाजिक दृष्टि से भी परिभाषित शब्द है । सामाजिक दृष्टि से इसे सामाजिक नियमों का उल्लंघन या विचलन कहा जाता है । महिलाओं को शारीरिक व मानसिक यातनाएं देना, उसके साथ मार-पीट करना, उसका यौन शोषण करना, नारीत्व को नंगा करना, भूखा-प्यासा रखकर या ज़हर आदि देकर उसको दहेज की बलि चढ़ा देना निश्चित रूप से महिलाओं पर अपराध ही कहे जाएंगे ।

महिलाओं के प्रति हिंसा व गैंगरेप के ख़िलाफ़ इस समय पूरा देश आन्दोलनरत है । नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़े बताते हैं कि आबादी के आधार पर ब्लात्कार की घटनाओं में बिहार ख़ासकर दिल्ली, आंध्र प्रदेश, केरल, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और राजस्थान से काफ़ी पीछे है । राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली की आबादी क़रीब 1.67 करोड़ है और वहां 2011 में ब्लात्कार के 572 घटनाएं दर्ज की गयीं । दूसरी तरफ़ 10.38 करोड़ आबदी वाले बिहार में 2011 में दुष्कर्म के 934 मामले दर्ज किये गये ।

महिलाओं पर हो रहे यौन-शोषण अथवा दुष्कर्म के आंकड़ों का एक विश्लेषण यह भी है कि इस वर्ष नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो की जो रिपोर्ट 2011 के संबंध में आयी है उसके अनुसार ब्लात्कार के मामले में पूरे देश में बिहार का स्थान 11वां है । यहां दुष्कर्म के 934 कांड दर्ज हुए हैं जो पूरे देश की तुलना में बिहार में महिलाएं अधिक सुरक्षित हैं । इसके बावजूद यह अवश्य चिंतन का विषय है कि रेप, गैंग रेप, छेड़ख़ानी, यौन-शोषण इत्यादि घटनाएं हमारे समाज में क्यों बढ़ रही हैं ? इस पर कैसे रोक-थाम की जाए । यह एक राष्ट्रीय बहस का मुद्दा बन गया है ।

आज भारत के क़ानून इतने लचीले हैं तथा न्याय प्रक्रिया में लोगों को काफ़ी समय लगता है जिससे अपराधी आसानी से आज़ाद हो जाता है तथा अपने बचाव के लिए क़ानून को गुमराह करता है । माननीय उच्चतम न्यायालय ने 06 दिसम्बर 2012 को दिये गये अपने आदेश में कहा कि "दो महीने में ब्लात्कार के मुक़दमें का निपटारा निचली अदालतों से करना है । इस संदर्भ में न्यायमूर्ति स्वतंत्र कुमार और न्यायमूर्ति फ़क़ीर मुहम्मद इबराहीम की खंडपीठ ने हत्या, लूट और छेड़छाड़ के दिल्ली के एक मामले में अभियुक्त की उम्रक़ैद पर मुहर लगाते हुए यह आदेश दिया ।

यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक प्रतीत होता है कि इस्लाम धर्म में ब्लात्कार अथवा अन्य किसी भी प्रकार के अपराध पर जो क़ानून बनाये गये हैं वे काफ़ी सख़्त हैं । इस संदर्भ में अवश्य कहना चाहूंगा कि आज देश के क़ानून को भी कठोर एवं सख़्त होना चाहिए, वैसे माननीय उच्चतम न्यायालय एवं माननीय उच्च न्यायालयों ने अपना प्रशंसनीय एवं सराहनीय फ़ैसला सुनाकर ब्लात्कारी, महिला उत्पीड़न, यौन-शोषण करने वाले अपराधियों को दंडित किया है ।

आज न्यायालय के साथ-साथ, सरकार एवं आमजनों समाज नियोजकों, समाज सुधारकों को इस गंभीर समस्या को समाप्त करने हेतु चिन्तन करना होगा तभी हमारा समाज इस व्याधि (रोग) से मुक्त हो सकता है । हमें इस बात की खुशी है कि आज भारत के नागरिक जागरूक हैं तथा अपनी पूरी ईमानदारी, निष्ठा से इस व्याधि को दूर करने का प्रयास कर रहे हैं तथा एक स्वच्छ, शांतिपूर्ण एवं विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में पहल कर रहे हैं ।

छींक की सुपरस्पीड

सर्दी के मौसम में छींक आना सामान्य बात है । छींक आने के अनेक कारण हैं । कई बार यह कमरे के गर्म तापमान से अचानक ही खुले ठंडे मौसम में आने की वजह से आती है । अनेक बार नासिकी में धूल-कण अथवा पराग-कण के प्रवेश कर जाने की वजह से भी छींक आती है । कई बार ज़ुकाम हो जाने पर संक्रमण फैलाने वाले जीवाणुओं की वजह से भी व्यक्ति को धड़ाधड़ छींक आने लगती है । वस्तुत: छींक आना कोई बीमारी नहीं है, बल्कि यह अन्दर से शरीर को साफ़-सुथरा रखने की कोशिश है । जब नाक में अथवा इसके रास्ते फेफड़ों तक कोई बाहरी अनावश्यक वस्तु पहुंच जाती है तो फेफड़ा तेज़ हवा का झटका देकर इसे नासिका मार्ग से बाहर फेंकने की कोशिश करता है जिसे हम छींक आना कहते हैं । छींकने से शरीर के अन्दर मौजूद बलग़म बाहर निकल जाते हैं तथा शरीर साफ़ हो जाता है । शरीर रचनाशास्त्रियों तथा चिकित्सकों के एक अध्ययन के अनुसार छींक की रफ़्तार लगभग 160 किलोमीटर प्रति घंटा से भी ऊपर होती है । नाक से इतनी तेज़ गति से हवा निकलने की वजह से छींकते समय आंखों को खुला रख सकना लगभग असंभव होता है । यही वजह है कि छींकते समय आदमी की आंख बन्द हो जाया करती है ।

क्यों टिमटिमाते हैं तारे ?

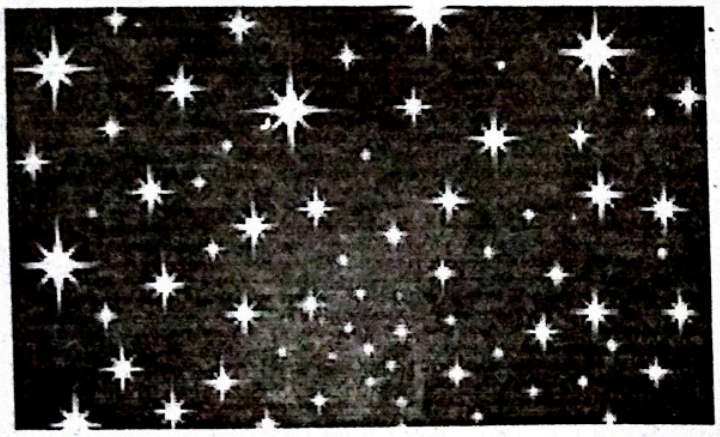

आकाशीय तारों को हम तक पहुंचने के पहले वायुमंडल से गुज़रना पड़ता है । यदि हमारे ऊपर मौजूद हवा निष्क्रिय, सुव्यवहृत तथा समांग माध्यम होती तो हमें तारों की टिमटिमाहट न दिखायी पड़ती । मगर ऐसा नहीं है । हमारा वातावरण सक्रिय तथा गतिशील है । वायु द्रव्यमान के सदैव गतिशील रहने के कारण यह स्वाभाविक है कि वातावरण में कहीं थोड़ा अधिक तथा कहीं थोड़ा कम घनत्व हो । इस माध्यम से होकर गुज़रने वाली तारों की रोशनी अपने पथ से इधर-उधर विचलित होती रहती है । इस स्थिति में किसी प्रेक्षक अथवा आब्जर्वर से देखने पर कोई तारा कई बार दिखायी पड़ता है तथा फिर लुप्त हो जाता है । साहित्यिक तथा काव्यात्मक भाषा में हम इसे टिमटिमाना कहते हैं ।

तितलियों का संसार

● तितली दिन में सक्रिय रहती है । वह फूलों के रस, पराग कण, सड़े-गले फल तथा गोबर पर जीवित रहती है ।

● भिन्न-भिन्न प्रजातियों की तितलियां एक सप्ताह से लेकर एक वर्ष तक जीवित रहती हैं ।

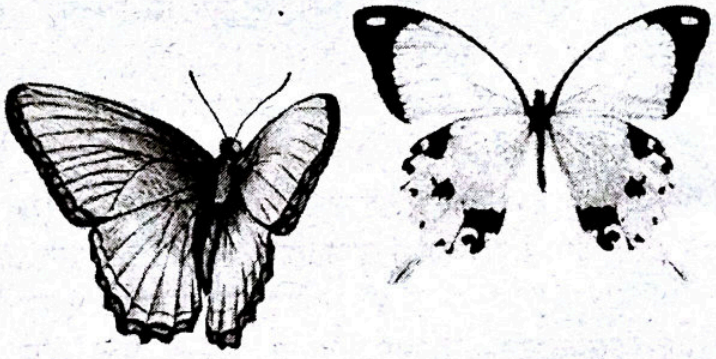

● कुछ तितलियां बहुरुपिया होती है । अपनी सुरक्षा के लिए स्थिति तथा आवश्यकता के अनुसार वे अपना रंग बदल लेती हैं ।

● सबसे तेज़ उड़ने वाली तितली 17 मील प्रतिघंटे की रफ़्तार से दूरी कर लेती है ।

● विद्या प्रकाश

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित ।
फोन: 09818799223, 011-26949430
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णत: प्रतिबंधित है ।

AL-HUDA PUBLIC HIGH SCHOOL

Banha (Nawada) Hazaribagh-825301 (JHND)

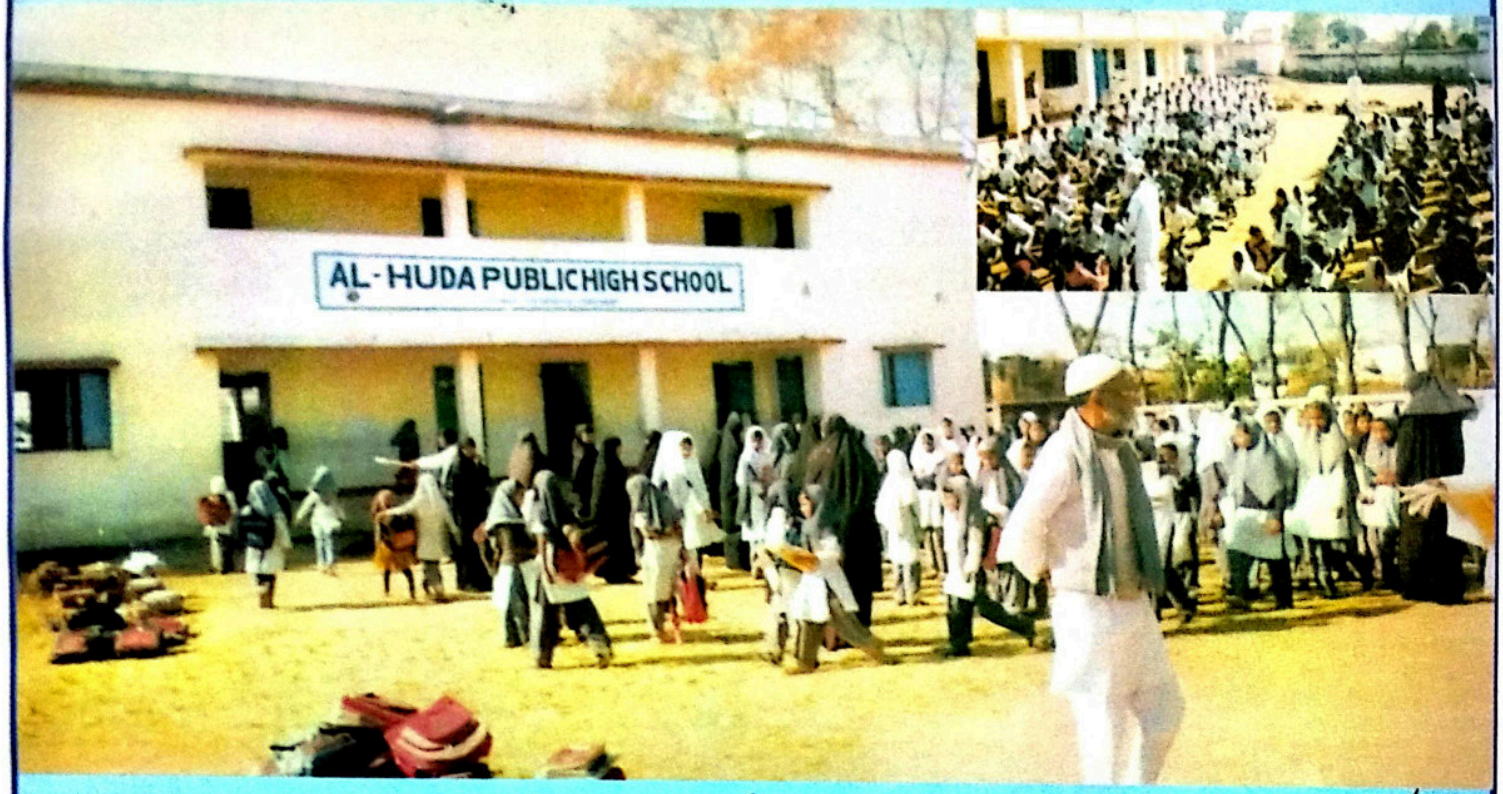

الحمدللہ آپ کا یہ ادارہ 1984 سے قائم ہے اور دینی، عصری علوم سے بچوں کے اندر اعلیٰ صلاحیت پیدا کرتا ہے۔ یہ ادارہ آپ کے تعاون کا مستحق ہے۔

AL-HUDA PUBLIC HIGH SCHOOL
S. B. A/c. No. 410502010692403
Union Bank of India
Pelawal, Hazaribagh (JHND)

Phone : 06546210554 (School)

ترسیل زر کا پتہ:
سکریٹری الہدیٰ پبلک ہائی اسکول، موضع: بنہا (نوادہ)، ہزاری باغ، جھارکھنڈ (825301)

چیرمین: ابرار احمد	سکریٹری: شمیم احمد	خازن: محمد اسلم	پرنسپل: محمد ہاشم
09431935848	09006023028	09931579552	06546210554

Posted on 20-21 February 2013
March 2013
E-mail: kantimonthly@hotmail.com
Publishing Date: 18.2.2013

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2012-2014
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2012-14

मुनअम पब्लिक स्कूल

(सी०बी०एस०ई०, दिल्ली से सम्बद्धता प्राप्त, 10+2, ईंग्लिश मिडियम विद्यालय)
महाराजगंज, पो० दादपुर, जिला हजारीबाग, झारखण्ड।

नामांकण सुचना





हजारीबाग के प्राकुतिक सौन्दर्य से भरपुर पहाडी क्षेत्र में स्थापित, विशाल कैम्पस में फैला एक अति-आधूनिक शैक्षणिक संस्था जहां छात्र-छात्राओं के लिए माडर्न स्कूल की तमाम सुविधाएं उपलब्ध हैं।

सफलता का सत्रहवां साल - मुस्लिम लडकीयों के लिए नायाब तोहफा

लडकीयों के लिए 100 बेड का शानदार हॉस्टल

सत्र 2013-2014 के लिए छात्रावास में रह कर शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक छात्र-छात्राएं 150/- रू० अदा कर के फार्म एंव प्रास्पेक्टस स्कूल काउंटर से प्राप्त करें या 175/- रू० का ड्राफ्ट भेज कर डाक से भी प्राप्त किया जा सकता हैं। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें -

मो० 09431530878, Website : munammission.org
E-mail-munam_school2000edu@yahoo.com

एस०एम० नईम
डायरेक्टर
एम०ए०, बी०एड

वकील अहमद
प्रिन्सिपल
बी०एस०सी०, बी०एड